ISSN 2349-6614

जुलाई, 2017

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

देश का पेट भरने वाला

गोली खाने पर क्यों मज़बूर ?

किसान से किए वादे पूरे करे सरकार

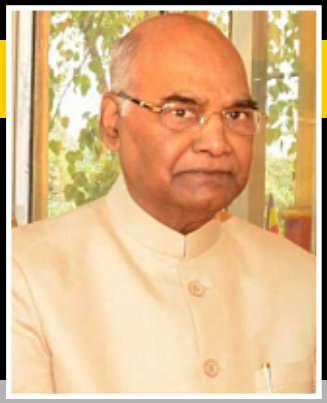

राष्ट्रपति चुनाव 2017

पक्ष में राम
विपक्ष में मीरा

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 15 अंक 5 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2015-2017 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

With Best Compliments

ARENA ANIMATION®

UIT CIRCLE, NEW-FATEHPURA

0294-2980833 | +91-7229822333

बेस्ट फैकल्टी

क्रिएटिव वर्कशोप

बेस्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर

ऑनलाइन पोर्टल

100% प्लेसमेन्ट असिसटेन्स

एनिमेशन एण्ड विजुअल इफेक्ट | ग्राफिक एण्ड वेब डिजाइन

मीडिया एण्ड ब्रॉडकास्ट | इंटीरिअर डिजाइन

2nd फ्लोर , के.पी.आर्केड, यु.आई.टी. सर्किल, न्यु फतेहपुरा, उदयपुर

0294-2980833 | + 91-7229822333 | udaipuranimation@gmail.com

जुलाई
2017
वर्ष 15, अंक 5

प्रत्यूष

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs

कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

अन्दर के पृष्ठों पर...

06 आवरण कथा

सरकार की ज़्यादती के खिलाफ आंदोलन को मज़बूर किसान

10 ज्वलंत प्रश्न

इस बदहाली का जिम्मेदार कौन ?

12 अर्थक्षेत्र

सुलझा जीएसटी का पेंच, जुलाई से लागू

20 स्त्री–विमर्श

छलावों के बीहड़ में गुमराह ज़िंदगी का सफ़र

32 खेल जगत

जोशी बने राजस्थान क्रिकेट संघ के कप्तान

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

परतानी नाक कान गला अस्पताल

14, नाकोड़ा कॉम्पलेक्स, हंसा पैलेस के पास, सेक्टर 4, हिरणमगरी उदयपुर (राज.)

ई-मेल : lpartani@yahoo.com

डॉ. लोकेश परतानी
एम.एस. (ई.एन.टी.)

डॉ. सीमा परतानी
एम.डी. (एनेस्थिसिया)

डॉ. सुशांत जोशी
एम.एस. (ई.एन.टी.)

फोन :- 0294-2462150 मोबाइल :-9414162550 (For Appointment and Emergency)

सुविधाएं

- नाक, कान एवं गले के सभी प्रकार के रोगों की जाँच, इलाज व ऑपरेशन की सुविधा।
- सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा कान व गले के ऑपरेशन की सुविधा।
- मशीन द्वारा कान के सुनने की जाँच (ऑडियोमेट्री एवं इंपिडेंस ऑडियोमेट्री) की सुविधा।
- उच्च तकनीक के डिजिटल श्रवण यंत्र (Digital Hearing Aid)
- नाक, कान एवं गले की एंडोस्कोपी (कम्प्यूटर द्वारा) जाँच की सुविधा।

"Shri Sanwaliya Seth ki Jai"

Abhinav Senior Secondary School

AEMS High Standardized English Medium Co-Ed. School

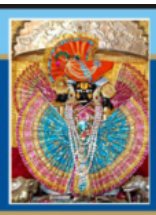

Play Group to XII
Science/Arts/Commerce

AEMS-An i-School Global Education, P.G. to XII

:: Our Salient Features ::

- Well equipped facilitate Learning Centre.
- Bunny/Tamtolla, Cub/Bulbul, Scout/Guide, Rover & Rangers.
- Well equipped school Building with green glass boards & colourful armed furniture.
- Well equipped computer lab, O.H.P. and I.C.D. projector Theater & well facilitate Library.
- Admission Details : P.G. to XII

:: Contact ::

Vidita Pandit
Principal, AEMS
9887542050

Dr. Upendra Rawal
Adminstrator
9413762552

Saroj Nagar
M.D.
9828164598

kushalrawal91@gmail.com

Wi Fi Campus

Abhinav Senior Secondary School

9, Adarsh Nagar, Gariyawas Road, Udaipur
Ph. : 0294-2584598, 9887542050, 9828164598

Special Features : XI & XII Science-Biology, Maths, Physics, Chemstry **Commerce :** Accontancy, Business Management, Finance & Economics, Computer Science (Optional) **Arts :** English Lit., Hindi Lit., Sanskrit Lit., History, Pol. Science, Home Science, Geography, Drawing, Sociology, Psychology & Music. Limited Seats-Registration Strictly on merit basis.

जीएसटी की राह देश का बाजार

अप्रत्यक्ष करों में पूरी तरह से बदलाव के लिए केन्द्र सरकार ने 1 जुलाई 2017 से जीएसटी लागू कर दिया है। जीएसटी का तात्पर्य है – गुड्स एण्ड सर्विसेज टैक्स(वस्तु एवं सेवाकर)। यह इन डायरेक्ट(अप्रत्यक्ष) कर है, जो भारत को एक जैसा बाजार बनाएगा। करीब सत्रह साल की कवायद के बाद जीएसटी इसलिए लाया गया, क्योंकि इससे पूर्व एक ही चीज़ के लिए दो राज्यों में अलग-अलग कीमत चुकानी पड़ती थी। जीएसटी लागू होने पर सभी राज्यों में वस्तु एक ही कीमत पर उपभोक्ताओं को मिलेगी। जीएसटी को केन्द्र और राज्यों के 17 से ज्यादा अप्रत्यक्ष करों के बदले में लागू किया गया है। इससे एक्साइज ड्यूटी, सेल्स टैक्स, वैट, एंट्री टैक्स, स्टाम्प ड्यूटी, लाइसेन्स फीस, टर्न ओवर टैक्स और माल के परिवहन भाड़े पर लगने वाले टैक्स समाप्त हो गए हैं।

कारोबारी वर्ग टैक्स की इस नई व्यवस्था को फिलहाल कुछ माह स्थगित रखने की मांग कर रहा है, उसका कहना है कि वह जीएसटी का विरोधी नहीं है लेकिन वह इसके क्रियान्वयन की प्रक्रियाओं को अभी ठीक से समझ ही नहीं पाया है। उपभोक्ता भी इसे लेकर असमंजस में हैं। दूसरी ओर केन्द्र सरकार का कहना है कि जब व्यवस्था में सुधार लाने की दिशा में कदम बढ़ाए जाते हैं, तो शुरू-शुरू में कठिनाइयां आती ही हैं, फिर सब सामान्य हो जाता है। यह सही है कि आजादी के बाद पहली बार देश में नई कर प्रणाली लागू की जा रही है। माना जा रहा है कि पूरे देश में जिन्सों तथा सेवाओं पर एक ही कर प्रणाली होने से व्यापार में सुगमता, माल ढुलाई में सुविधा और जीडीपी में बढ़ोतरी होगी। कर का आधार और दायरा बढ़ेगा तथा जीडीपी के अनुपात में राजकोषीय घाटा कम होगा। कारोबारियों का कहना है कि अभी यह सुनिश्चित नहीं किया जा सका है कि उन्हें परेशानियों से निजात मिलेगी। जीएसटी में कई तरह के फार्म नियत समय तक भरने होंगे और ऐसे में इन्स्पेक्टरराज की प्रताड़ना से उन्हें रूबरू होना पड़ेगा, जो पहले से कहीं ज्यादा भयावह होगा। उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार जटिलताओं को कम करने के लिए कारोबारियों की उचित सलाह पर ध्यान देगी। इस व्यवस्था को लागू करने के पीछे भ्रष्टाचार को समाप्त करना भी है, लेकिन कहीं यह भ्रष्टाचार का नया स्रोत न बन जाए, इस पर भी पैनी नज़र जरूरी है।

जीएसटी व्यवस्था में टैक्स की पांच श्रेणियां हैं – शून्य, 5, 12, 18, 28 प्रतिशत। विभिन्न सामान को इन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। फल, सब्जी, प्रकाशित सामग्री, खुला खाद्यान्न, बिना मार्का का आटा, मैदा, बेसन, दूध-दही, नमक, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं को शून्य श्रेणी में रखा गया है, जबकि चीनी चाय-पत्ती, खाद्य तेल, घरेलू एलपीजी, जूते-चप्पल(500 रुपए तक) कपड़े(1,000 रु. तक) आदि को 5 प्रतिशत की श्रेणी, मक्खन, घी, मुरब्बा, अचार, जैम, बादाम, मोबाइल, नमकीन आदि 12 प्रतिशत तथा केश तेल, टूथपेस्ट, साबुन, आइसक्रीम, कम्प्यूटर व प्रिंटर आदि 18 प्रतिशत टैक्स के दायरे में होंगे। बीड़ी, सिगरेट, पान-मसाला, बोतलबंद पानी, वाशिंग मशीन, कार-बाइक आदि को टैक्स की 28 प्रतिशत की श्रेणी में रखा गया है। कर श्रेणी का निर्धारण इस तरह किया गया है कि आर्थिक दृष्टि से कमजोर और मध्यमवर्गीय लोगों को राहत मिले। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि ये श्रेणियां विसंगतियों से एकदम परे हों।

आयुर्वेदिक दवाओं, घर में आवश्यक सिलाई मशीन, छाता, स्वास्थ्य की जांच के सामान्य उपकरण 12 प्रतिशत टैक्स के दायरे में लाए गए हैं, जो उचित प्रतीत नहीं होता। विद्यार्थियों पर भी जीएसटी भारी पड़ने वाला है। जीएसटी में कोचिंग संस्थानों को इसके दायरे में लेते हुए 18 फीसदी स्लैब श्रेणी में शामिल किया गया है। ऐसे में कोचिंग संस्थाओं पर जीएसटी की मार पूर्व में लागू सर्विस टैक्स से ज्यादा होगी। इससे पूर्व कोचिंग संस्थानों पर 15 फीसदी सर्विस टैक्स ही लागू था। जीएसटी की ताजा दरों से टूरिज्म पर भी मंदी का साया पड़ने की संभावना व्यक्त की जा रही है। होटल रूम पर लगने वाले जीएसटी में संशोधन के बाद जो दो टैक्स स्लैब तय हुए हैं, उनसे बजट और लग्जरी दोनों ही होटल रूम पर टैक्स की दर बढ़ जाएगी। इस बढ़ोतरी का भार पर्यटकों की जेबों पर पड़ेगा और इससे सीधे तौर पर राजस्थान जैसे वे प्रदेश प्रभावित होंगे, जिनके आर्थिक विकास में पर्यटकों की विशेष भूमिका रहती है। टूरिस्ट डेस्टिनेशन में भारत के विकल्प के तौर पर देखे जाने वाले दूसरे देशों में होटल रूम्स पर टैक्स की दरें इससे काफी कम है। ऐसे में विदेशी टूरिस्ट भारत से मुंह भी फेर सकते हैं। देश में आने वाले कुल विदेशी टूरिस्ट में से 18 से 20 प्रतिशत राजस्थान आते हैं। राजस्थान की अपनी अर्थव्यवस्था में टूरिज्म इण्डस्ट्री का योगदान करीब 15 प्रतिशत है, कहने का अभिप्राय यह है कि जीएसटी का असर यदि इस इण्डस्ट्री पर पड़ा तो राज्य के विकास की गति धीमा होना स्वाभाविक है और रोजगार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतएव केन्द्र ने जीएसटी लागू भले ही कर दिया हो पर एक-दो माह में ही इसकी विसंगतियों पर विचार कर उन्हें समाप्त करना होगा। तभी इसकी सार्थकता होगी।

सरकार की ज़्यादती के ख़िलाफ आन्दोलन को मज़बूर किसान

-विष्णु शर्मा 'हितैषी'

आजादी के बाद देश की तमाम सरकारों ने किसानों का 'वोट बैंक' की तरह ही इस्तेमाल किया। न उनके दर्द को समझा गया और न उन्हें बदहाली से ऊपर उठाने के पुख्ता प्रयास हुए। 6 जून को मध्यप्रदेश के मंदसौर में हालात से राहत पाने की उम्मीद में आवाज उठाने वाले अन्नदाताओं पर सरकार ने गोली चलाई, जिसमें छह किसान मारे गए और दर्जनों घायल हुए। ठीक उसी दिन महाराष्ट्र में कर्ज के लाइलाज मर्ज से परेशान चार धरती पुत्रों ने आत्महत्या कर ली। दोनों राज्यों में लम्बे समय से किसान आन्दोलन चल रहा है। तमिलनाडु के किसान अर्से से दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर रहे हैं। कर्नाटक, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा में आन्दोलन की आग अन्दर ही अंदर सुलग रही है। राजस्थान में भी आन्दोलन के सिलसिले में महापंचायत का ऐलान हो चुका है। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण जमीनें हड़पने पर आमादा है।

देश में किसानों की बदहाली किसी से छिपी नहीं है। बाढ़ या सूखा जैसी प्राकृतिक आपदा तो कहीं शोषणकारी सरकारी नीतियों से किसान तबाही के कगार पर हैं। मुनाफा तो दूर उपज की लागत वसूलने में ही पसीना छूट रहा हैं। ऐसे में उनके सामने सरकारों के सामने हाथ फैलाने के अलावा कोई चारा नहीं है। प्रशासन की फौलादी दीवारों तक उनकी पहुंच नहीं है, न आवाज पहुंच रही है ऐसे में तिल-तिल मरने या खुदकुशी के सिवाय उनके पास विकल्प ही क्या है ? तमिलनाडु के किसान दिल्ली पहुंचकर अर्से से राहत की मांग कर रहे हैं, लेकिन सुने कौन ? जाड़े में पंजाब के किसानों ने राजमार्ग पर हजारों टन टमाटर बिखेर दिए। उत्तरप्रदेश में किसानों का आलू-प्याज सड़कों पर पड़ा-पड़ा सड़ गया। महाराष्ट्र में सड़कों पर टनों दूध बहाना गया। मन्दसौर में किसानों का आन्दोलन शायद हर किसी के समझ में नहीं आएगा। वहां की कृषि विकास दर 2014 में तो 25 फीसद तक पहुंच गई। बाकी देश में उस वक्त चार फीसदी के आसपास थी, लेकिन इतनी अधिक उपज के बाद भी किसानों को न उचित दाम मिले और न खरीददार। सरकारों की दिक्कत यह है कि वे स्थायी समाधान सुझाने की बजाय किसानों के आक्रोश को कानून व्यवस्था की समस्या समझकर फैसले लेती हैं। मध्यप्रदेश के सत्ताधीशों ने शुरुआती तौर पर बचकानी प्रतिक्रिया दी कि आन्दोलनकारियों पर गोली पुलिस ने नहीं चलाई और मरने वाले भी किसान नहीं थे। कुछ ही घंटे बाद डरी हुई सरकार ने मृतकों को एक करोड़ और घायलों को दस लाख रुपये की राहत का ऐलान कर दिया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान आन्दोलन की तपिश पर खुद बैठ गए और चौबीस घंटों में उठ भी गए। कांग्रेस के ज्योतिरादित्य सिंधिया भी सत्याग्रह पर आमादा हैं, जिनकी पार्टी की सरकार के समय 1998 में मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के मुलताई में 24 किसान पुलिस की गोलीबारी में मारे गए। घटनाओं के लिए कोई एक पार्टी या राजनेता नहीं, बल्कि समूची सत्तालोलुप सियासत दोषी है। मंदसौर की ताजा दुखद घटना के दो वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए। जिनमें रतलाम के एक नेता डीपी धाकड़ और शिवपुरी की करैरा विधायक शकुंतला खटीक लोगों को कानून हाथ में लेने को बेशर्मी से उकसा रहे हैं। इस घटना से सबसे ज्यादा नुकसान

धरती पुत्रों को हुआ, जिनकी जान चली गई या घायल हुए। नेताओं को क्या फर्क पड़ा ?

कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी के मंदसौर दौरे के साथ ही सियासी तापमान चढ़ गया। भाजपा की निगाह में यह दौरा हालात के राजनीतिकरण का प्रयास था। लोकतंत्र में विपक्ष का दायित्व है कि वह समाज के शोषित वर्गों के लिए खुद भी लड़े और सरकार के खिलाफ उन्हें खड़ा भी करे। यदि राहुल वहां गए तो क्या गलत किया ? आखिर गरीबों की हितैषी कहलाने वाली भाजपा सरकार ने अभी तक वादे के अनुसार स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट को क्यों नहीं लागू किया ? और घोषणा पत्र के अनुरूप किसानों के कर्जे माफ करने में अगर..... मगर क्यों कर रही हैं ? वादाखिलाफी सत्तारूढ़ दल को भारी पड़ सकती है।

हवा हुआ आंसू पोंछने का वादा?

किसानों की मांगे नई नहीं है। देश के दूसरे हिस्सों में भी जब कभी किसान सड़क पर आने को मजबूर होता है तो उसकी मांगे एक जैसी होती। आखिर सरकार व प्रशासन किसानों की मांगों को

आइस कोल्ड में क्यों रखता जाता है ? और धरतीपुत्रों को क्यों खुदकुशी करनी पड़ती है ? वर्ष 2014 में 5,650 किसानों ने आत्महत्या की, जो 2015 में बढ़कर 8007 हो गई। यह वृद्धि 47.7 फीसद है, जो हर किसी को हैरत में डालती है।

पिछले दो दशक में 3,18,528 अन्नदाताओं ने अपने ही हाथों अपनी जान दे दी। अभी हर 41 मिनट में कहीं न कहीं एक किसान खुदकुशी करता है। सभी जगह कर्ज नहीं चुका पाना मुख्य कारण सामने आता है। करे तो करे क्या ? हर फसल के साथ कर्ज बढ़ता ही जाता। कृषकों का ग़म और गुस्सा कहीं न कहीं तो निकलना ही है। पहले ग़म का दुष्परिणाम खुदकुशी और पलायन। 2001 से 2011 के बीच 90 लाख किसानों ने अपनी पुश्तैनी जायदाद छोड़ शहरों की ओर पलायन किया। गांव तेजी से वीरान होते जा रहे हैं। और शहर, अनामंत्रित लोगों के बोझ से बदहाल। एक अध्ययन के मुताबिक हर रोज 2,000 से ज्यादा किसान रोजी-रोटी की आस में शहरों की ओर भाग रहे हैं। कहां है गरीबों के आंसू पोंछने की सौगंध खाने वाले सियासत के खैवनहार और विकास और प्रगति का ख्वाब संजोने वाले नीति-नियामक झण्डाबरदार ?

देश के 56 फीसदी कामगार खेती से जुड़े हैं, जो सरकार की गलत नीतियों से अब घाटे की ही नहीं अपितु बदहाली और मौत का कारण भी बन चुकी है। जो किसान पूरे देश का अन्नदाता कहा जाता है, वह आज भिखारियों की तरह खड़ा है। सूखे और बंपर पैदावार दोनों ही हालत में वह बदहाली की अंधेरी सुरंग में धकेल दिया जाता है। एक हालत में तो उपज पैदा नहीं होती है और दूसरे में उपज का दाम नहीं मिल पाता। बड़ी अज़ीबोग़रीब हालत है। 2022 में किसानों की आय दोगुनी करने की बात की जा रही है, मगर अभी तो वह दो जून की रोटी के लिए भी फाकाकशी कर रहा है। सरकारों ने किसानों को मुनाफ़ाखोर बाजार के हवाले कर रखा है। हर कोई उसे नोच रहा है। फसल पैदा होती मुश्किलात से, मगर जब उसे वह बेचने निकलता है तो एमएसपी के सरकारी मूल्य से भी काफी नीचे बेचना पड़ता है या फिर अपने उत्पाद को सड़कों पर फेंकना पड़ता है क्योंकि परिवहन लागत अलग से देना पड़ता है जो उसके बस में नहीं। पकी फसल को खेत में जलाना पड़ता है। यह गणित समझ से परे है कि किसानों से दो-तीन रुपये किलो खरीदा जाने वाला टमाटर उपभोक्ता तक बीस रुपये किलो में कैसे पहुंच रहा है ? उपभोक्ता को तो गिरी हुई कीमत का कोई लाभ ही नहीं मिलता, न किसान को लागत मूल्य। बिचौलिए और भंडार गृह वाले बीस गुना ज्यादा कमा लेते हैं, जिस पर न कोई सोचता और न कोई लगाम लगाता है ?

कॉरपोरेट से गलबहियां, किसान की उपेक्षा

मौजूदा वक्त में किसानों पर सरकारी बैंकों को 12 लाख 60 हजार करोड़ का का कर्ज है। सरकार उनका आंशिक कर्ज माफ करने की दिशा में तो नहीं सोचती, परन्तु कॉरपोरेट घरानों का 6.8 लाख करोड़ का एनपीए को माफ करने को हरदम उतावली दिखती है। अकेले 12 घरानों पर 2 लाख करोड़ से ज्यादा का एनपीए है। सरकार की नजर में यह देश की अर्थव्यवस्था के लिए जरूरी है। ऐसा करने पर बड़े कर्जदारों के एनपीए का भार आम आदमी की जेब पर पड़ेगा। रसूखदारों के कर्ज वसूली पर पर तो गोलमाल बात की जाती है, वहीं किसान के कर्ज़ माफी की बात आते ही वित्तीय अनुशासन का पाठ दोहराया जाता है। भाजपा एक देश, एक विधान की बात करते नहीं थकती, वह बैंकिंग व्यवस्था की इस भारी-भरकम पोलपट्टी पर चुप क्यों है ? यह सही है कि कर्ज माफी जैसे कदम से न किसानों का भला होने वाला है, न देश की अर्थव्यवस्था का। भाजपा यूपी के चुनाव में कर्ज माफी का वादा कर खुद ही अपने जाल में फंस गई कहा जा रहा है कि यदि सरकार देश के सभी किसानों का कर्जा माफ करती है तो बैंकों व अर्थव्यवस्था का भट्टा ही बैठ जाएगा। नोटबंदी से उद्योग, व्यापार, कृषि, रोजगार पर्यटन सहित तमाम क्षेत्रों में कोई मानें न

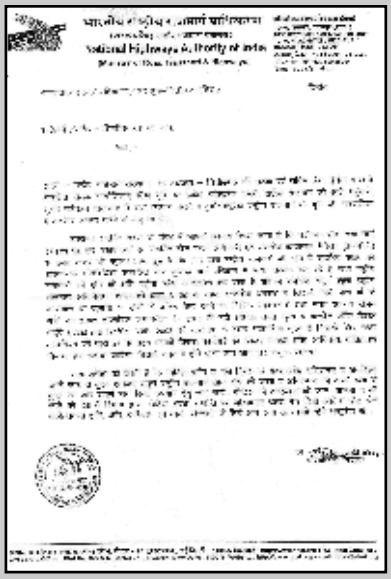

जमीन पर डाका

हाल ही राजस्थान के उदयपुर से किशनगढ़ तक राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-76 को सिक्स लेन में बदलने के लिए डबोक-चित्तौड़गढ़ के किसानों ने भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने जून में जो नोटिस दिए हैं, उसे लेकर किसानों में भारी रोष है और उन्होंने इसे सरकार की ओर से किसानों की जमीनों पर खुले आम डाका डालने की कोशिश करार दिया है। नोटिस में यह नहीं कहा गया है कि उन्हें सड़क विस्तारीकरण के लिए जमीन चाहिए, बल्कि प्राधिकरण ने दशकों से काबिज खातेदारों को जमीन पर अतिक्रमण करने का दोषी बताते हुए तत्काल जमीन छोड़ने को कहा है। ऐसा न करने पर उन्हें जेल और आर्थिक दण्ड की सजा भुगतने को तैयार रहने की धमकी दी गई है।

मानें, परन्तु हालत खस्ताहाल है। मंदी, प्राकृतिक आपदा और गलत सरकारी नीतियों के चलते किसान इस उम्मीद से कर्ज चुकाते ही नहीं कि वह माफ हो जाएगा। दूसरा, एक कर्ज माफ होने से ही उसकी समस्या सुलझने वाली नहीं है। किसानों की समस्या केवल बैंकों से लिया कर्ज ही नहीं है। इससे कई गुना ज्यादा ऋण तो साहूकारों या अन्य सूदखोरों के मार्फत लिया जाता है। सरकारी कर्ज माफी का लाभ तो उन्हें कतई नहीं मिल पाता। भूमि सुधार, सिंचाई, आसान बैंकिंग सुविधा, मंडी में माकूल विपणन व्यवस्था, अवशीतन भंडार गृह, उन्नत कृषि उपकरण और अन्य आवश्यक सुविधाओं की जगह फौरी राहत के इंतजामों से किसान का भला कैसे होगा ? एक दशक से ज्यादा समय बीतने के बावजूद स्वामीनाथन रिपोर्ट धूल फांक रही है।

2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान नरेन्द्र मोदी ने कृषि उपज के लिए आयोग की अनुशंसा के अनुसार लागत मूल्य पर कम से कम पचास फीसद लाभ देने का वादा किया, जो अब तक पूरा नहीं हुआ। सरकारी कर्मचारी को 108 तरह के भत्ते मिलते हैं। सबसे कम वेतन पाने वाला चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी 18 हजार मासिक वेतन पाता। जबकि देश के काश्तकार की औसत आय 6426 रुपये है।

जब शेयर बाजार गिरता है तो सरकारी तंत्र हरकत में आ जाता है और कॉरपोरेट कंपनियों पर राहत की बौछारें करता है दूसरी ओर किसानों को उपज का उचित मूल्य नहीं मिलता, औने-पौने दाम में उसकी भूमि अवाप्त कर भूमाफियाओं और उद्योग घरानों को बतौर नजराना पेश की जाती है और जब वह इसका विरोध करता है तो माथे और सिने पर गोली दागी जाती है। चुनावों में तो 'जय किसान' के गगनभेदी घोष सुनाई देते, पर सत्ता मिलते ही सियासत किसान विरोधी हो जाती है ? क्रांति की शुरूआत न उच्च वर्ग से होती है, न मध्यम वर्ग से। उसकी शुरूआत होती है मजलूम, उपेक्षित, वंचित और कमजोर वर्ग से। सरकार को आसन्न आन्दोलन से बचने के लिए बातचीत और समझदारी से काम लेना होगा। यह सही है कि जीडीपी में बढ़ोतरी अकेले कृषि क्षेत्र से नहीं हो सकती। उसके लिए औद्योगिक विकास सहित अन्य परियोजनाएं जरूरी हैं। मगर एक ही पंगत में बैठे दो व्यक्तियों के बीच भेदभाव नहीं होना चाहिए। खेती-किसानी का पूरा ढांचा अनियोजित और संगठित क्षेत्र में आता है। इस क्षेत्र को भी सरकारी सहायता और सुनियोजित नीतियों की जरूरत है। हालांकि सरकार कृषि जगत को काफी-सहूलियतें दे रही है, परन्तु उसका ज्यादा लाभ सम्पन्न किसान ही लेते हैं और कमजोर लोगों को पूरा लाभ नहीं मिल पाता। उत्तर प्रदेश सरकार ने पिछले दिनों 36 हजार करोड़ का कर्ज और 5630 करोड़ का एनपीए माफ किया था। तमिलनाडु में भी किसानों को मामूली राहत मिली थी। अब ताजा घटनाक्रम के बाद महाराष्ट्र में भी 35 हजार करोड़ का कर्ज माफी का ऐलान हुआ है। पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक में भी यह सब कुछ होने वाला है। परिस्थितियां प्रतिकूल साबित हो सकती हैं, क्योंकि बैंकों से लिए कर्ज में उद्योगपतियों की 41.7 फीसद और किसानों की 13.49 फीसद हिस्सेदारी है। 2015 में बैंकों का एनपीए 3.5 लाख करोड़ था, जो इस वर्ष 9 लाख करोड़ होने का अनुमान है।

राजस्थान में विपक्षी दल कांग्रेस ने 14 जून को सभी संभाग मुख्यालयों पर किसानों की कर्ज माफी और समस्या समाधान के एिल एक साथ धरना-प्रदर्शन शुरू कर दिया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सचिन पायलट कह चुके हैं कि यदि मध्यप्रदेश की तरह राजस्थान में किसानों को बंदूक दिखाई गई तो उसकी नली मोड़ना भी किसान जानता है। केन्द्र सरकार ने अभी हाल ही में 3 लाख रुपये का फसल ऋण नॉमिनल इन्टरेस्ट पर देने की घोषणा की है। आने वाले दिनों में किसान आन्दोलन के और अधिक उग्र होने की संभावना है।

BIRLA CORPORATION LIMITED
(MP Birla Group)
CORPORATE OFFICE: 1, Shakespeare Sarani, Kolkata – 700 071, Phone: 6603 3300 to 3302, Fax: (033) 2288 4426
E-mail: customer.services@birlacorp.com, Website: www.birlacorporation.com
REGISTERED OFFICE: Birla Building, 9/1, R.N. Mukherjee Road, Kolkata – 700 001

इस बदहाली का जिम्मेदार कौन?

-जगदीश सालवी

भारत में आर्थिक असमानता की खाई दिन-ब-दिन चौड़ी होती जा रही है। देश के 84 खरबपतियों के पास 24.8 खरब डॉलर का खज़ाना है, वहीं 51.4 फीसद परिवारों की आय का जरिया अस्थाई मजदूरी है। देश में हर साल सवा करोड़ बेरोजगार लोग रोजगार मंडी में उतरते हैं।

'एक आदमी रोटी बेलता है/एक आदमी रोटी खाता है/एक तीसरा आदमी भी है/न रोटी बेलता है/न रोटी खाता है/वह सिर्फ रोटी से खेलता है/मैं पूछता हूँ - यह तीसरा आदमी कौन है ? मेरे देश की संसद मौन है।' दशकों पहले कवि धूमिल ने यह सवाल उठाया था, लेकिन इसका उत्तर आज तक नहीं मिल पाया। हैरत इस बात की है कि शासन-प्रशासन व नीति-निर्धारकों ने इस सवाल पर विचार करने की ज़हमत तक भी न उठाई। वर्ल्ड इकोनॉमिक फॉरम की आर्थिक असमानता पर जारी 'एन इकोनॉमी फॉर 99 परसेंट' नामक रिपोर्ट चौंकाती है। जिसके अनुसार केवल आठ धन्ना सेठों के पास विश्व की आधी आबादी यानी 3.6 अरब गरीब जनता से भी ज्यादा धन-दौलत है। दुनिया के एक फीसद अमीरों के कब्जे में 99 फीसद संपत्ति है। विश्व के दस प्रतिशत लोग अब भी कंगाली(दो डॉलर प्रतिदिन से कम आय) में जीते हैं, जबकि धन्ना सेठों के पास विश्व की 50 फीसद से ज्यादा संपत्ति है। हिन्दुस्तान के हालात तो और भी खराब है। यहां एक फीसद यानी 84 खरबपतियों के पास 24.8 खरब डॉलर का खज़ाना है, जो देश की संपदा का 58 फीसद हैं। देश की कुल संपदा का मूल्य 31 खरब डॉलर आंका गया है। आर्थिक असमानता की खाई दिन-ब-दिन अधिक चौड़ी होती जा रही है। पूंजीपतियों द्वारा धन का बेतहाशा प्रदर्शन और फिजूलखर्ची पर कोई अंगुली नहीं उठती, क्योंकि उनकी सत्ता में सीधी भागीदारी रहती है। आश्चर्य यह है कि अपव्यय और दिखावेपन की यह सरिता उच्च शिखरों से उतर कर सामान्य जन को चिढ़ाती उसके आंगन के समीप से बहती आगे बढ़ती है। आधुनिकता व सामाजिक संस्कारोंके नाम पर धन व अन्न की बेवज़ह बर्बादी पर कोई बहस नहीं है। शादी-ब्याह, होटल-रेस्तरां, प्रीतिभोज-स्वरुचि भोज में लाखों टन अन्न रोज बर्बाद हो रहा है।

गोदामों में सड़ता रहा अन्न

भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में वर्ष 2016-17 के दौरान 8679.39 मीट्रिक टन यानी करीब 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक खाद्यान्न की बर्बादी हुई और यदि पिछले छह सालों का आंकड़ा देखें तो 62,000 मीट्रिक टन अनाज नष्ट हो गया। इसके अलावा हर साल 23 करोड़ टन दाल, 12 करोड़ टन फल और 21 करोड़ टन सब्जियां वितरण प्रणाली के अभाव में खराब हो जाती हैं। यानी चालीस फीसद हिस्सा हर साल नष्ट हो जाता है। इस अपव्यय से पांच करोड़ बच्चों की जिंदगी संवारी जा सकती है। चालीस लाख लोगों को गरीबी के चंगुल से और पांच करोड़ लोगों को आहार सुरक्षा की गारंटी दी जा सकती है। आखिर ऐसी क्या मज़बूरी है कि हर साल गोदामों में लाखों टन अनाज चूहे खा जाते और बाकी का काफी हिस्सा सड़ जाता है। सार्वजनिक वितरण व्यवस्था के लीकेज पोइंट से निकल कर खाद्यान्न कालाबाजारियों के आटा मिलों में खप कर गरीबों का निवाला छिन जाता है। कुपोषण तथा भुखमरी जैसी समस्याओं से निजात के लिए मिड डे मील योजना पर भी भ्रष्ट तत्वों की गिद्ध दृष्टि लगी है।

आर्थिक तरक्की के बिना सब व्यर्थ

भारत में कूड़ेदानों में भोजन तलाशते लोग अक्सर देखे जाते हैं। हर साल पांच साल से कम उम्र के दस लाख बच्चों की मौत के आंकड़े संयुक्त राष्ट्र जारी कर चुका है। देश के 51.4 फीसद परिवारों की आय का जरिया महज़ अस्थाई मजदूरी है। 1.30 अरब की आबादी में से करोड़ों लोगों को दो जून की रोटी, सिर ढकने को छत, प्राइमरी शिक्षा, पेयजल, कपड़े, दवा जैसी मूलभूत सुविधाएं मिलने की कोई गारंटी नहीं है। सरकारी योजनाओं के झुनझुने और राजनैतिक दलों के घोषणापत्रों से भला आम जनता की माली हालात कैसे बदल सकती है ?इस सच से कैसे इनकार किया जा सकता है कि विकास की बेतरतीब डगर पर चलने से ही अमीर व ग़रीब के बीच खाई लगातार चौड़ी होती जा रही है। देश की 86 फीसद आबादी खेती-बाड़ी व कृषि कार्यों पर ही निर्भर है। खेती-

किसानी घाटे का सौदा होने से किसान व मजदूर आत्महत्या कर रहे हैं। एक तरफ जहां नौकरियां व रोजगार के अवसर सिमटते जा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर मशीनीकरण से कामगारों के हाथ खाली होते जा रहे हैं। सर्वाधिक रोजगार देने वाले आठ सेक्टरों-कपड़ा, हैण्डलूम-पॉवरलूम, चमड़ा, ऑटो, रत्न-आभूषण, परिवहन, आईटी-बीपीओ और धातुकर्म के मौजूदा हालात यह है कि अर्से से नई नौकरियां न के बराबर है। अमेरिकन कंपनी जीएम मोटर्स के भारत में कारोबार समेटने से लाखों लोगों पर प्रभाव पड़ेगा। कॉरपोरेट कंपनियों में सब काम ठेका प्रथा व संविदा आधारित होने से रोजगार सुरक्षा समाप्त हो गई है। आंकड़े गवाह हैं कि भारतीय रोजगार बाजार में हर महीने दस लाख नए नौजवान उतर रहे हैं।

एक साल में सवा करोड़ बेरोजगारों का आंकड़ा दिल दहलाता है। सरकारी विभागों में चपरासी या ऐसे ही अन्य चंद छोटे पदों पर लाखों आवेदन आते हैं, जिनमें हजारों इंजीनियरिंग, एमबीए, एमएम, पीएचडी डिग्रीधारक होते हैं। देश के किसी भी हिस्से में 'हर हाथ को काम' देने का सरकारी नारा बेरोजगारों का मुंह चिढ़ाता प्रतीत होता है। सामाजिक असंतोष, अपराध, हिंसा, अराजकता, मारा-मारी की बढ़ती घटनाओं में कहीं न कहीं भुखमरी और बेरोजगारी के बीज छिपे होते हैं।

कब टूटेगी तंद्रा

आजादी के बाद भी दिशाहीनता पसरी है, सरकार व समाज में। समस्या को जड़-मूल से मिटाने के बजाय तात्कालिक स्तर पर राहत के छींटों का स्प्रे होता है। खुली और बाजार आधारित अर्थव्यवस्था का मोटा सिद्धान्त यह माना जाता है कि यदि ग़रीबों का भला करना है तो देश की आर्थिक विकास दर ऊंची रखो। लेकिन अन्तरराष्ट्रीय जगत में आज इस फॉर्मूले को खारिज किया जा चुका है। कई मुल्कों में देश की खुशहाली नापने के लिए अब मानव विकास व भूख सूचकांक जैसे मापदण्ड अपनाये जा रहे हैं। और इन दोनों पैमानों पर यदि भारत को मापा जाए तो देश की हालत दयनीय दिखेगी।

अन्न, धन व पानी की बर्बादी पर एक नई चेतना विकसित करनी होगी। दिखावटी प्रदर्शन, फिजूलखर्ची व भोजन की बर्बादी पर बने कायदे-कानून फाइलों में ही दमतोड़ रहे हैं। क्या यह

संभव नहीं कि आतिशबाजी, धूम-धड़ाके और भोजन की बर्बादी पर समाज व व्यक्ति के स्तर पर स्वैच्छिक प्रतिबंध लगे। लोग खुद ही तय करें कि लड़के, लड़की की शादी और अन्य छोटे सामाजिक समारोहों में अधिक मेहमान शिरकत न करें। मीठे व्यंजन दो से ज्यादा न बने और सामूहिक हिस्सेदारी पर सामाजिक आयोजन सुनिश्चित हों।

अधिकतर आयोजनों में पच्चीस-तीस प्रतिशत से अधिक भोजन कूड़े के ढेर पर चला जाता है। दुनिया भर में एक अरब तीस करोड़ टन यानी एक तिहाई भोजन बर्बाद हो जाता है। भारतीय संस्कृति में अन्न को ब्रह्म का दर्जा दिया गया, जिसके अनुसार भोजन जूठा छोड़ना या उसका अनादर करना पाप माना गया है। औसतन हर भारतीय साल में छह से ग्यारह किलो अन्न बर्बाद करता है। इस बचे हुए भोजन से भूखे, निराश्रित व कमजोर तबके के जरूरतमंदों का पेट भरा जा सकता है। अन्नदान एक बड़े पुण्य का काम है। देश की मुख्य समस्याओं में से एक है भुखमरी। देश के 87 करोड़ लोगों के भोजन का अभी माकूल इंतजाम ही है।

करनी होगी सभी को पहल

जम्मू-कश्मीर सरकार द्वारा शादी समारोह में मेहमानों से लेकर व्यंजनों की संख्या तक सीमित करने का बहुत पहले अपूर्व फैसला किया गया था, जिसमें अवहेलना करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का प्रावधान है। पिछले साल ही सांसद राजीव रंजन ने भी लोकसभा में इस बाबत निजी विधेयक लाने का प्रस्ताव सौंपा था। हालांकि वह प्रोसेस में है, परन्तु जनहितैषी सरकार का तमगा लगाए बैठी केन्द्र सरकार इस दिशा में आगे क्यों नहीं बढ़ती? ग़रीबी और अमीरी के बीच फासला कम करने के लिए सरकार ने युनिवर्सल बेसिक इनकम का झुनझुना जरूर बजाया, परन्तु वह भी शायद अगले लोकसभा चुनाव के लिए प्रिजर्व्ड कर दिया लगता है।

नोटबंदी को भी इस दिशा में सहायक करार दिया गया, परन्तु इसके दुष्प्रभावों से कृषि और औद्योगिक विकास का आर्थिक पहिया भी तो धीमा पड़ गया है। रोजगार विहीन आर्थिक विकास से ग़रीबी कैसे कम की जा सकती है? समय रहते सरकार व उसके नीति-निर्धारकों को इस ज्वलंत सवाल पर ग़ौर करना होगा, अन्यथा भारत 'स्टील इंडिया' में कैसे रूपान्तरित हो पाएगा? इस संदर्भ में ज्यां द्रेज की पुस्तक 'इंडिया एंड इट्स कंट्राडिक्शन' का जिक्र जरूरी है, जिसमें देश के विकास के दावों और पैमानों को गंभीर चुनौती मिलती है। उम्मीद की जा रही है कि वाणिज्य-व्यवसाय के क्षेत्र में बहुप्रतीक्षित और बहुप्रचारित गुड्स एंड सर्विस टैक्स(जीएसटी) के जुलाई में लागू हो जाने के बाद देश की आर्थिक तस्वीर बदल सकती है। अगर ऐसा हुआ तो नोटबंदी से सहमे बदहाल बाजार में फिर से रौनक लौट सकती है।

सुलझा जीएसटी का पेंच,

-एन.के.शर्मा

- जुलाई से जीएसटी होगा लागू - रिटर्न दाखिल करने की दो माह की मोहलत

आज़ादी के बाद जीएसटी को देश का सबसे बड़ा टैक्स रिफॉर्म कहा जा रहा है। जुलाई से व्यावसायिक लेन-देन पूरी तरह बदल जाएगा। न बाजार पहले जैसा रहेगा और न ही खरीददार का अनुभव। 18 मई को जम्मू-कश्मीर में जीएसटी काउंसिल की निर्णायक बैठक में 95 प्रतिशत से अधिक वस्तुओं/सेवाओं पर टैक्स की दरें तय की गई। शेष पर 3 जून को काउंसिल की बैठक में फैसला हो गया। आने वाले दिनों में इनमें संशोधन भी हो सकता है। जीएसटी लागू होने पर सभी राज्यों को अतिरिक्त राजस्व मिल सकता है। टैक्स का सबसे ज्यादा लाभ उस राज्य को मिलेगा जहां माल की खपत ज्यादा होगी। पहले प्रोडक्शन बेस्ड राज्यों को ज्यादा फायदा होता था। वस्तु या सेवा की बिक्री पर लगाए सेस के फंड से केन्द्र सरकार मैन्युफैक्चरिंग वाले राज्यों को हुए नुकसान की भरपाई करेगी, बशर्ते की राज्य अपना राजकोषीय घाटा बजट में तय लक्ष्य के भीतर रखते हैं। देश में दो दशक से टैक्स स्ट्रक्चर को दुरुस्त करने की कोशिशें अब साकार होने जा रही है। वस्तु एवं सेवा कर एक जुलाई से लागू हो रहा है।

यूं गुज़रा दो दशक का सफ़र

एकीकृत अप्रत्यक्ष कर प्रणाली (जीएसटी) का सफ़र साल 2000 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से शुरू हुआ। इसे मंजिल तक पहुंचने में 16 साल से अधिक का समय लग गया। एनडीए सरकार ने वर्ष 2000 में जीएसटी का रोडमैप तैयार करने के लिए पश्चिम बंगाल के वित्तमंत्री असीम दास गुप्ता की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई थी। 2004 में वित्त मंत्रालय के सलाहकार विजय केलकर की अध्यक्षता में बने टास्क फोर्स ने व्यापक जीएसटी का सुझाव दिया। यूपीए सरकार में वित्तमंत्री पी. चिदम्बरम और प्रणव मुखर्जी ने इस आर्थिक सुधार कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। मार्च 2011 में यूपीए सरकार ने इस बाबत लोकसभा में संशोधन विधेयक पेश किया। मार्च 2013 में नरेन्द्र मोदी ने गुजरात में मुख्यमंत्री रहते राज्य को सालाना 14000 करोड़ रुपये के नुकसान पर हल्ला बोला। 15वीं लोकसभा के विघटन के साथ ही यह विधेयक दफ्तर दाखिल-सा हो गया। केन्द्र में भाजपा सरकार बनने पर 2014 में नए वित्तमंत्री के रूप में अरुण जेटली ने बिल पर जमी धूल को झाड़ इसे फिर संसद में पेश किया तो कांग्रेस ने पुराना हिसाब चुकता करने इसका जमकर विरोध किया। बाद में इसे संसद की स्थाई समिति के पास भेजा गया। मई 2015 में जीएसटी को लोकसभा ने तो पारित कर दिया, परन्तु कांग्रेस ने इसे राज्यसभा में पास नहीं होने दिया। कांग्रेस ने चार बार संशोधन करवाए और लम्बी कशमकश के बाद आखिरकार 6 जुलाई 2016 को राज्यसभा में कांग्रेस के सहयोग से इसकी राह प्रशस्त हो गई। राज्यों की सहमति और जीएसटी परिषद् की कई बैठकों के बाद अन्ततः मई 2017 में आम सहमति से इस पर पास होने की मुहर लग पाई।

आम आदमी को होगी सहूलियत

'एक देश, एक बाजार, एक टैक्स' की सुधारवादी सोच पर आधारित इस नई व्यावसायिक गतिविधि में सरकार तथा विपक्षी दलों की कोशिश रही कि आम लोगों को इसका जोर से झटका न लगे। अच्छी बात यह है कि अनाज, दाल, दूध-दही, अंडे, फल-सब्जी वगैरह को इससे अलग रखा गया है। यानी इन चीजों पर कोई टैक्स नहीं लगेगा। आशय सीधा है कि लोगों को खाने-पीने की चीजें महंगी नहीं मिलेगी। कॉफी, चाय, मिठाई जैसे कई उत्पादों के लिए पांच फीसदी दर तय की गई है। बिक्री कर की पुरानी व्यवस्था से देखें तो ये चीजें भी अब पहले की बनिस्बत सस्ती मिलने लगेगी। हालांकि बहुत से उत्पादों पर जीएसटी की दरें 28 फीसद है लेकिन ऐसी चीजें बाजार के कुल सामान का 19 प्रतिशत ही है। माना जा रहा है कि छोटी पेट्रोल कारें 28 फीसदी दर व सेस के बावजूद पहले के मुकाबले सस्ती और लग्जरी कारें महंगी पड़ेगी।

एक आकलन के अनुसार रोजमर्रा इस्तेमाल की चीजें जैसे - केश तेल, साबुन, टूथपेस्ट, गेंहू, चावल, मिठाई, चीनी, खाद्य तेल वगैरह सस्ते हो जाएंगे। इनमें से कई ऐसी चीजें हैं, जिन पर पहले 28 प्रतिशत टैक्स लगता था, अब 18 फीसद लगेगा। मल्टी यूजफुल कोयले पर पहले 11.69 फीसद टैक्स लगता था, अब 5 प्रतिशत लगने से कई वस्तुओं के भाव कम होंगे, क्योंकि ऊर्जा क्षेत्र में कायेले की भारी खपत है। लग्जरी उत्पाद, सिनेमा हाल, जुआघर, होटल, घुड़दौड़ जैसे उपक्रमों पर उच्च श्रेणी का टैक्स लगेगा।

पेट्रोल-डीजल पर कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि इन पर जीएसटी लागू नहीं होगा। 1205 वस्तुओं पर कर की दर और छूट की सूची को 18 मई की बैठक में अंतिम रूप दिया गया, वहीं छह वस्तुओं यानी सोना, ब्रांडेड वस्तुओं, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों पर टैक्स व रियायत का फैसला 3 जून की काउंसिल बैठक में कर दिया गया।

वैसे अभी कई वस्तुएं और सेवाएं जीएसटी के दायरे में ली जानी बाकी है कृषि उत्पादों को इससे बाहर रखने के फैसले से किसानों की आमदनी पर असर नहीं पड़ेगा, साथ ही उपभोक्ताओं को भी दाम ज़्यादा नहीं चुकाना होगा। स्वास्थ्य और शिक्षा को भी इसके दायरे से बाहर रखने का फैसला भी आम लोगों की माली हालात सुधारेगा।

यूं समझें उपभोक्ता के फायदे

शर्ट पर मान लीजिए 100 रुपये के कच्चे माल पर विनिर्माता 10 प्रतिशत टैक्स चुकाता है। निर्माता 130 रुपये इसकी कीमत रखता है। 10 प्रतिशत टैक्स के हिसाब से 13 रुपये बनते हैं, जबकि उसे सिर्फ 3 ही देने पड़ेंगे। थोक विक्रता 130 में खरीदकर 150 रुपये में खुदरा विक्रता को बेचता है। 10 प्रति. टैक्स के हिसाब से 15 रुपये टैक्स देना चाहिए। लेकिन 13 रुपये टैक्स घटाकर सिर्फ 2 रुपये देना होगा। खुदरा विक्रता इस शर्ट को 150 रुपये में खरीदकर 160 रुपये में बेचता है। इस पर 16 रुपये का टैक्स बनता है। अब उसे सिर्फ एक रुपये ही टैक्स का चुकाना होगा। उपभोक्ता को फायदा ऐसे होगा कि शर्ट पर चार चरण में टैक्स 10 रुपये, तीन रुपये, दो रुपये और एक रुपया हुआ, जो अन्ततः 16 रुपये है। इस तरह उपभोक्ता को 144 रुपये की लागत वाली शर्ट 160 में मिलेगी। जीएसटी से पहले हर चरण में 10 फीसदी टैक्स बढ़ता जाता और वही शर्ट 208.23 रुपये में पड़ती थी। यानी पहले 58.23 रुपए टैक्स के होते थे, जो घटकर 16 रुपये हो जाएंगे।

कॉरपोरेट के साथ लघु व्यवसायी भी खुशहाल

जीएसटी आम सहमति से तैयार की गई कर व्यवस्था है। यह ठीक है कि इसे यहां तक पहुंचाने में अनेक सारी बॉटलनेक बाधाओं से गुजरना पड़ा, जिनमें ज्यादातर राजनीतिक बाधाएं ही थीं। लेकिन इन बाधाओं ने ही इसे राजनीतिक मजबूती दी। इसे हमारे लोकतंत्र की ताकत भी माना जाना चाहिए। जीएसटी की चार दरें तय की गई हैं - 5, 12, 18, 28 प्रतिशत। व्यापारियों और उत्पादकों को अब पूरे देश में एक ही टैक्स प्रक्रिया का पालन करना होगा। अब तक केन्द्र व राज्य सरकारों के अलग-अलग टैक्स, जैसे - उत्पाद शुल्क, अति. उत्पाद शुल्क, अतिरिक्त व विशेष सीमा शुल्क, वैट, केन्द्रीय बिक्री कर, खरीद कर, मनोरंजन कर, लॉटरी टैक्स, चुंगी कर, प्रवेश कर के अलावा उपकर यानी सेस और सरचार्ज यानी अधिभार भी लगाए जाते थे। जीएसटी में अब ये सभी खत्म होकर एकीकृत हो जाएंगे। एक वस्तु पर देश भर में टैक्स की दर एक समान होगी। दोहरे कराधान की समस्या का निराकरण होगा और एकीकृत राष्ट्रीय बाजार के निर्माण की राह खुलेगी। भारतीय उत्पादक घरेलू और अन्तरराष्ट्रीय बाजार की प्रतिस्पर्धा में मजबूती से टिक सकेंगे।

आर्थिक विकास पर भी उत्साहवर्द्धक प्रभाव पड़ेगा। छोटे व्यापारियों को यानी जिनका सालाना टर्नओवर 10 लाख रुपये(पहाड़ी राज्यों में 20 लाख रुपये) हैं, उन्हें अब कोई टैक्स नहीं देना होगा। प्रत्येक कारोबारी को महीने में एक बार रिटर्न भरना होगा। टैक्स अदायगी से पूरा इनपुट टैक्स क्रेडिट अपने आप ही मिलेगा। रिटर्न फाइल ऑनलाइन प्रक्रिया से होगा। माना जा रहा है कि इससे कर व्यवस्था में पारदर्शिता आएगी और कर चोरी कम होगी। लेकिन इसका यह अर्थ भी नहीं है कि देश यकायक भ्रष्टाचार के काले युग से निकलकर ईमानदारी के स्वर्णयुग में प्रवेश कर जाएगा।

सिस्टम में लगेगा कुछ वक्त

टेक्नोलॉजी या नियमों के लिहाज से इतना बड़ा प्रणालीगत बदलाव दिक्कतों-खामियों के बिना हो जाएगा, ऐसा संभव नहीं लगता। जीएसटी के दायरे में वे दुकानदार भी आएंगे जो मौजूदा समय में कैश में माल बेचते हैं और एक्साइज या स्टेट टैक्स चुकाने से बचते हैं। जीएसटी लागू होने पर इस लेन-देन पर रोक लगेगी, तब महंगाई दर का बढ़ना तय है। व्यापारियों को नए सॉफ्टवेयर-हार्डवेयर, स्टॉफ की ट्रेनिंग, विशेषज्ञों की सेवाओं के बदले धन चुकाना पड़ेगा तो वे ग्राहकों से ही वसूल करेंगे। जीएसटी डेस्टिनेशन बेस्ड टैक्स है। ऐसे में मुनाफे के मार्जिन को बनाए रखने के लिए प्रोडक्ट्स की कीमतें बढ़ सकती हैं। शुरुआत में व्यापारियों को कुछ परेशानी निश्चित है। वहीं कुछ जिंसों की दरों व रियायत को लेकर भी प्रोडक्ट उत्पादकों ने विरोध जताना शुरू कर दिया है। सरकार का कहना है कि वाज़िब कारण होने पर फिर से विचार भी किया जा सकता है।

जापान, कनाडा, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया और मलेशिया में जीएसटी लागू होने पर वहां सकल घरेलू उत्पाद के शुरुआती आंकड़े उत्साहजनक नहीं रहे। भारत ने जब जीएसटी की कवायद शुरू हुई, तब 34 देशों में जीएसटी था, अब 165 देशों में यह लागू है। देश में टैक्स दरों में संशोधन और संभावित आर्थिक परिदृश्य के सुनहरे बनने की उम्मीदों से घरेलू शेयर बाजार सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया है। इकोनॉमिक रिफॉर्म का नफ़ा-नुकसान साथ चलता है। अल्पकालिक नुकसान आगे चलकर दीर्घकालिक फायदे का सौदा बन सकता है। हाल-फिलहाल अर्थ जगत में असमंजस के हालात हैं, फिर भी धीरे-धीरे यह प्रक्रिया आगे बढ़ेगी तो समस्याओं का समाधान भी स्वतः सामने आता जाएगा।

ख़बरदार! जो कभी इधर आए

*उत्तरप्रदेश के मार्च में सम्पन्न विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान गधों को लेकर दिलचस्प टिप्पणियां की गई। प्रत्यूष के अप्रैल अंक में 'गधे की वापसी' शीर्षक से **'कृश्नचंदर'** की चर्चित कहानी प्रकाशित की गई, जो छह दशक पहले लिखी गई थी। पाठकों को यह कहानी बेहद पसंद आई और कहानी के अगले भग को प्रकाशित करने की मांग की गई थी। दिल्ली में सत्ता के गलियारे में सीधी पहुंच बन जाने के बाद किस तरह लालची सेठ की बर्बरता के बाद गधा रेल की पटरी-पटरी होते मथुरा में तानसेन की कब्र पर श्रद्धासुमन चढ़ा कर बम्बई के घीसू घसियारे के आश्रय तक पहुंचा और वहां उसके साथ जो घटित हुआ-प्रस्तुत है।)*

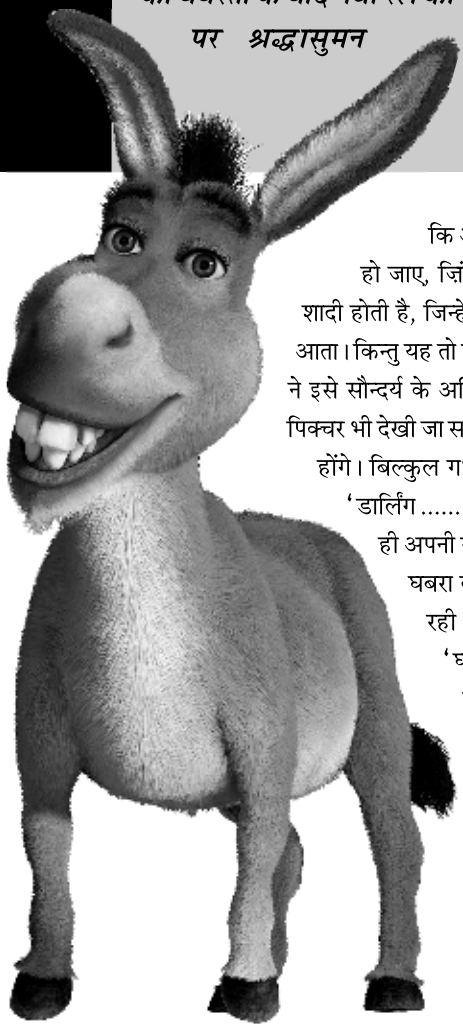

'आ ह महीने में हरी-हरी घास खाकर खूब मोटा हो गया। मेरी काली खाल चिकनी हो गई और मेरे अय्याल(बाल) पर मेरी सेहत का रंग चमकने लगा। वहां मैं एक दम सुन्दर बन गया,जिस पर कोई भी मुग्ध हो सकता था। यह तो कोमलांगियों की कमजोरी है कि वे सदा सुन्दरता पर मुग्ध होती है। चिकनी खाल पर उनकी जान जाती है, चाहे उसके भीतर भले ही भूसा भरा हो। मुझ पर भी कई स्वजातीय सुंदरियों ने डोरे डालने चाहे। उन सब में जो सबसे अधिक कोमल और मादक भाव-भंगिमा वाली थी, वह मुझसे बिल्कुल बातचीत नहीं करती। इसलिए मेरा दिल उसकी ओर बरबस खिंचा चला जाता। उसके कान लंबे, पतले, सुडौल और सुनहरे बालों वाले थे और जिस तरफ वह अपने छोटे-छोटे सफेद दांतों से हरी दूब चरती, उस तरफ मेरा दिल लोटपोट हो जाता। वह दूसरी, भूखी-चटोरी के समान घास पर पिल नहीं पड़ती, बल्कि बड़े धैर्य से एक-एक तिनका चुनते हुए ग्रास खा कर अलग हो जाती और ऐसी-वैसी घास को सूंघ कर अरुचि से छोड़ देती। मालूम होता था कि वह किसी अत्यंत श्रेष्ठ और ऊंचे खानदान से ताल्लुकात रखती है। जो केवल मनोरंजन के लिए झुण्ड में कुछ चहलकदमी कर दफ़ा हो जाती। भूख अमीरों के लिए बेहतर मनोरंजन है, ग़रीबों के लिए नितांत आवश्यकता।

एक दिन अवसर पाकर मैं उसके लिए निकट चला गया। वह नारियल के पेड़ों के झुरमुटे के बीच अकेली घास चर रही थी। निकट जा कर धीरे से कहा, 'ऐ सुन्दरी, कब तक हम से नज़रें चुराओगी। जरा इधर तो देखो, अपने आशिक़ की तरफ़।' 'हिश्ट!' वह अपने नथुने फुला कर बड़ी घृणा से हिनहिनाई। 'आख़िर ऐसी भी उपेक्षा क्यों? मैं भी गधा हूँ' मैनें कहा। 'प्रेम में हर आदमी भी गधा हो जाता है।' उसने ऐसे कंटीले स्वर में मुझ से कहा तो एक क्षण के लिए मैं चुप हो गया।

वास्तव में वह बेहद हाजिर ज़वाब थी। मालूम होता था कि अच्छी शिक्षा पाई है। मैंने सोचा, अगर इससे मेरी शादी हो जाए, ज़िंदगी संवर जाए, वरना आम गधों की ऐसी गधियों से शादी होती है, जिन्हें घास चरने और बच्चे जनने के सिवा कोई काम नहीं आता। किन्तु यह तो बड़ी विदुषी और कर्तव्यपरायण मालूम होती है। ईश्वर ने इसे सौन्दर्य के अतिरिक्त सुरुचि भी प्रदान की है। अरे! इसके साथ तो पिक्चर भी देखी जा सकती है। ज़रा सोचो तो हमारे बच्चे कितने तीव्र बुद्धि के होंगे। बिल्कुल गधे तो न होंगे। मैंने उसकी ओर गर्दन बढ़ा कर कहा, 'डार्लिंग .....'। उसने ऐसी ज़ोर की दुलत्ती झाड़ी कि यदि मैं तत्काल ही अपनी गर्दन न मोड़ लेता, तो शायद थोबड़ा ही बदल जाता। मैं घबरा कर पीछे हट गया। उसके नथूनों से चिंगारियां निकल रही थीं। वह अग्निमय दृष्टि से से मुझे ताकती हुई बोली, 'घसियारे के गधे होकर मुझ से प्रेम करते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती?' मैंने घबरा कर कहा, तुम कौन हो? वह बोली, 'मैं विक्टर ब्रूगांजा की गधी हूँ, जो जोज़फ डिसूज़ा का बॉस है वह दस भट्टियों का मालिक है। गोरेगांव से दूर-दूर तक उसका ठर्रा बिकता है। और मैं तुम्हारी तरह घास नहीं लादती। शराब के केवल चार पीपे लादकर यहां जोगेश्वरी जोजफ़ डिसूज़ा के झोंपड़े तक पहुंचा देती हूँ। फिर शाम को खाली पीपे वापस लेकर जाती हूँ। तुम्हारी जैसी नहीं कि दिन भर बोझा ढोए फिरूं करूं।'

'क्या बात है बेटी?' अचानक पास ही से एक आवाज आई और मैंने देखा कि पकी आयु की उजली किस्म की उसकी मां उसके निकट आ गई। 'कुछ नहीं अम्मा!' युवा सुंदरी बोल पड़ी, 'यह गधा मुझ से प्रेम करने चला है। ज़रा सुनो तो उसकी बात।' उसकी मां ने मुझे सिर से पांव तक देखा और बोली, 'तुम कौन हो?' मैंने अपने बारे में बताया। सुनकर बोली, 'तुम्हारा-हमारा क्या मेल? तुम हिन्दू हो, हम ईसाई।' कहां के रहने वाले हो? 'यूपी का।' 'लो, तुम यूपी के, हम महाराष्ट्र के। तुम्हारा-हमारा क्या जोड़। कौन जाति हो?' 'गधों की भी कोई जाति होती है?' जो मालिक की जाति, वही उसके गुलाम की जाति होती है, वही उसका धर्म होता है। हम जानवर लोग तो अपने मालिक के रुतबे से पहचाने जाते हैं। हम वही सोचते और करते हैं, जो वे चाहते हैं। 'हालांकि मैंने तो अक्सर इंसानों को

जानवरों की तरह सोचते और करते देखा है, बड़ी बी।' मैंने नम्रता से कहा बात बढ़ाने की गर्ज़ से।

बड़ी बी को मेरी बात पसंद आई। बोली, 'तुम समझदार गधे मालूम होते हो।' अच्छा, यह बताओ कि अगर मैं अपनी बच्ची की शादी तुम से करने को तैयार हो जाऊँ, तो तुम इसे रखोगे कहां।' 'घीसू घसियारे के यहां। वह मुझे रात को घर के बाहर जामुन के पेड़ से बांध देता है, बल्कि प्राय: मुझे खुला ही छोड़ देता है, ताकि मैं इधर-उधर घास चर कर अपना पेट भर लूं।' 'तो वह तुम्हें घास नहीं डालता है क्या?' 'नहीं।' 'तो इसका मतलब है अगर मेरी बच्ची की तुम्हारे साथ शादी हो जाए, तो उसे भी घास नहीं मिलेगी?' 'प्रेम में घास क्या करेगी? इक़बाल ने कहा है - 'बेख़तर कूद पड़ा आतिशे-नमरूद में इश्क़।' इश्क़, बड़ी बी, इश्क़ तो इश्क़ है और घास-घास है। मुझे देखो, इश्क़ भी करता हूँ और घास भी खाता हूँ। और कभी-कभी जब घास नहीं मिलती, तो केवल इश्क़ खाता हूँ। क़व्वाली गाता हूं - यह इश्क़-इश्क़ है इश्क़-इश्क़, बड़ी बी, तुम मेरी मानो, अपनी बेटी को मेरे हवाले कर दो। घास का क्या है? यह दुनिया बहुत बड़ी है, कहीं न कहीं घास मिल ही जाएगी।'

'जी नहीं', बड़ी बी कठोरता से बोली, 'मैं अपनी मासूम बच्ची की तुम से हरगिज़-हरगिज़ शादी नहीं करूंगी। जबकि न बाप का पता, न माँ का। न धर्म ठीक, न जाति दुरुस्त। जिनका कोई ठौर-ठिकाना नहीं। ऊपर से पढ़े-लिखे आदमियों की तरह बात करते हो।' मैंने गर्वपूर्ण शब्दों में कहा, 'हाँ, मैं अख़बार पढ़ सकता हूँ। पर इसमें क्या बुराई है?' 'यह तो बहुत बुरी बात है', बड़ी बी जल कर बोली, 'आजकल हिन्दुस्तान में जितने पढ़े-लिखे गधे हैं, सब क्लर्की करते हैं या फ़ाका करते हैं। तुम्हीं बताओ, तुमने आज तक किसी पढ़े-लिखे ठीक आदमी को लखपति होते देखा है? न भैया, मैं तो अपनी बेटी की किसी लखपति से शादी करूंगी।' चाहे वह बिल्कुल अनपढ़, घामड़ गधा ही क्यों न हो।' मुझे गधी की अम्मी की मूर्खतापूर्ण बातों पर बड़ा क्रोध आया। किन्तु, चूंकि मामला इश्क़ का था, इसलिए मैं ज़हर का घूंट पीते हुए उसे फिर से समझाने की कोशिश करने लगा। 'देखो अम्मा, आजकल नया ज़माना है। इस ज़माने में धर्म, जाति-पांति को कोई नहीं पूछता। हम सब हिन्दुस्तानी हैं, हम सब गधे हैं - बस, इतना ही सोच लेना काफ़ी है। यह प्रश्न राष्ट्रीय एकता का है।'

'अमीर और ग़रीब में राष्ट्रीय एकता कैसे?' तुम्हारी समस्याएं अलग हमारी अलग। हमारे स्वार्थ अलग, तुम्हारे अलग। हमारा जीवन स्तर अलग, तुम्हारा अलग। और फिर हम तो हिन्दुस्तानी भी नहीं। हमारी तो नस्ल भी तुम से अलग है। मेरी बच्ची के दादा, ख़ुदा उन्हें करवट-करवट जन्नत बख़्शे, विशुद्ध अंगरेजी गधे थे और मेरी मां फ्रांसीसी नस्ल की थी। और तुम बड़े बेसुरे, बेकार, काले हिन्दुस्तानी हो और चले हो मेरी बेटी से इश्क़ जताने। ख़बरदार! जो मेरी बेटी की तरफ आंख उठा कर भी देखा। दोनों आंखें फोड़ डालूंगी।' यह कह कर बड़ी बी ने मेरी तरफ़ पीठ करके इतनी ज़ोर से दुलत्ती झाड़ी कि मैं घबरा कर भाग खड़ा हुआ और डिसूज़ा की झोंपड़ी के सामने आ कर दम लिया और उस दिन से संकल्प किया कि अब प्रेम नहीं करूंगा, क्योंकि प्रेम करने के लिए केवल इतना ही पर्याप्त नहीं कि वह दिल का हरफ़नमौला हो। प्रेम करने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि आदमी को दो वक़्त की घास भी प्राप्य हो, वरना कोई औरत घास नहीं डालेगी। इसलिए मैंने उस परियों जैसी सुन्दरी से प्रेम करने का विचार त्याग दिया और अपने जीवन को केवल घास लादने पर लगा दिया, जो हर गधे का भाग्य है।

बहुआयामी शिक्षाविद्:आशीष भटनागर

झीलों की नगरी उदयपुर में जन्मे और पले-बढ़े युवा आशीष भटनागर ने एक योग्य प्रशासक, अनुभवी शिक्षक एवं रॉक वुड्स हाई स्कूल के प्राचार्य के रूप में अपनी विशेष पहचान बनाई है। उन्होंने अपनी शिक्षा उदयपुर एवं चण्डीगढ़ से पूरी की।

रूबरू

भटनागर की प्रेरणा पुंज उनकी मां कुसुम भटनागर हैं। जिन्होंने एक शिक्षिका के रूप में लगभग 38 वर्षों तक पूर्ण समर्पण भाव से विभिन्न सरकारी स्कूलों में अध्यापन का कार्य किया। मां के आदर्श जीवन के फलस्वरूप ही भटनागर ने भी शिक्षा जगत में नवाचार का फैसला किया।

हमेशा नई चुनौतियों को स्वीकार करने एवं विभिन्न तरह के जाति एवं सम्प्रदाय के लोगों को जानने एवं समझने की उत्कट इच्छा के कारण ही उन्होंने भारत छोड़कर जेद्दाह स्थित कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से मान्यता प्राप्त अल-वदी-इन्टरनेशनल स्कूल में कार्य किया। सूरत में भी उन्होंने कुछ समय तक कार्य किया। इसके बाद वे दुनिया के तीसरे सबसे गरीब देश मलावी गए, जहां उन्होंने लगभग 10 वर्षों तक कार्य किया। भटनागर विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से अपने सामाजिक दायित्व का भी बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। आशीष ने छात्र जीवन के दौरान विभिन्न स्कूली गतिविधियों में भाग लेकर बहुमुखी प्रतिभा का परिचय कराया। स्वास्थ्य के प्रति सजग भटनागर नियमित रूप से सवेरे घूमना कभी नहीं भूलते। पुस्तकों से इन्हें गहरा लगाव है। शैक्षिक तकनीकी से सम्बन्धित आलेख, प्रेरणास्पद किताबें, जीवनियां एवं लघु कहानियां पढ़ने में विशेष रूचि रखते हैं। वर्तमान में वे अगस्त में दिल्ली में आयोजित होने वाले 'भारतीय स्कूलों में अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता' विषयक सेमीनार में अपने भाषण की तैयारी में व्यस्त हैं।

व्यस्त दिनचर्या के बावजूद उनका पूरा प्रयास रहता है कि वे ज्यादा से ज्यादा समय परिवार के साथ बिताएं। परिवार में कैम्ब्रिज की सभी चार सर्टिफिकेट की योग्यता रखने वाली पत्नी श्रद्धा व पुत्र साहिल है, जो सेकण्डरी का होनहार छात्र है।

एक शिक्षाविद् के रूप में वे मानते हैं कि इंस्टीट्यूट द्वारा बहुत अधिक कोचिंग की आवश्यकता नहीं है। उनकी राय में शिक्षा केवल डिग्री और नौकरी के लिए ही नहीं, अपितु भावी जीवन की सफलता के लिए भी बेहद आवश्यक है।

उदयपुर से बेहद लगाव रखने वाले आशीष उदयपुर से बाहर होने पर उदयपुर को बहुत याद करते हैं। उदयपुर के बारे में उनका कहना है कि बेहतर नागरिकता की भावना के साथ उदयपुर रहने के लिए एक बेहतरीन जगह है।

सद्गुरु परमात्मा का मानवीय रूप

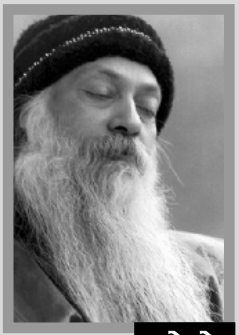

ओशो

सद्गुरु पिता हैं एक बहुत नए अर्थों में। पिता से तो शरीर को जन्म मिलता है, सद्गुरु से आत्मा को। पिता से संसार और सद्गुरु से संन्यास। संसार क्षणभंगुर है और संन्यास शाश्वत। सद्गुरु कभी कभी कोई होता है, गुरु तो बहुत हैं। सद्गुरु पहले तो तुम्हें संसार से मुक्त करवा देता और फिर अपने से भी मुक्त। बच्चा जैसे चलता है, शायद हिम्मत नहीं जुटा पाता खड़े होने की। डरता है और यह स्वाभविक बात भी है। जब बच्चा ठीक-ठाक चलना सीख जाता है तो समझदार पिता या मां धीरे-धीरे हाथ छोड़ कर उसे स्वतंत्र कर देते हैं। नासमझ जबरदस्ती हाथ थामे रहते हैं जीवन भर गुरु की परम महिमा के सम्बन्ध में कबीर का एक दोहा उल्लेखनीय है।

गुरु गोविन्द दोई खड़े,
काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द
दियो बताय।।

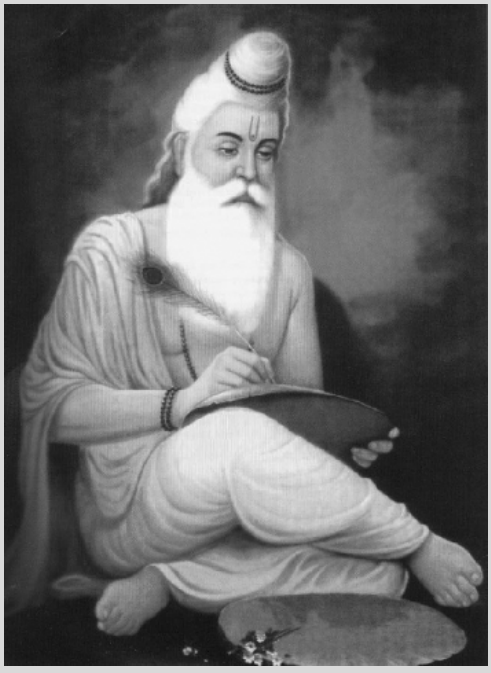

मगर यह पद ज़ाहिर नहीं करता कि कबीर ने फिर पैर छुए किसके? आमतौर पर व्याख्या करने वाले गोविन्द के पैर छूना बताते हैं। पर नहीं, बलिहारी शब्द कुछ और कह रहा है। यह शब्द कहता है : गुरु ने तो इशारा किया परमात्मा की तरफ, लेकिन अब कैसे परमात्मा के पैर छुए जा सकते हैं? बलिहारी शब्द साफ कह रहा है कि कबीर ने पैर तो गुरु के ही छुए। उसने तय किया कि अब ऐसे गुरु के पैर न छुओ तो क्या करो, जो इशारा कर रहा है कि परमात्मा के छू ले।

सद्गुरु प्रत्यक्षत: परमात्मा से नहीं मिलाता, याद दिला देता है कि तुम परमात्मा हो। तत्त्वमसि, तुम वही हो। तुम्हारे भीतर तुम से विराट चैतन्य छिपा है। तुझ में अनन्त प्रकाश छिपा है। तुम्हारे भीतर इतना बड़ा आकाश छिपा है कि जब पहली दफ़ा देखोगे तो भरोसा न आएगा। गुरु की दो बार विशेष रूप से जरूरत पड़ती है जीवन में। एक बार जब वह सत्य का आभास कराने के लिए तुम्हारी आंखों पर छींटे मारे, और दूसरी बार जब तुम आंखें खोलकर देखते हो। पहली बार जब आत्म परिचय हो, तो तुम्हें सद्गुरु यह आश्वासन दे कि घबराओ मत, यही हो तुम, तत्त्वमसि। मत भय करो विराटता को देखकर। अतएव जीवन में सद्गुरु का विशेष महत्त्व है।

तुम माता, पिता, परमात्मा और सद्गुरु के ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकते, क्योंकि जीवन के असली मकसद की याद वही दिला सकते हैं। आम तौर पर तो व्यक्ति शरीर के मूलाधार के इर्द-गिर्द ही पूरा जीवन व्यतीत कर देता है। वह सात चक्रों की यात्रा तो कभी कर ही नहीं पाता।

सद्गुरु के संबंध में जल्दी तो निर्णय नहीं लिया जा सकता है। वह कोई स्वर्ण धातु नहीं कि कसौटी पर कसा और परख लिया। और जब सद्गुरु से वास्ता पड़ेगा तो उतनी ही कठिनाई होगी, क्योंकि जांच-परख तो उसकी हो सकती, जो सतह पर जीता हो। जितना गहरा जीवन होगा, कसौटी के पत्थर वहां काम नहीं आएंगे। तुम्हारा हृदय वहां पहुंच सकता है। जिस दिन अपने हृदय को ही कसौटी बनाओगे, उस दिन उसे पहचान लोगे।

यह बड़े मज़े की बात है कि जो गुरु तुम्हें धोखा देना चाहता है, उसका व्यवहार पहले भला पाओगे। जैसे-जैसे करीब जाओगे, वैसे-वैसे व्यवहार वास्तविक होगा और तुम उतनी ही मुश्किल में पड़ोगे। आदमी जितना छोटा होगा, दूर से वह बड़ा मालूम होगा। पास आओगे, छोटा होता जाएगा। जितना बड़ा आदमी होगा, दूर से उसे देखोगे, तो उतना ही छोटा मालूम होगा। जैसे-जैसे करीब आओगे, आदमी बड़ा होता जाएगा। जिस दिन हृदय के बिल्कुल करीब पहुंचोगे सद्गुरु परमात्मा जितना बड़ा हो जाएगा और अगर ऐसा होता हो तो ही जानना कि तुम ठीक दिशा में जा रहे हो। इसीलिए यह बात गणित के बाहर है। तुम्हारे नजदीक आने पर छोटा हो तो साधारण आदमी है। नजदीक आने पर तो सभी कामचलाऊ व्यक्तित्व छोटे हो जाते हैं। इसलिए राजनीतिज्ञ, जिनको बड़ा दिखने की आकांक्षा लगी रहती है, वह किसी को पास नहीं आने देता, वह दूर रखता है। जितने दूर रहो, उतना ही वह बड़ा मालूम पड़ता है। इसीलिए फासला बना कर रखना पड़ता है। सद्गुरु के पास जाओगे तो उसे पहचान न सकोगे, वह बड़ा बेबूझ मालूम पड़ेगा। जल्दी मत करना। रुकोगे, करीब आओगे, तो ही उसकी सही प्रतिमा प्रकट होगी - यथार्थ स्वरूप सामने आएगा। और यह सस्ता सौदा नहीं है, इसके लिए अपने को, अपने अहंकार को मिटाना पड़ेगा। सद्गुरु जल्दी में कभी न मिलेगा। प्रश्न तो कोई भी पूछ लेता है, उत्तर झेलने की क्षमता थोड़े से ही लोगों में होती है। अगर मन के कुतूहल ने ही प्रश्न उठाया हो तो गहरे उत्तर नहीं दिए जा सकते। दूसरी जिज्ञासा प्राणों की है, जिसका नाम है मुमुक्षा। पहली मन की जिज्ञासा का समाधान तो तोता रटंत शास्त्रों से भी पाया जा सकता है, परन्तु वही जिज्ञासा मुमुक्षा है तो सद्गुरु की शरण में ही जाना पड़ेगा। किसी सद्गुरु की छाया होकर जीना अति कठिन है। वही सच्चा शिष्यत्व है। अंगरखा पहनना सूफ़ियों का प्रतीकात्मक ढंग है। गुरु को ओढ़ लेने से ज्यादा कठिन इस पृथ्वी पर और कोई बात नहीं, क्योंकि तुम्हें मिटना पड़ेगा यानी अपने अहंकार को छोड़ना पड़ेगा।

EVEREST

TECHNICAL EDUCATION PVT.LTD.

(A Company Dedicated for Skill Development)

RS-CIT

Rajasthan State Certificate in Information Technology

Rajasthan Knowledge Corporation Limited

IT shapes future

(A Public Limited Company Promoted by Govt. of Rajasthan)

Authorised Service Provider, Rajasthan

Rajasthan Knowledge Corporation Ltd.

Contact For Opening

New RS-CIT & PMKVY Center

229, 2nd floor, Anand Plaza, University Road,
Udaipur (Raj.) 313001, PH : 0294-510501

E-mail : j_vanawat@hotmail.com, dlcudaipur@rkcl.com

पानी पिएं मगर थोड़ा संभलकर

वर्षा ऋतु का प्रारंभिक माह जुलाई आरंभ हो चुका है। आमतौर पर जलस्रोतों में बरसाती पानी का समावेश हो जाता है। इस मिश्रित पानी से बीमारियों का खतरा रहता है। देहात में बरसाती पानी को 'पालर पानी' कहते हैं। पेयजल के रूप में इसके इस्तेमाल में एहतियात जरूरी है। पानी के प्रयोग में सावधानियां बता रही हैं रजनी अरोड़ा ।

पानी प्राणी मात्र की मूल जरूरतों में से एक है और इसके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। हमारे शरीर के लगभग सत्तर प्रतिशत भाग में पानी है। आयुर्वेद के लिहाज से हमारे पेट को चार भागों में बांटा गया है, जिसमें दो मुट्ठी जगह भोजन के लिए, एक मुट्ठी पानी के लिए और एक मुट्ठी जगह खाली होनी चाहिए। जब इनका संतुलन गड़बड़ाता है तो पाचन और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं सामने आती हैं। लेकिन कई बार गलत तरीके से और जरूरत से ज्यादा पानी पीना सेहत पर भारी पड़ सकता है।

जल अमृत तुल्य है, क्योंकि यह हमारे शरीर में होने वाले वात, पित्त और कफ यानी त्रिदोष को नष्ट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। आहार विशेषज्ञ मानते हैं कि पानी भोजन को पचाने में मदद करता है। भोजन में पाए जाने वाले पोषक तत्व और खनिजों को अवशोषित करके शरीर को ऊर्जा देता है। समुचित मात्रा में पिया गया पानी तंत्रिका तंत्र को शांत कर शारीरिक तापमान नियंत्रित रखता है। हमारे शरीर की कोशिकाओं में ऑक्सीजन पहुंचा कर हमारे चयापचय को बेहतर बनाए रखता है। अपच, कब्ज जैसी पेट से जुड़ी समस्याओं में यह फायदेमंद है।

नुकसान भी पहुंचाता है पानी

पानी पीने के गलत तरीके और लापरवाही से यह अमृत तुल्य जल विष भी बन जाता है और शरीर में त्रिदोष का कारण बन जाता है। आयुर्वेद में तो इन त्रिदोषों को संतुलित रखने के सैकड़ों सूत्र बताए गए हैं, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण है – 'भोजनांते विषं वारि' यानी भोजन के तुरंत बाद पानी पीना ज़हर हो जाता है। हमारे पेट में एक छोटा-सा थैलीनुमा अंग अमाशय या जठर होता है। भोजन सीधे वहीं पहुंचता है। वहां दो ही क्रियाएं होती हैं- भोजन का पचना और सड़ना। जब खाना आमाशय में पहुंचता है, तब इसमें स्वाभाविक रूप से जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है। यह प्रक्रिया भोजन पचाने में मदद करती है। आमाशय में पहुंचा खाना पहले पेस्ट, फिर रस में बदल जाता है और शरीर के विभिन्न अंगों द्वारा आसानी से अवशोषित हो जाता है। अक्सर लोग पानी पिए बिना खाना नहीं खाते। कई तो दो-चार कौर खाना खाने के साथ-साथ पानी पीते हैं और भोजन करने के तुरंत बाद पानी पीते हैं। आयुर्वेद में भोजन के साथ और बाद में पानी पीना निषेध किया गया है। क्योंकि अगर आप भोजन के साथ या बाद में पानी पीते हैं और वह भी ठंडा तो जठराग्नि मंद हो जाती है। नतीजा यह होता है कि भोजन पचने की बजाय सड़ने लगता, जिससे विषाक्तता बढ़ती है। इससे यूरिक एसिड बनता है जो स्वास्थ्य, खासतौर-पर घुटनों, पैरों को प्रभावित करता है। शरीर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ने लगता है। पेट में बनने वाला यही विषाक्त अम्ल जब रक्त में पहुंच जाता है तो हृदयाघात का खतरा भी बढ़ जाता है।

प्रश्न उठता है कि भोजन के कितने समय बाद पानी पीना ठीक है? खाना खाने के कम-से-कम एक घंटे बाद पानी पीना उचित माना गया है। क्योंकि उससे पूर्व पानी पीने से भोजन पचाने में सहायक जठराग्नि धीरे-धीरे धीमी हो जाती है। आमाशय में भोजन पचने की प्रक्रिया शुरू होने के कुछ देर बाद पानी की जरूरत होती है।

आयुर्वेद में माना गया है कि नियत समय पर और ठीक मात्रा में पानी पीना ही स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। जैसे-सुबह खाली पेट सामान्य पानी पीना फायदेमंद है। सुबह उठने के बाद खाली पेट एक गिलास पिया गया पानी हमारे अंदरूनी अंगों की सफाई कर देता है। इसमें नींबू और एक चम्मच शहद मिला कर पीना तो सोने पर सुहागा ही कहा जाएगा। यह पेट के संक्रमण से भी बचाता है और पेट साफ करने में मदद भी करता है।

भोजन से तीस मिनट बाद थोड़ा-सा पानी पीना हितकर है। इससे पेट में मौजूद अम्लता खत्म हो जाती है। पाचन-प्रक्रिया सुचारु होती है। स्नान करने से पहले एक गिलास पानी पीने से रक्तचाप नियंत्रित रहता है। रात को सोने से पहले आधा-एक गलास पानी जरूर पीना चाहिए। इससे बेचैनी या घबराहट न होकर गहरी नींद आती है। यह रात के समय लगने वाली भूख को भी शांत करता है।

इन बातों का रखें ध्यान

- जरूरत से ज्यादा पानी पीना शरीर को नुकसान पहुंचाता है। कई बार पेट अफर जाता है। कुछ खाते नहीं बनता और पेट की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। भूख कम लगने से शरीर में पौष्टिक तत्वों की कमी हो जाती है। ज्यादा पानी शरीर में इकट्ठा होकर सूजन और मोटापे का कारण भी बन जाता है।
- घूंट-घूंट पानी पिया जाए तो बेहतर है। जल्दबाजी में हम अक्सर एक साथ बिना रुके पानी पीते हैं, जो पेट में जलन, दर्द की वजह बनता है।
- भोजन के साथ पानी पीना अगर बहुत जरूरी है तो एक गिलास पानी में आधा चम्मच जीरा और थोड़ा-सा अदरक मिलाकर उबाल लें। गुनगुना पानी भोजन के साथ ले सकते हैं। जरूरी दवाई भी भोजन करने के दस-पंद्रह मिनट बाद खानी चाहिए।
- प्यास बुझाने के लिए हम अक्सर फ्रिज का ठंडा पानी पीना पसंद करते हैं। जो अच्छा तो लगता है, लेकिन शरीर को नुकसान पहुंचाता है। शरीर ठंडे पानी को गरम पानी के मुकाबले बहुत धीरे अवशोषित करता है। शरीर का तापमान ठंडे पानी के मुकाबले काफी ज्यादा होता है। ठंडे पानी को शरीर के अनुकूल तापमान में लाने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती है, जिससे पाचन-तंत्र गड़बड़ा जाता है। अगर यह प्रक्रिया लंबे समय तक चले तो गंभीर उदर रोग भी हो सकता है। पेट में ऐंठन, दर्द, पेट फूलना और गैस जैसी समस्याएं हो सकती हैं। सर्दी-जुकाम हो सकता है। ज्यादा ठंडा पानी पीने से रक्त वाहिनियों पर दबाव पड़ता और वे सिकुड़ने लगती हैं। इससे रक्त-संचार में बाधा और सांस लेने में मुश्किल होती है। इसलिए कम ठंडा या सामान्य पानी पीना ही बेहतर है। सुराही या घड़े का पानी सबसे अच्छा है।
- जिन्हें अपच, डायरिया, पेट फूलना, रक्ताल्पता जैसी समस्या हो, उन्हें पानी कम मात्रा में पीना चाहिए। संभव हो तो अदरक, सौंफ आदि मिला कर पानी को उबाल कर पिएं। इससे पानी हल्का और सुपाच्य हो जाता है तथा पेट के संक्रमण का खतरा नहीं रहता।
- सुबह-शाम तांबे या चांदी के बर्तन में सात-आठ घंटे पहले भर कर रखा पानी पीना फायदेमंद है। इससे पानी में पाए जाने वाले कीटाणुओं का नाश होता है।
- खेल कर या श्रमसाध्य कार्य से आने के बाद तुरंत पानी नहीं पीना चाहिए। दस-पंद्रह मिनट रुकने के बाद ही पानी पीना चाहिए, जो अधिक ठंडा न हो तो बेहतर है।

बरसात में जलस्रोत होते संक्रमित व प्रदूषित

शरीर में सर्वाधिक मात्रा पानी की होती और प्रतिदिन कुछ घंटे के अन्तराल पर शरीर पानी की मांग करता है। बरसात में जलजनित रोगों का आक्रमण बढ़ जाता है। इसलिए पानी पूरी तरह साफ और प्रदूषण मुक्त बना कर ही उपयोग किया जाए। बेहतर है पानी को साफ करने के बाद भी गर्म और ठण्डा कर पीने के काम में ले। पेयजल की टंकियों और नलों में फंगस का संक्रमण इन दिनों कुछ ज्यादा ही बढ़ जाता है। ताल-तलैया, कुआ-बावड़ी तो पूरी तरह संक्रमित हो जाते हैं। पेयजल में तनिक भी लापरवाही हजार परेशानियों की जड़ है। रिवर्स ऑस्मोसिस (आरओ) वाटर भी इस माने में सुरक्षित नहीं माना जा रहा है। क्योंकि नई शोध में बताया गया है कि इसमें सारे खनिज व लवण प्यूरीफाई हो जाते, जबकि कुछ की शरीर को जरूरत रहती है।

नौकरशाही कर रही, आजादी के दीवानों की उपेक्षा

उदयपुर/प्रत्यूष ब्यूरो। देश की आजादी के लिए महात्मा गांधी के नेतृत्व से प्रेरित होकर मेवाड़-मेरवाड़ा में विजय सिंह 'पथिक' एवं माणिक्यलाल वर्मा के अगुआई में चले स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर जेल की यातनाएं सहने वाले स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को ही नहीं, उनके नाम को भी भूल कर बैठा है, उदयपुर का जिला प्रशासन। अशोक नगर स्थित माणिक्य लाला वर्मा समाधि स्थल के निकट प्रशासन की ओर से स्थापित शिलालेख में फ्रीडम फाइटर कनक मधुकर, हुकुमराज मेहता, मास्टर किशनलाल वर्मा, जगन्नाथ प्रसाद चौबे और हीरालाल अग्रवाल बेगूंवाला के नाम का उल्लेख ही नहीं है। जिला स्वतंत्रता सेनानी संघ के संस्थापक-अध्यक्ष एवं वरिष्ठ पत्रकार कनक मधुकर की दसवीं पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर 9 जून को जिला स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संगठन ने मधुकर को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए प्रशासन से मांग की कि वह इन स्वतंत्रता सेनानियों के नाम शिलालेख में अविलम्ब अंकित करें। संगठन के अध्यक्ष जगदीश अग्रवाल एवं महामंत्री प्रमोद वर्मा के अनुसार जिला प्रशासन का यह कहना कि दिवंगत स्वतंत्रता सेनानियों की सूची उसके पास उपलब्ध नहीं है, हास्यास्पद और गैर जिम्मेदाराना जवाब तो है ही, देश की आज़ादी के लिए सर्वस्व अर्पण करने वालों के प्रति खुला आसमान भी है। इन सभी दिवंगत स्वतंत्रता सेनानियों के अंतिम संस्कार प्रशासन की मौजूदगी में राजकीय सम्मान से हुए, बावजूद इसके शिलालेख में नाम जोड़ने के प्रति उदासीनता बरती जा रही है।

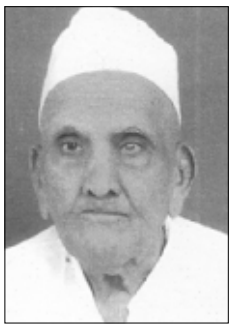

मधुकर : परिचय व योगदान

भीलवाड़ा(राजस्थान) के बनेड़ा कस्बे में 12 जुलाई 1912 को अग्रवाल परिवार में जन्मे कनक मधुकर ने गांव में ही प्रारंभिक शिक्षा के बाद साहित्याचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की और अक्षय मेमोरियल मीडिल स्कूल बनेड़ा में 1931 से 35 तक अध्यापन कार्य किया। इसके बाद वे गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में दो वर्ष तक शिक्षक रहे। सन् 1939 में 'नवजीवन' समाचार पत्र का प्रकाशन कर स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय हो गये। ब्रिटिश हकूमत के खिलाफ बेबाक लेखन के लिए इन्हें सरकार से कठोर चेतावनियां भी मिली किन्तु उन्होंने अंग्रज हकूमत ओर सामंतशाही के खिलाफ लेखन जारी रखा। सन् 1942 के 'भारत छोड़ा आन्दोलन' में कनकजी को गिरफ्तार कर 14 माह तक अजमेर जेल में योतनाएं दी गई। सन् 1943 में जेल से रिहा किया गया और वे उदयपुर चले आए, जहां मृत्यु पर्यन्त 'नवजीवन' का प्रकाशन जारी रखते हुए देश के नव निर्माण में योगदान किया। मधुकरजी उदयपुर जिला स्वतंत्रता सेनानी संघ के वर्षों तक संस्थापक-अध्यक्ष रहे और स्वतंत्रता सेनानियों तथा उनके परिवारों के योगक्षेम के लिए कार्य किया। 10 जून 2007 को 95 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ।

छलावे के बीहड़ में गुमराह ज़िंदगी का सफ़र

ढाई अक्षर यानि 'प्रेम' के मर्म को समझे बिना उसके मोहपाश में फंस कर छटपटाती हैं, मासूम ज़िन्दगियां और मौन खड़ा देखता है, तमाशाई समाज।

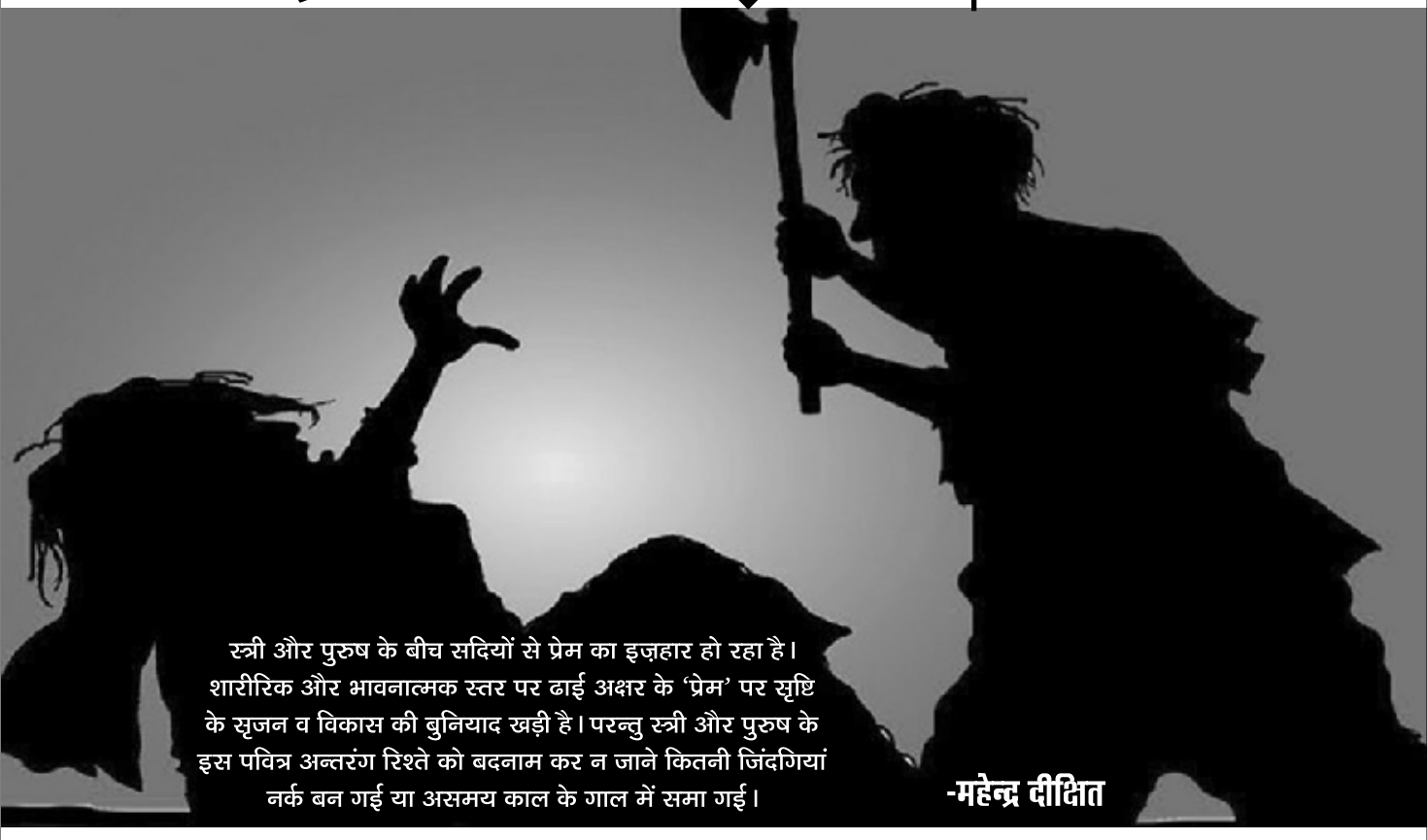

स्त्री और पुरुष के बीच सदियों से प्रेम का इज़हार हो रहा है। शारीरिक और भावनात्मक स्तर पर ढाई अक्षर के 'प्रेम' पर सृष्टि के सृजन व विकास की बुनियाद खड़ी है। परन्तु स्त्री और पुरुष के इस पवित्र अन्तरंग रिश्ते को बदनाम कर न जाने कितनी जिंदगियां नर्क बन गई या असमय काल के गाल में समा गई।

-महेन्द्र दीक्षित

राजस्थान के चुरू शहर के समीप देहाती युवक राजकुमार एक दिन फोटोग्राफी के लिए टमकोर स्कूल गया। वहां उसकी दोस्ती एक युवती से हुई। जल्दी ही वे एक-दूजे को दिल दे बैठे। युवक पिछड़ा वर्ग से तो लड़की दलित वर्ग से थी। दोनों के बीच साल भर प्रेम-पातियों का आदान-प्रदान होता रहा। लड़की के परिजनों को यह बेमेल रिश्ता मंजूर नहीं था। वे किसी तरह युवक को किनारे करने की ठान चुके। इसी माह जून में उन्होंने युवती से फोन करवा कर राजकुमार को मोतीसिंह की ढाणी बुलाया। युवक वहां पहुंच गया। न तो जोश में होश रहा और नहीं दिल-दिमाग दुरुस्त। युवती के परिजनों ने उसकी बर्बरता से पिटाई की और सिर के बाल नोंचकर उखाड़ फैंके। इसके बाद हाथ-पैर के नाखून प्लास से खींच कर उखाड़ लिए। देश में ऐसी त्रासद घटनाएं रोज हो रही हैं, जिसे प्रेम, प्यार, लव का नाम दिया जाता तो कभी इश्क-ए-रूहानी। इन घटनाओं के परिणाम कभी ऑनर किलिंग के रूप में सामने आते तो कहीं कत्ल के रूप में। फिल्म निर्देशक अजय सिन्हा अपनी फिल्म 'खाप : ए लव स्टोरी ऑफ ऑनर किलिंग' के निर्माण से पहले पिछले साल विषय की और गहराई में जाने के लिए हरियाणा के एक गांव गए और एक व्यक्ति से इस बाबत राय जाननी चाही। वह बोला 'हम क्या गलत कर देते हैं? हम मार ही तो देते हैं?' यह एक टिप्पणी उस सामाजिक मानसिकता की प्रतीक है, जो जाति या सम्प्रदाय की कथित प्रतिष्ठा की खातिर पवित्र इंसानी रिश्तों को नफ़रत की आग में झोंक देती है। एक अनुमान के मुताबिक हर साल सैकड़ों युवक-युवतियों को दिल के सौदों में जान गंवानी पड़ती है। अपनों का खून बहाने की प्रवृत्ति किसी एक वर्ग या जाति तक ही सीमित नहीं है। खाप पंचायतों की तो इसमें बड़ी भूमिका है। समाज के मौन और प्रशासन की उदासीनता ने भी कई गंभीर सवाल खड़े किए हैं। विडम्बना यह कि राजनीति भी सामाजिक बंदिशों में उलझी है। समाज सुधारक, विकास के पहरूए और धार्मिक संतों की जमात भी मौन है। फिर कौन करेगा पहल इस मध्ययुगीन बर्बरता के खात्मे की? हरियाणा, पंजाब व उत्तरप्रदेश में लड़कियों की भारी कमी है।

ऐसा इसलिए हो रहा है कि माता-पिता गर्भ में ही लिंग का पता कर कन्या भ्रूण का खात्मा करवा देते हैं। कड़े सरकारी कानून लागू हैं, फिर भी कन्या-भ्रूण हत्या जारी है। इन्हीं राज्यों ने ऑनर किलिंग के खिलाफ केन्द्रीय कानून बनाने का विरोध किया था। कई राज्यों में लिंगानुपात में अन्तर के बेहद डरावने आंकड़े हैं। देश में बच्चियों का अनुपात घट रहा है। अगर यही हालात

रहे तो लड़कों के लिए दुल्हनें आएगी कहां से? कई जगह दुल्हनें उपलब्ध करवाने में दलाली और धोखाधड़ी का कारोबार फल-फूल रहा है। दूसरी ओर यह समाज है कि शादी और गृहस्थी बसने के बाद प्रतिष्ठा का सवाल बनाते हुए उसे उजाड़ने पर आमादा है। मई में जयपुर के करणी विहार में अपनी ही बेटी का सुहाग उजाड़ने वाले दम्पती जीवनराम और भगवती तो सीकर से बाकायदा दो लाख रुपये में शूटर लेकर उसके घर पहुंचे थे। गर्भवती बेटी दया की भीख मांगती रही और वे दामाद की हत्या करवा कर चलते बने। ऑनर किलिंग के नाम पर 2007 में मनोज और बबली की खाप पंचायत के सामने हत्या करवाई गई। पिछले साल मई में आगरा में दो प्रेमियों ने इसलिए आत्मदाह कर ली, क्योंकि धर्म का भेद उनके विवाह को स्वीकार करने को तैयार नहीं था। इसी वर्ष तमिलनाडु में बाइस साल के दलित युवक वी. शंकर को इसलिए जान गंवानी पड़ी, क्योंकि उसने तेवर समुदाय की लड़की कौशल्या से प्रेम विवाह करने का दुस्साहस किया। ऑनर किलिंग के नाम पर जिन लड़कियों की परिवार द्वारा हत्या कर दी जाती है, उन्हें आत्महत्या के रूप में दर्ज करवाया जाता है। तमिलनाडु में ही एक दलित युवक ने सवर्ण लड़की से शादी क्या कर ली, बौखलाए लड़की के परिजनों ने उसके घर धावा बोल दिया और वह नहीं मिला तो उसकी बहन को ही पीट-पीटकर मार डाला। हरियाणा के गुरुग्राम में पिछले साल इक्कीस साल के व्यक्ति ने 'सम्मान' की खातिर अपनी मां और बहन की हत्या कर दी।

इसी साल अप्रैल में नई दिल्ली की उज्मा अहमद की जान पहचान इंटरनेट के जरिए पाकिस्तानी नागरिक ताहिर से हुई। दोनों के बीच चैटिंग शुरू हुई तो ताहिर ने उज्मा को मलेशिया में अच्छी नौकरी दिलाने का झांसा दिया। उसके साथ धोखाधड़ी यहीं से शुरू हुई। आज गूगल, फेसबुक, वाट्सएप, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे नेटवर्क दुनिया के देशों को पलक झपकते एक-दूसरे से जोड़ने की क्षमता रखते हैं। कभी शादी-विवाह का झांसा देकर दुराचार की खबरें सुनाई देती हैं तो कभी प्रेम जाल में फंसा कर अपहरण की घटनाएं होती है। कभी किसी से धन ऐंठ लिया जाता। तो कहीं बैंक एकाउंट ही हैक कर खाली कर लिया जाता है। इश्क जाल में फंसा कर शादी के नाम पर यौन शोषण से कई नवयुवतियों का जीवन नर्क बन जाता है। उज्मा के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ, परन्तु पाकिस्तान की न्यायपालिका की मेहर से इस दारुण बनती कहानी का अंत सुखद बनना संभव हो पाया। दिल दहला देने वाली इस खौफ़नाक घटना से पीड़िता का कटु अनुभव दरअसल सोशल मीडिया में पहचान छिपा कर बैठे दरिंदों के चेहरे से नकाब उतारता है। हुआ यह कि इंटरनेट के जरिए हुई दोस्ती से उत्साहित उज्मा अप्रैल में ताहिर के बुलावे पर मलेशिया पहुंची तब यह राज खुला कि वह व्यक्ति रईस नहीं बल्कि वहां टैक्सी ड्राइवर है। इस वाकए के बाद एक बार तो वह किसी तरह उसके चंगुल से बच कर भारत आ गई, परन्तु एक मई को उज्मा रिश्तेदारों से मिलने पाकिस्तान गई तो ताहिर फिर उसके सम्पर्क में आया और उसने उसे फिर सब्ज़बाग दिखाए कि पाकिस्तान में उसकी बड़ी मिल्कियत और हैसियत है। प्रेम में नासमझी और यकायक विश्वास कर लेने की बीमारी अक्सर हरेक पर तारी होती है। उज्मा ने फिर सहज विश्वास कर लिया और ताहिर ने उसे धोखे से नींद की गोलियां खिला कबीलाई इलाके ख़ैबर पख़्तूनख्वा ले जाकर बंदूक के बल पर निकाहनामे पर दस्तखत कराए। यहां उसे शारीरिक व भावनात्मक रूप से परेशान किया गया। ताहिर ने धमकी दी कि अगर उसने कोई चालाकी की तो नई दिल्ली में अपराधियों से वह उसकी चार साल की बेटी को उठवा लेगा। उज्मा की स्थिति बंधक जैसी थी। फिर भी धैर्य नहीं खोया। वीजा संबंधी खानापूर्ति का बहाना बनाकर ताहिर के साथ इस्लामाबाद स्थित भारतीय दूतावास के काउंटर पर गईं और दूतावासकर्मी को आपबीती सुनाई। दूतावासकर्मी ने उसे सीधे उच्चायुक्त जीपी सिंह तक पहुंचा दिया। बस फिर उसकी दुर्गम राह सुगम बन गई। मामला इस्लामाबाद हाईकोर्ट पहुंचा, जहां न्यायाधीश ने पाक सरकार को हुक्म दिया कि उज्मा को सरकारी संरक्षण में वाघा बॉर्डर तक छोड़ा जाए।

भारत में प्रेमी जोड़ों के मिलन पर अक्सर बवाल खड़ा होता रहता है। ये सिर्फ घटनाएं नहीं हैं, यह उस सामाजिक मानसिकता का नतीजा है, जिसमें जाति, धर्म या गौत्र से बाहर शादी करने को कुल की प्रतिष्ठा पर हमला मान लिया जाता है। धर्म, समाज, सरकार, सभ्यता, शिक्षा, विकास और आधुनिकता की बुलंदिया भी व्यक्तिगत व सामूहिक स्तर पर हावी इस हैवानियत और घोर दकियानूसी को बदल नहीं पाई है। निजी दुश्मनी और सम्पत्ति विवाद के बाद ज़्यादातर हत्याएं प्यार व नफ़रत की इसी खुन्नस के कारण होती हैं। भारत में इस तरह के मामले इसलिए भी बढ़ रहे हैं, क्योंकि यहां अपराधी कानून के शिकंजे से आसानी से बच निकलते हैं। अपराधों के खिलाफ कई पुख्ता कानून हैं, परन्तु गरीब की कानून तक पहुंच कहां? लचर कानून व्यवस्था का लाभ जहां अपराधियों को बचा लेता है, वहीं वोट बैंक की राजनीति और जाति के आधार पर समाज से मिल रहा संरक्षण इन अपराधों को जड़ से उखड़ने नहीं देता। हालांकि प्रेम विवाह करना ऐसी समस्याओं की जड़ नहीं है। कई मामलों में तो प्रेम विवाह बर्बादी का नासूर बन कर खासकर लड़कियों को ता-उम्र सालता रहता है।

इस दिशा में गंभीर चिंतन की जरूरत है। अतिवादी और दकियानूसी दृष्टिकोण को छोड़कर स्त्री के सम्मान की दिशा में तत्काल कदम उठाने की जरूरत है, ताकि खुशहाल परिवार और उन्नत समाज की स्थापना हो सके।

इंटरनेट बढ़ा सकता है डिप्रेशन

यदि आप इंटरनेट से दूर रहने का तनाव महसूस करते हैं या ऑनलाइन न रह पाने की सूरत में अपना ब्लड प्रेशर बढ़ता हुआ पाते हैं तो यकीन जानिए कि आपको एक खास दिमागी बीमारी घेर रही है। जिसे दुनिया भर में 'डिसकोमगूगोलेशन' के नाम से जाना जाता है। नेट यूजर टीनएजर्स में मानसिक तनाव आत्महत्या कर लेने की हद तक बढ़ रहा है। इसमें इंटरनेट का ज्यादा इस्तेमाल ही उन्हें आत्मघात करने के लिए उकसाने वाले बुरे साथी की भूमिका भी निभा रहा है। इसलिए चौकस रहें और इंटरनेट को अपने लिए जानलेवा लत तो कतई न बनने दें।

मौजूदा दौर में कई युवा इंटरनेट को अपना परम सखा मानते हैं। वे अपनी परेशानियों के हल के लिए उसका सहारा लेते हैं। इंटरनेट से हर तरह की सलाह मिल भी जाती है। यहां तक कि ऐसी सलाह कि आप अपनी जिंदगी समाप्त कैसे करें। भले ही देर-सवेर वह सलाह उनके लिए कितनी भी खतरनाक साबित क्यों न हो। यही नहीं, कुछ साइटें तो आपको ये तक जानकारी दे रही हैं कि कैसे अपनी मौत को एक हादसा बनाया जाए। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि कई युवा आमतौर पर ऐसे युवाओं के ब्लॉग पढ़ते हैं जो निराश और हताश होते हैं और जो उन्हें अपनी जीवनलीला समाप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि युवा साइबरवर्ल्ड में बेहतर तरीके से नेविगेट कर पाते हैं और उन्हें अजनबियों से बातचीत करने में किसी तरह की हिचकिचाहट भी नहीं होती। मनोचिकित्सकों का कहना है कि कई बार युवा दवाइयों की सलाह भी इंटरनेट से लेते हैं और अपनी दवा की खुराक की मात्रा कम या ज्यादा कर लेते हैं। इसके अलावा नेट पर सेक्स चैट भी कई बार युवाओं को मानसिक अवसाद की अवस्था में पहुंचा देती है। कई मामलों में माता-पिता इन लक्षणों को दरकिनार कर देते हैं। जो कतई उचित नहीं है।

दीवानगी की हद : इंटरनेट लोगों की जरूरत बन गया है। इसके बिना कई लोगों को ऐसा लगता है कि जिंदगी जैसी अधूरी है। किसी कारणवश ऑनलाइन न हो पाना कई लोगों को हताश कर देता है। एक अध्ययन के मुताबिक ऑनलाइन न होने के कारण स्ट्रेस अनुभव करने वाले लोग 'डिसकोमगूगोलेशन' की समस्या से पीड़ित हो सकते हैं। ब्रॉडबैंड के बढ़ते प्रसार ने हमें इंस्टेंट आंसर की दुनिया में पहुंचा दिया है जहां सूचनाएं लोगों से एक माउस क्लिक दूर हैं। इनकी वजह से लोग वेब के आदी हो गए हैं। वेब उनके सारे सवालों का जवाब और उनके अकेलेपन का साथी बन चुका है। ऐसे में जब वो ऑनलाइन एक्सेस नहीं कर पाते, तो इसी छटपटाहट में वह धीरे-धीरे डिसकोमगूगोलेशन के शिकार होते चले जाते हैं। यह शब्द 'डिसकोमबोबुलेट' और 'गूगल' से मिलकर बनाया गया है। डिसकोमबोबुलेट का मतलब हताशा या असमंजस है। विशेषज्ञों के अनुसार इंटरनेट एडिक्शन को अन्य परंपरागत लतों के समान चार तथ्यों पर परखा जा सकता है। जैसे अधिक इस्तेमाल, दूसरी प्रमुख भावनाओं को नजरअंदाज करना, अधैर्यता और नकारात्मक प्रतिघात के रूप में देखने को मिल रहा है। विभिन्न शोधों के अनुसार अधिक समय तक इंटरनेट पर बिता चुके हैं। साथ ही वह कई आधारभूत मानवीय इच्छाओं को नजरअंदाज करने लगते हैं। यहां तक कि वह कई बार खाना और लंबे समय तक यूरीनेट की प्रक्रिया को भी रोके रखते हैं। जब-जब इंटरनेट कनेक्टिविटी लो होती है, तब उनमें गुस्सा, निराशा और तनाव जैसे लक्षण दिखाई देने लगते हैं।

ये हो जाती हैं दिक्कतें : इंटरनेट एडिक्शन डिस्ऑर्डर्ड लोगों को कई अन्य मानसिक परेशानियों से ग्रसित भी देखा गया। विशेष तौर पर इंटरनेट ओवरयूज के साथ व्यग्रता, असंयम और अभद्र शब्द अधिक प्रयोग करना आदि लक्षण अधिक देखने को मिले हैं। इतना ही नहीं, इंटरनेट के ओवर यूज से आंखों का कमजोर होना, ई-मेल ओवरलोड, निजी जीवन में घुसपैठ व अश्लीलता आदि मामले तो अलग ही हैं। इंटरनेट से यह भावना प्रबल होती है कि आप दुनियाभर से जुड़े हैं और एक अज्ञात शक्ति से आपका संबंध है। कभी-कभी यह मनुष्यों की दूसरों से गहरे संबंध बनाने की अनन्य इच्छा और अपने में परिवर्तन लाने के मार्ग के रूप में भी प्रतीत होता है। लेकिन इंटरनेट इन दोनों मानवीय इच्छाओं को झूठला देता है। यह छद्म संबंध कभी संतुष्टि नहीं देते और वह अज्ञात शक्ति आपकी अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरती। विशेषज्ञों का यहां तक मानना है कि इंटरनेट का अधिक इस्तेमाल लोगों को सामाजिक संबंधों से दूर कर रहा है। वर्चुअल वर्ल्ड की अधिकता उन्हें वास्तविक जीवन की सच्चाइयों से दूर कर रही है। सामान्य कार्यशील वातावरण के लोगों से संबंध कम हो रहा है। सामाजिक अलगाव और कार्यकुशलता पर नकारात्मक असर देखने को मिल जाता है। **मनोचिकित्सकों में जारी है बहस :** हालांकि विशेषज्ञों के बीच यह बहस का मुद्दा है कि इंटरनेट ओवरयूज को लत माना जाए जो ऑनलाइन अधिक समय बिताने वालों की निजी और प्रोफेशनल जीवन को नुकसान पहुंचाती है या फिर साइकलोजिकल डिसॉर्डर। कई विशेषज्ञों का यहां तक भी मानना है कि इंटरनेट एक मानसिक बीमारी भी है जो सिजोफ्रेनिया से ऊपर की हो सकती है। स्टैनफोर्ड युनिवर्सिटी में किए गए एक अध्ययन के अनुसार इंटरनेट ओवर यूज करने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि वह वास्तविक जगत में रहते हैं, वर्चुअल वर्ल्ड में नहीं, जहां वास्तविक लोग और उनसे जुड़ी वास्तविक जिम्मेदारियों का उन्हें वहन करना होता है। इंटरनेट आपकी कमजोरी न बने और इसका इस्तेमाल अन्य रचनात्मक कार्यों की जगह न बना ले, इस पर ध्यान देना जरूरी है। आपका काम ही आपकी पहचान बनता है और रचनात्मक कार्य पूरी तरह से किसी भी व्यक्ति की निजी मेहनत का नतीजा होता है। इंटरनेट पर पूरी तरह से निर्भरता न बनाएं। जिससे उसका इस्तेमाल न कर पाने के कारण आप हताशा के शिकार नहीं होंगे। किसी नियमित समय पर रोज इंटरनेट न करें। ऑनलाइन होने के दौरान बीच-बीच में ब्रेक लेते रहें ताकि अनावश्यक दबाव से मुक्त रह सकें। ■

- निष्ठा शर्मा

ज्योति बॉ फूले गर्ल्स कॉलेज

राजस्थान सरकार से मान्यता एवं
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से सम्बद्धता प्राप्त

प्रवेश प्रारम्भ

B.A., B.Com., B.C.A.

B.A.

चित्रकला, गृह विज्ञान अर्थशास्त्र, अंग्रेजी,
हिन्दी, इतिहास, राजनीति विज्ञान,
लोक प्रशासन, समाज शास्त्र, भूगोल

बस सुविधा उपलब्ध

B.Com.

ए.बी.एस.टी., व्यवसायिक प्रशासन, ई.ए.एफ.एम.

B.C.A.

सेन्ट ज्योति बॉ फूले पब्लिक स्कूल
प्लेग्रुप से आठवीं तक

ज्योति बॉ फूल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज
Bed

दिनेश माली
चेयरमेन
09414168050

हाईवे बाईपास, अग्निशमन केन्द्र के सामने,
पो. मादड़ी पुरोहितान, उदयपुर

दिवाकर माली
निर्देशक
09772740999

विदा हुई परदे की मां

हिन्दी फिल्मों और टेलीविजन धारावाहिकों में 'मां' का किरदार जीवंत करती रही, रीमा लागू(59)अब दुनिया में नहीं रही। गत 18 मई तड़के हृदयाघात से निधन हो गया। सलमान, आमिर, संजय दत्त और शाहरूख जैसे सुपरस्टारों की मां का उन्होंने कई फिल्मों में जीवंत किरदार निभाया। सलमान के साथ तो उन्होंने करीब दर्जन भर फिल्में की। इन दिनों वे धारावाहिक 'नामकरण' में देखी जा सकती है। इसी सीरियल में वे हाथ जलने से जख्मी भी हुई थीं।

1958 में मुम्बई में जन्मी, रीमा के बचपन का नाम नयन भदभाड़े था। मराठी एक्टर विवेक लागू से विवाह के बाद नाम बदलकर रीमा रखा। शादी के कुछ साल बाद ही पति-पत्नी अलग हो गए। इनकी बेटी मरूनमयी रंगमंच की अच्छी कलाकार है। फिल्मों व धारावाहिकों में भी नजर आती है।

रीमा ने स्कूली शिक्षा पूरी करते ही मराठी रंगमंच से अभिनय के क्षेत्र में प्रवेश किया। उन्होंने हिन्दी और मराठी फिल्मों में ज्यादातर सपोर्टिंग भूमिकाएं निभाई। कई फिल्मों में अभिनय के लिए उन्हें सम्मान भी मिले। वे 80 और 90 के दशक की फिल्मों में मां की भूमिका में काफी लोकप्रिय हुई।

सुपरहिट फिल्में

फिल्म 'कयामत से कयामत तक'(1988) में रीमा ने अभिनेत्री जूही चावला की मां का किरदार निभाया था। इसके बाद 'मैंने प्यार किया'(1989) और 'साजन' में 1991 में सलमान खान की मां की भूमिका अदा की। ये फिल्में बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट रही। इसके बाद 'गुमराह' (1993) और 'जय किशन' जैसी ड्रामा और थ्रिलर फिल्में भी कीं। 'गुमराह' अपने समय की सुपरहिट फिल्म थी और कमाई के कई रिकॉर्ड्स भी इस फिल्म ने अपने नाम किए।

यादगार भूमिकाएं

पारिवारिक फिल्मों में रीमा की अदायगी खूब पसंद की गई। 'हम आपके हैं कौन' (1994), 'ये दिल्लगी'(1994), 'दिलवाले'(1994), 'कुछ-कुछ होता है'(1998) और 'कल हो ना हो'(2003) में रीमा ने यादगार भूमिका निभाई।

चुनौतीपूर्ण किरदार

रीमा ने ज्यादातर 'मां' की भूमिकाएं कीं लेकिन इसके अलावा इन्होंने कई तरह की चुनौतीपूर्ण भूमिकाएं भी निभाई। फिल्म 'आक्रोश'(1980) में इन्होंने डांसर की भूमिका की तो वहीं 'दिल्लगी'(1994) में एक बिजनेस वुमैन की भूमिका निभाई। इसके बाद रीमा ने 'वास्तव' फिल्म में डॉन संजय दत्त की मां की भूमिका की, जिसमें वह बेटे की हत्या कर देती हैं। 1997 में आई फिल्म 'रूई का बोझ' में उनके नाम को खूब पसंद किया गया। इस फिल्म में उनके साथ पंकज कपूर थे।

अवॉर्ड्स जो इनके नाम रहे

टीवी पर भी इस अभिनेत्री ने कई यादगार रोल निभाए। डीडी नेशनल पर प्रसारित होने वाले सीरियल 'तू-तू, मैं-मैं' में इस अभिनेत्री की भूमिका को खूब पसंद किया गया था। इस कॉमिक रोल के लिए उन्हें प्रथम इंडियन टेली अवार्ड्स से भी सम्मानित किया गया।

राजश्री प्रोडक्शन की कई यादगार और कामयाब फिल्मों में रीमा ने मां की ममता को इस तरह जीवंत किया कि दर्शकों की आंखें छलछला उठीं। रीमा लागू बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस के लिए चार बार फिल्मफेयर अवार्ड जीत चुकी थीं।

- निर्मला सालवी

प्रकृति की अनूठी धरोहर मणि महेश

खूबसूरत पर्वत शृंखलाओं से घिरा कैलाश पर्वत 'मणि महेश' कैलाश के नाम से भी प्रसिद्ध है। सदियों से श्रद्धालु इस पवित्र मनोरम तीर्थ स्थली की यात्रा करते आ रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के चम्बा जिले के भरमौर इलाके में स्थित इस पावन स्थल पर मणि महेश नामक एक छोटी सी झील भी है, जिसकी पूर्व दिशा में 18,564 की कैलाश पर्वत है। जबकि झील समुद्र तल से लगभग 13,500 फुट की ऊंचाई पर है। मणि महेश पहुंचने के लिए चंबा से यात्रा शुरू होती है। देवदार तथा जंगली वृक्षों और जड़ी-बूटियों के घने वन की 13 किमी खड़ी चढ़ाई पर करते हुए भी मणि महेश पहुंचा जा सकता है। मार्ग में कलरव करती रावी नदी भी कहीं-कहीं श्रद्धालुओं के साथ ही चलती जान पड़ती है। हिमाचल सरकार ने इस पर्वत को 'टरकोइज माउंटेन' यानि वैदूर्यमणि या नीलमणि कहा है। मणि महेश कैलाश पर्वत के पीछे जब सूर्योदय होता है तो सम्पूर्ण आकाश मंडल में नीलिमा छा जाती है और नीली किरणों से हिमपर्वत आच्छादित हो जाता है। पर्वत में नीलमणि का गुणधर्म होने से ही यह संभव होता है।

जुलाई-अगस्त के दौरान पवित्र मणिमहेश झील के इर्द-गिर्द हजारों तीर्थयात्रियों का जमावड़ा रहता है। राधा अष्टमी के दिन सूर्यदेव की पहली किरण जब कैलाश पर्वत पर पड़ती है तो शिखर पर प्राकृतिक रूप से बने शिवलिंग से चमत्कारिक मणि जैसी आभा प्रस्फुटित होती है। इसकी किरणें जब झील के पानी में उतरती हैं, तो झील का जल अमृत तुल्य हो जाता है और श्रद्धालु इसमें डुबकी लगाकर निहाल हो जाते हैं। कहा जाता है कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से राधाअष्टमी के मेले के दौरान झील में स्नान करने से न केवल पापों का नाश होता है अपितु रोगों से भी छुटकारा मिलता है।

भरमौर नरेश मरू वर्मा के 550 ईस्वी में भगवान शिव के दर्शन-पूजन के लिए मणि महेश कैलाश आने-जाने का उल्लेख मिलता है। इसी मरूवंश के नि:संतान राजा साहिल वर्मा ने 920 ईस्वी में उनके राज्य में चौरासी योगियों के आगमन पर उनकी खूब आवभगत की। जिनके वरदान से राजा को 10 पुत्र और एक पुत्री चम्पा प्राप्त हुई। इस पर राजा ने उन योगियों के सम्मान व स्मृति में चौरासी मंदिरों के समूह का निर्माण करवाया। पुत्री चम्पा के नाम पर ही इस कस्बे और बाद में जिले का नाम 'चंबा हुआ।

इनमें मणि महेश नामक शिव मंदिर और लक्षणा देवी मंदिर अत्यन्त भव्य एवं मुख्य हैं। ये मंदिर समूह तत्कालीन स्थापत्य कला की बेजोड़ मिसाल है। एक अन्य कथा के अनुसार भगवान शिव चौरासी योनियों समेत मणि महेश यात्रा पर निकले तो राह में कुछ देर के लिए ब्राह्मणीदेवी की वाटिका में विश्राम किया, इससे देवी नाराज हो गई और योगियों को प्रस्तर शिलाखण्डों के रूप में तब्दील कर दिया। ये चौरासी मंदिर वही हैं। भगवान शिव देवी के विशेष अनुरोध पर लिंग रूप में यहां स्थापित हुए। इस स्थल की खोज योगी चरपटनाथ ने की एवं उन्हीं के प्रयासों से यहां यात्रा का क्रम चल पड़ा।

-दीपा शर्मा

मीरा के मुकाबले जीत की गणित कोविंद के पक्ष में

दलित बस्तियों से रायसीना तक की दौड़

साफ-सुथरी छवि और निर्विवाद रामनाथ कोविंद का राष्ट्रपति बनना तय है। भाजपा ने मिशन 2019 को ध्यान में रखते बड़ा सियासी कार्ड खेला है। यह पहला मौका होगा जब राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दोनों ही उत्तरप्रदेश के होंगे। वे उत्तरप्रदेश में जन्मे पहले और दलित समुदाय से ताल्लुक रखने वाले दूसरे राष्ट्रपति होंगे। इनकी उम्मीदवारी के मद्देनजर विपक्षी दलों ने भी बाकी नामों को छोड़कर बिहार से ताल्लुक रखने वाली दलित नेता एवं पूर्व लोकसभा स्पीकर मीरा कुमार को अपना प्रत्याशी बनाया है लेकिन जीत की गणित फिलहाल कोविंद के पक्ष में है।

- शान्तिलाल शर्मा

बिहार के राज्यपाल रहे कोविंद को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाकर भाजपा ने विपक्ष को हैरत में डाल दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने औचक फैसले के लिए हमेशा चर्चित रहे हैं। उन्होंने कोविंद को उम्मीदवार बनाकर एक तीर से कई निशाने साधे हैं। राष्ट्रपति पद के लिए दोनों प्रमुख उम्मीदवारों ने नामांकन दाखिल कर दिया है। चुनाव 17 जुलाई को तथा मतों की गिनती 20 जुलाई को होगी। निवर्तमान राष्ट्रपति का कार्यकाल 24 जुलाईको पूरा हो रहा है। देश में सबसे अधिक सांसद वाले उत्तरप्रदेश को ज्यादा महत्त्व देने का यह प्रयास दूरगामी साबित होगा। भाजपा अर्से से अपने दल के व्यक्ति को राष्ट्रपति बनाने के प्रयास कर रही थी। उसने 5 साल पहले भी 2012 में आदिवासी का मुद्दा उछालकर पीए संगमा को राष्ट्रपति बनाना चाहा, परन्तु वह सफल नहीं हुआ। वाजपेयी सरकार ने भी 2002 में ऐसा ही प्रयास किया, परन्तु अपेक्षित वोट न होने और अपनी साख बचाने के लिए एपीजे अब्दुल कलाम को राष्ट्रपति का उम्मीदवार बनाया। इस बार भाजपा ने देश के सर्वोच्च पद पर दलित व्यक्ति को बिठाने की मज़बूत बिसात बिछाई है। इस चुनाव से पहले 1997 में कांग्रेस ने एक दलित उम्मीदवार के. आर. नारायणन को राष्ट्रपति पद के लिए नामित किया था। लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन, केन्द्रीय मंत्री सुषमा स्वराज, झारखंड की राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू, उत्तरप्रदेश के राज्यपाल राम नाईक, केन्द्रीय मंत्री थावरचंद गहलोत समेत कई नाम राष्ट्रपति पद की उम्मीदवारी को लेकर चर्चा में थे। भाजपा की सहयोगी शिवसेना ने तो आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत और कृषि वैज्ञानिक **स्वामीनाथन** का नाम सुझाया था। पूर्व **उपप्रधानमंत्री** लालकृष्ण आडवाणी **और मुरली मनोहर** जोशी का नाम **तो अयोध्या मामले में** आरोपी होने **से चर्चा से ही** हट **गया।**

कैसा हो संवैधानिक प्रमुख?

राष्ट्रपति कैसे व्यक्ति को बनाया जाए, इसे लेकर हाल के वर्षों में बहस-मुबाहिसें होती रही हैं। एक वर्ग का मानना था कि किसी गैर राजनैतिक व्यक्ति को इस पद पर बिठाया जाए, जो जीवन के किसी क्षेत्र विशेष का दिग्गज हो। लेकिन दूसरी राय यह थी कि यह पद किसी अनुभवी राजनेता को ही दिया जाना चाहिए। यह बहस किसी मुकाम पर नहीं पहुंची। अंततः वही हुआ जो केन्द्र में सत्तारूढ़ दल चाहता था। इस बीच यह अनुमान भी राजनैतिक फिज़ा में तैरता रहा कि भाजपा निवर्तमान राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी को एक मौका और देगी। लेकिन 11 मार्च को यूपी में भाजपा की महाविजय के बाद यह संभावना समाप्त हो गई। स्वयं निवर्तमान राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने भी से इस चर्चा को विराम दे दिया। निश्चय ही प्रणव मुखर्जी का कार्यकाल गरिमामय रहा।

कोविंद क्यों भाए मोदी-शाह को?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह को लगता है कि अगले लोकसभा चुनाव में पिछली सफलता को दोहराने के लिए देशभर के पिछड़ों-दलितों को साधने के लिए बड़ा संदेश जरूरी है। मोदी खुद पिछड़े समुदाय से आते हैं और वे दलित राष्ट्रपति निर्वाचित करवा कर मिशन 2019 को साधना चाहते हैं। रामनाथ कोविंद दलितों के कोरी समुदाय से आते हैं, जो यूपी में जाटव और पासी के बाद सबसे बड़ा दलित समुदाय है। कोविंद को राष्ट्रपति बनाकर भाजपा उत्तरप्रदेश के साथ ही बिहार जैसे राजनैतिक-सामाजिक समीकरणों वाले राज्यों में अपनी पैठ मजबूत करना चाहती है। वह यूपी में मायावती और बिहार में लालू यादव की दलित ठेकेदारी का माकूल जवाब देना चाहती है। ये दोनों मोदी सरकार व भाजपा पर दलित और आरक्षण विरोधी होने का आरोप लगाते आए हैं। कोविंद तो खुद आरक्षण बचाओ जैसे अभियान चला चुके हैं। अब ये **क्या क**हेंगे?

विपक्षी एकता का टूटा आधार

राष्ट्रपति चुनाव के जरिए विपक्षी दलों को एक मंच पर लाने के प्रयास में जुटी कांग्रेस को धक्का पहुंचा है। कांग्रेस,कम्युनिस्ट और तृणमूल इत्यादि पार्टियों के अलावा कई प्रमुख विपक्षी दलों ने भारतीय जनता पार्टी द्वारा घोषित 'दलित' उम्मीदवार के समर्थन में जाने के संकेत दिए हैं। कई पार्टियों ने कोई न कोई तर्क ढूंढ कर कोविन्द की उम्मीदवारी का समर्थन करने का बहाना ढूंढ लिया। विपक्षी एकता को सबसे पहले बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने झटका दिया और कोविंद के समर्थन का ऐलान किया। ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक, समाजवादी पार्टी के प्रमुख मुलायम सिंह यादव, तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव, आन्ध्र के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू, वाईएसआर पार्टी के राजशेखर रेड्डी, तमिलनाडू में अन्नाद्रमुक के सभी धड़ों ने कोविंद के समर्थन की घोषणा की है। पलड़ा भारी होता देख शिवसेना ने भी साथ देने का ऐलान कर दिया है। हालांकि विपक्षी दलों द्वारा कोविंद के खिलाफ चुनाव में मीरा कुमार जैसी विदुषी और संजीदा दलित राजनेता का नाम आगे बढ़ाने से चुनाव बेहद रोचक हो गया है।

वोटों का समीकरण

राष्ट्रपति चुनाव एकल संक्रमणीय चुनाव पद्धति से होगा। इसमें सम्पूर्ण देश के 776 सांसद और 4120 विधायक वोट देंगे। इनके वोटों का मूल्य 10 लाख 98 हजार 882 है। जीतने के लिए 5 लाख 49 हजार 442 वोटों की जरूरत रहेंगी। पांच विधानसभा चुनाव के नतीजों से पहले एनडीए के कुल वैध मत महज 4,49,690 ही थे। नतीजों के बाद मात्र 24,522 वोटों से एनडीए पीछे था। अब जैसा कि ताजा घटनाक्रमों व समीकरणों के बाद की जो चुनावी तस्वीर नजर आ रही है, उसके अनुसार भाजपा के उम्मीदवार रामनाथ कोविंद के पक्ष में 62 प्रतिशत से अधिक मत हो गए हैं। एनडीए के पक्ष में वाइएसआर, टीआरएस, जेडीयू, बीजद, शिवसेना, अन्नाद्रमुक सहित कई छोटे दलों के आने के बाद 6,85,000 से अधिक मतों का प्रबन्ध हो गया है। माना जा रहा है कि कांग्रेस की अगुआई वाले विपक्ष के पास अभी भी 37 फीसद वोट हैं। यानी करीब 3,67,880 वोट उनके पाले में हैं।

पुनर्विचार का आग्रह

बिहार प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. अशोक चौधरी ने जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से अपने फैसले पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया है। डॉ. अशोक नीतीश मंत्री मंडल में शिक्षामंत्री है। ऐसी ही अपील राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने भी उनसे की है।

विपक्षी दलों का प्रत्याशी भी दमदार

कांग्रेस की अगुआई में आरजेडी, तृणमूल, सीपीएम व सीपीआई, बहुजन सपा, एनसीपी, डीएमके समेत 17 दलों ने 22 जून को सर्वसम्मत बैठक के बाद पूर्व लोकसभा स्पीकर और वरिष्ठ कांग्रेसी नेता स्व. जगजीवन राम की पुत्री मीरा कुमार को राष्ट्रपति पद के लिए अपना प्रत्याशी बनाया। विपक्ष की एकता में अड़ंगा डालने वाले बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सामने धर्मसंकट वाली स्थिति है, क्योंकि मीरा भी बिहार की बेटी है। मीरा कुमार की उम्मीदवारी से बसपा तथा आप को भी भाजपा के पाले में जाने की मज़बूरी से मुक्ति मिल गई है। मीरा कुमार लोकसभा की पूर्व स्पीकर एवं बिहार से पांच बार लोकसभा सदस्य रही। वे एमए तथा एलएलबी के साथ आइएफएस में सेवाएं दे चुकी हैं। वे दलित कम्युनिटी की जाटव बिरादरी से हैं, जो संख्या बल के लिहाज से देश में सबसे अधिक है। चर्चा का विषय है कि निःसंदेह मीराकुमार श्रेष्ठतम प्रत्याशी हैं परन्तु कांग्रेस को उनमें खूबियां तब क्यों नहीं नजर आई, जब वह राष्ट्रपति पद पर उन्हें जिताने में समर्थ थी। भाजपा भी इस मुद्दे पर मुखर है कि कांग्रेस को दलितों की याद सिर्फ किसी चुनाव के वक्त ही आती है, वरना जगजीवन राम जैसे बड़े दलित नेता को प्रधानमंत्री पद पर पहुंचने से बार-बार रोका गया।

मंजिलें उन्हीं को मिलती, जिनके सपनों में जान होती है

अर्थ डायग्नोस्टिक्स के सीइओ डॉ. अरविन्दर सिंह अपने चिकित्सकीय जांच एवं रोग निदान पेशे के अलावा, आरोग्य, मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, आध्यात्मिक व साहित्य जगत में अप्रतिम स्थान रखते हैं। इन्हें 'सेवन इफेक्टिव स्टेप्स' के लिए राष्ट्रीय अवार्ड भी मिल चुका है। वे देश-विदेश में कई सेमीनारों में व्याख्यान दे चुके हैं। अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी, उर्दू सहित कई भाषाओं के अच्छे जानकार **डॉ. अरविन्दर सिंह** ने जीवन के विविध आयामों पर **'प्रत्यूष'** के साथ खुलकर बातचीत की। प्रस्तुत है उनके इन्टरव्यू की **एक्सक्लूसिव रिपोर्ट**

प्रत्यूष – आप एक डॉक्टर हैं, वैज्ञानिक हैं। कोई बात प्रयोगशाला में सिद्ध हो जाने पर ही उसे सही माना जाता है। फिर आप परमात्मा पर कैसे विश्वास करते हैं ?

अरविन्दर – देखिए कुछ विषय ऐसे हैं जो विज्ञान की परिसीमा से बाहर हैं और उसकी उन तक पहुंच नहीं है। ईश्वरीय सत्ता को हम किसी भी नाम से पुकारें वह शाश्वत है। नानक देव कह गए आदि सचु, जुगादि सचु, है भी सचु, होसि भी सचु।' इसे कोई चेलेंज नहीं कर सकता। विज्ञान केवल अपनी प्रयोगशाला में वही वस्तुएं प्रूव कर सकता है, जो पदार्थ रूप में विद्यमान है, जो अदृश्य है वह उनसे बाहर है।

प्रत्यूष – अर्थ डायग्नोस्टिक संस्थान ने चंद वर्षों में राजस्थान में सर्वोत्कृष्ट होने का अवार्ड प्राप्त कर लिया यह कैसे संभव हुआ ?

अरविन्दर – एक महान नियम है हमारी ज़िन्दगी में कि हमारे कर्मों के अनुसार ही फल मिलेगा। हमारी पूरी जिन्दगी, चाहे वह व्यावसायिक हो या व्यक्तिगत। इस नियम के आधार पर ही चलती है। हमारे संस्थान को समर्पित और कुशल व्यक्तियों की टीम मिली, जो मेरे लिए वरदान बन गई। हमने अपने संस्थान की गुडविल और क्रेडिट को कायम रखने में पूरी मेहनत की। इसी का नतीजा है कि कम समय में ही हमें वैज्ञानिक स्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर वाले मानदण्ड प्राप्त हुए। इससे हर व्यक्ति हम पर विश्वास करने लगा। हमारे ग्राहक हमारे लिए बॉस है, जिनका विश्वास संस्थान पर कायम है। उन्हीं ग्राहकों ने हमें तरक्की दिलाने में मदद की। The five DS for quality of work - Dedication, Devotion, Discipline, Discrimination & Determination. इनमें हमारी विशिष्टताएं हैं।

प्रत्यूष – क्या हर व्यक्ति को ऐसी सफलता मिल सकती है ?

अरविन्दर – वैसे तो आदमी को लक्ष्य बना कर सफलता के लिए जी-जान लगाना चाहिए, परन्तु सफलता के लिए भाग्य और चिंतन महत्त्वपूर्ण है। ज़िन्दगी एक हाइवे की तरह है जिसमें हम नहीं जानते कि अगले मोड़ पर क्या होने वाला है। Ships are safer in the harbour but they are not meant for that purpose.कई लोग यह सोचकर निराश हो जाते कि जो कुछ दूसरों की ज़िन्दगी में है, वह हमारी ज़िन्दगी में क्यों नहीं है ? ज़िन्दगी के सफ़र में सकारात्मक चिंतन के साथ निरन्तर क्रियाशील रहने की ज़रूरत है। परिस्थितियां कितनी भी बुरी प्रतीत हो, हमारे पास खुशहाल ज़िन्दगी के लिए बहुत कुछ बचा रहता है।

प्रत्यूष – मेहनत तो सभी करते हैं, सफलता हरेक को तो नहीं मिलती है ?

अरविन्दर – मैं छोटी-सी एक कहानी शेयर करता हूँ। एक गुरु ने आश्रम के लिए अपने एक शिष्य को लकड़ी काट कर लाने जंगल भेजा। वह कुल्हाड़ी लेकर पहुंचा और कठिन मेहनत करते हुए दो पेड़ काटे। दूसरे दिन उतनी ही मेहनत की परन्तु एक पेड़ ही काट पाया। और तीसरे दिन तो गज़ब हो गया, एक पेड़ भी काट नहीं पाया। शिष्य ने गुरु से पूछा, मैंने मेहनत तो पहले दिन जितनी ही की, बल्कि उससे भी ज्यादा, लेकिन परिणाम ऐसा क्यों रहा ? सद्गुरु ने कहा तूने अपनी कुल्हाड़ी को धार दी की नहीं ? उसने कहा नहीं। गुरु ने कहा, पहले दिन कुल्हाड़ी की धार प्रखर थी, दूसरे दिन कुन्द हो गई और तीसरे दिन तो बिल्कुल भोटी हो गई तो परिणाम एक जैसा कैसे होगा ? इसी तरह किसी भी फील्ड में काम करते वक्त अपने सोच, प्रयास और लक्ष्य को प्रतिदिन धार देना पड़ेगा।

Effective people don't do different things, but they do same things differently.

प्रत्यूष – आप शारीरिक रूप से थोड़े अशक्त हैं, फिर भी आप व्यवसाय, आध्यात्मिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, मेडिसिन और मेडिटेशन में 'जेक इन ऑल ट्रेड' कैसे बन पाए ?

अरविन्दर – आपने अष्टावक्र गीता पढ़ी होगी। राजा जनक ने 12 साल के शारीरिक रूप से अशक्त बालक को अपनी जिज्ञासाओं के समाधान हेतु अपनी विद्वत्परिषद् में बुलाया। जब वे आए तो बड़े-बड़े आत्मज्ञानी उन पर खिलखिलाकर हंसने लगे। उन्होंने कहा राजन तुमने तो कहा था कि यहां तत्त्वज्ञानी एकत्र हैं, लेकिन वे केवल मेरे शरीर को देख रहे हैं, मेरे ज्ञान को नहीं। ऐसा लगता है कि वे ज्ञानी नहीं चर्मकार हैं। इसके बाद उन्होंने जो कुछ सभा में कहा वह अष्टावक्र गीता में है, वह आध्यात्मिक चिंतन का खरा सोना है। आदमी की प्रज्ञा और चिंतन कैसा है, इसी पर सब निर्भर है। आदमी का मस्तिष्क और पैराशूट खुलने पर ही काम करता है।

प्रत्यूष – आपकी बुलंदियों के पीछे आपके माता-पिता का क्या रोल है ?

अरविन्दर – हर व्यक्ति के लिए माता-पिता महानतम हैं। उनका कर्ज ता-उम्र नहीं चुकाया जा सकता। मेरे माता-पिता मेरे लिए ईश्वर तुल्य हैं।

कंगूरे देखकर मुस्कुराती दुनिया वाह! वाह! कर के जाती है।
बुनियाद में पत्थर किसने जड़े, यही बात क्यों बिसराती ?

मेरा मानना है माता-पिता अपने बच्चों को तीने चीजें तो दे सकते हैं। बिना शर्त बेहिसाब प्यार, अच्छी शिक्षा और मधुर स्मृतियां, मुझे मेरे माता-पिता ने तीनों भरपूर दी है। मैं जो कुछ आज हूं, वह उन्हीं की देन है।

प्रत्यूष – आपने कुछ दिन पहले सेवन इफेक्टिव स्टेप्स जैसी नई थीम का प्रवर्तन किया, जिस पर आपको राष्ट्रीय अवार्ड भी प्राप्त हुआ। यह क्या है ?

अरविन्दर – इस थीम की मुख्य बात यह है कि परमात्मा हर व्यक्ति को सब कुछ देता है। परमात्मा हर व्यक्ति पर बेशुमार नेमतों की बरसात कर रहे हैं, परन्तु यदि किसी ने अपना ग्रहण पात्र ही उल्टा रख छोड़ा है, भला वह आप्लावित कैसे होगा ? हर व्यक्ति के मस्तिष्क में अपार चेतना भरी हुई है। इन्हें जगाने की जरूरत है। अगर सेवन इफेक्टिव स्टेप्स की बात करें तो सटीक प्रयास, प्रशिक्षण और उत्कट अभिलाषा रखते हुए इंसान वह काम कर सकता है, जो इंसान के लिए अपेक्षित है। इसे यूं समझें कि इंटेलिजेन्सी के कई रूप शरीर में मौजूद हैं, जिनका अपना महत्त्व है। फिजिकल क्यूशंट(PQ), इन्टेलिजेन्सी क्यूशंट (IQ), इमोशनल क्यूशंट(EQ) और स्प्रिचुरल क्यूशंट(SQ)। स्प्रिचुरल क्यूशंट पर ही सब आधारित है, वह सबकी धुरी है। इस लेवल तक पहुंच बना दी जाऐ तो कुछ भी असंभव नहीं।

प्रत्यूष – क्या यह सिस्टम भारतीय सप्तचक्र विधान के नजदीक है ?

अरविन्दर – देखिए ज्ञान को समझाने के अलग-अलग विधान है। 'एकोऽहम बहुधा वदंति'। बात एक ही होती है, कहने का ढंग अलग। जिसे कुण्डलिनी कहा जाता, वह मूल शक्ति है जो सोई रहती है। जब उसे मेडिटेशन या ध्यान साधना के जरिए जगाया जाता है तो वह मूलाधार चक्र से मेरूदण्ड के सहारे मणिपुर, अनाहत, विशुद्धाख्य, आज्ञाचक्र होती हुए सहस्रार चक्र तक जा पहुंचती और उसका परम सत्ता के सेटेलाइट से जुड़ाव हो जाता है। इस पद्धति में योग विद्या की क्रियाएं ज्यादा ही कठिनतम होती, जिसका लाभ आम लोग नहीं ले पाते हैं। जबकि हमारे द्वारा प्रवर्तित सेवन इफेक्टिव स्टेप्स बहुत आसान है और कुछ दिनों में व्यक्ति सिद्धहस्त बन जाता।

प्रत्यूष – आप डॉक्टरी पेशे से हैं। मेडिसिन और मेडिटेशन पर क्या कहते हैं ?

अरविन्दर – संसार में आज मेडिसिन के बिना काम ही नहीं चलता। डाइग्नेस्टिक और मेडिसिन, यूं कहना चाहिए आपातकालीन उपचार है। इसमें लापरवाही जानलेवा हो सकती है। ऐसे वक्त में आप मेडिटेशन करने नहीं बैठ सकते। हम अपने अर्थ डाइग्नेस्टिक पर एक्यूरेट और एग्जेक्ट रिजल्ट देते हैं। ग्राहक हम पर आंख मींच कर विश्वास करते हैं और हम चाहते हैं कि यह क्रम बना रहे। मेडिटेशन थोड़ा फुर्सत और आराम का काम है। मेडिसिन से आदमी ठीक तो होता ही है, परन्तु स्वस्थ बने रहने के लिए उसे मेडिटेशन की जरूरत है।

प्रत्यूष – तो आदमी को क्या करना चाहिए कि वह सुखी रहे ?

अरविन्दर – जीवन क्या है ? इंसानियत किसे कहते है ? धर्म की इयत्ताएं क्या है ? सृष्टि और सृजन का उद्दिष्ट क्या है ? क्यों हम घृणा, द्वेष और अत्याचार से पीड़ित हैं ? क्यों हमें पाप-छाया आवृत्त किए हैं ? इन अनुत्तरित प्रश्नों का हल खोजने के लिए हमें प्रयास करना होगा। इसमें सद्गुरु या समझदार शख्स की जरूरत होती है। हममें से प्रत्येक महान कार्य नहीं कर सकता। लेकिन यह निश्चित है कि हममें से प्रत्येक, छोटे-छोटे कार्य को महान तरीके से कर सकता है। **Let your character be superior to the requirement of the Job, not vice versa. No matter how great the post,you must show you are greater.** ज़िंदगी का फलसफा समझना बहुत जरूरी है जिन्दगी केवल फूलों का बिछौना नहीं है। इसमें कांटे भी हैं, जिनका आपको सामना करना है। अंधेरे-उजाले, खुशी-दु:ख, सौभाग्य-दुर्भाग्य सब आते हैं। जब हम इन्हें टाल नहीं सकते तो इनसे बचने की कोशिश से बेहतर है, इनका हौसले से स्वागत तथा हिम्मत व खुशी से सामना करें।

इरादों की इंतहा कहिए या मन के चिरागों की रोशनी
हर सफ़र हमने किया है बेनूरी और मुसीबत के बावजूद

प्रत्यूष – एक दूजे से आगे बढ़ जाने की दौड़ में इंसान परमात्मा को भूल रहा है। ईश्वर का जीवन में कितना रोल है ?

अरविन्दर – विज्ञान भी स्वीकारता है केटलिक एजेन्ट को। कुछ चीजें हैं, जिनकी मौजूदगी मात्र परिणामकारी है। जैसे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन मिल कर पानी बनता है। लेकिन दोनों को एक साथ मिलाने पर पानी नहीं बन सकता, क्योंकि केटेलिक एजेन्ट मौजूद नहीं है। बरसात में जब बादल उमड़ते-घुमड़ते तो बिजली चमकती है, उसकी वज़ह से ही हाइड्रोजन व ऑक्सीजन मिलकर पानी बन कर बरसता है। लेबोरेट्री टेस्ट में इलेक्ट्रीसिटी पानी में नहीं मिलेगी। लेकिन उसकी मौजूदगी में ही ऐसा होता है। इसी तरह जीव मात्र के लिए ईश्वरीय सत्ता की मौजूदगी जरूरी है। कोई माने या न माने अथवा उसे भुला दे, परन्तु परमात्मा कभी किसी पर अफ़सोस नहीं करता। लेकिन फिर भी वे इतना उदार हैं कि हरेक को सब कुछ देने में कंजूसी नहीं करते। इंसान को हर वक्त परमात्मा के प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए। जब हमारा छोटा सा काम कोई कर देता है तो हम उसके प्रति धन्यवाद जताते हैं, तो परमात्मा के प्रति क्यों नहीं ? 'प्रत्युष' का बहुत-बहुत आभार।

बहुत कुछ कहती हैं - ये आंखें

आंखें भी बयां करती हैं। स्त्री हो या पुरुष, आंखें उसके बारे में सारी हक़ीकत बता देती हैं। सामने स्त्री हो या पुरुष उसकी आंखों का रंग देखकर हम उसके व्यक्तित्व का अनुमान सहज लगा सकते हैं। आप भी जानिए अलग-अलग रंग की आंखों वालों के बारे में। क्या इनमें से किसी रंग की आपकी भी 'आंख' है?

भूरी आंखें

अन्य रंगों की तुलना में सबसे सामान्य रूप से पाया जाने वाला यह रंग है। भूरी आंखों वाले लोग अच्छे स्वभाव वाले और स्नेही होते। ऐसे लोग आकर्षित करने वाले, जमीन से जुड़े और घर के बाहर मजे लेने वाले होते। ये लोग अपने इरादे के पक्के यानी दृढ़-निश्चयी होते हैं। धन दौलत की परवाह बहुत कम करते और दोस्त बनाने में विश्वास रखते हैं।

ग्रे आंखें

इस तरह की आंखों की रंगत वाले शांत, बुद्धिमान और संगठित व्यक्तित्व के धनी होते। ये अपने आप में खोए रहने वाले लेकिन वफादार तथा स्पष्ट विचारधारा वाले होते हैं। अंदर से मजबूत, तर्कसंगत विचारों वाले और कुशल नेतृत्व करने वाले होते हैं।

काली आंखें

ऐसा सिर्फ माना ही नहीं जाता बल्कि ऐसा वास्तव में है कि काली आंखों वाले लोग दुर्लभ हैं। काली आंखों वाले अपने में रहस्य समेटे और भावुक होते हैं। ये लोगों पर जल्दी विश्वास नहीं करते, लेकिन यारों के यार होते हैं। ये थोड़े धैर्यहीन तो होते हैं, लेकिन बहुत आशावादी भी होते हैं। ऐसे लोगों को सबसे अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

ग्रीन आंखें

यह आंखों का सबसे ज्यादा चाहा जाने वाला रंग है। ऐसे लोग बुद्धिमान और स्व-संचालित होते हैं। रिश्तों की बात की जाए तो ये थोड़े भावुक होते हैं। दोस्त के रूप में ये मजाकिया होते हैं और हंसा-हंसाकर आपका पेट फुला सकते हैं। ये ज़िंदगी को ज़िंदादिली से जीना पसंद करते, लेकिन थोड़ा ईष्यालु स्वभाव के होते हैं।

आंखें भेदभाव नहीं करती

किसी व्यक्ति की आंखों में झांककर आप उसके इमोशंस और मूड को जान सकते हैं। हमारी गर्मजोशी, देखभाल, प्यार, उदासीनता और घृणा जैसी भावनाएं आंखों से पता चल सकती हैं। ये आंखें ही हैं जो लोगों को एक दूसरे के प्रति आकर्षित करती हैं। ये ही हमें भीड़ से अलग करती हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप किस देश या किस जातीय समूह से सम्बन्ध रखते हैं लेकिन आंखों का रंग जैसा होगा उनकी विशेषताएं समान होंगी।

ब्लू आंखें

नि:संदेह यह दुनियाभर में सबसे ज्यादा चाहा जाने वाला रंग ब्ल्यू यानी नीला है। ब्ल्यू आंखों वाले लोग सुन्दर, दयालु और स्मार्ट होते हैं। ये अपनी जांचने-परखने की कला के लिए जाने जाते हैं और जरुरत पड़ने पर मदद के लिए भी हमेशा तैयार रहते हैं। ये लोग इतने मनभावन होते हैं कि लोग इन्हें आकर्षक और फ्रेंडली मानते हैं, चाहे वे ऐसे न भी हों।

हेजल आंखें

हेजल आईज यानी हल्की भूरी आंखों वाले लोग रहस्यमयी और स्वतंत्र विचारधारा वाले होते हैं। ये लोग शिष्ट, दयालु, मृदुभाषी, आनंदित और अनेक चरित्र विशेषताओं वाले होते हैं। ये अपने आप में बहुत खोए रहते हैं, इनके साथ रहना काफी मुश्किल भरा है।

मेवाड़ बी.एस.सी. नर्सिंग कॉलेज, उदयपुर

Mewar B.Sc. Nursing College

राजस्थान सरकार /INC एवं राजस्थान युनिवर्सिटी
ऑफ हेल्थ साइंस, जयपुर से मान्यता प्राप्त

ADMISSION OPEN 2017-18

B.Sc. Nursing-4 YEAR COURSE

प्रवेश योग्यता :- 10+2 उत्तीर्ण (Science Biology)

Gen. 45%, SC/ST 40% (SC/ST/OBC (BPL) Student हेतु Scholarship सुविधा)

सन् 2016-2017 के होनहार विद्यार्थियों ने पाया सर्वश्रेष्ठ परिणाम और बढ़ाया कॉलेज का मान

प्रथम वर्ष

देवाराम चौधरी
प्रथम

मुकेश दायमा
द्वितीय

द्वितीय वर्ष

कलावती मीणा
प्रथम

राहुल गहलोत
द्वितीय

तृतीय वर्ष

ज्योति रावल
प्रथम

दीपक वैष्णव
द्वितीय

चतुर्थ वर्ष

हर्षिता रावल
प्रथम

प्रियंका पंचाल
द्वितीय

सूर्या नगर तितरड़ी, सवीना, उदयपुर (राज.)

Ph : 0294 2482253, 2482311 Mob. No. 9214915054, 9983469877

जोशी बने राजस्थान क्रिकेट संघ के कप्तान

-उमेश शर्मा

पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. सी. पी. जोशी आईपीएल के पूर्व चेयरमैन ललित मोदी के बेटे रुचिर को 5 वोटों से हरा कर राजस्थान क्रिकेट संघ के अध्यक्ष पद पर काबिज हो गए। प्रदेश के 33 जिला क्रिकेट संघों में से 19 ने जोशी का साथ दिया। इससे पहले भी 2009 से 2013 तक इस पद पर रहे, और 2015 में ललित मोदी से चुनाव में हार गए। पिछले काफी अर्से से राजस्थान में क्रिकेट की गतिविधियां सुस्त हैं और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने आरसीए पर प्रतिबंध लगा रखा है। क्रिकेट संघ को नया कप्तान मिलने से प्रदेश के खेल-प्रेमियों में उत्साह है। यूं तो ज्यादातर लोग मानते हैं कि क्रिकेट के प्रति ललित मोदी जैसा विजन किसी के पास नहीं हैं, लेकिन वित्तीय अनियमितताओं के कारण उन पर 16 मामले दर्ज हैं। उन पर आईपीएल घोटाले और मैच फिक्सिंग के आरोप भी हैं। इसी कारण उन्हें देश छोड़ लंदन भागना पड़ा। जिसकी कीमत बेटे को चुकानी पड़ी। अपने राजनैतिक कद से भी इस चुनाव में जोशी की राह आसान रही। दूसरा प्रदेश सरकार क्रिकेट में मोदी के कथित घपलों और भ्रष्टाचार के छींटे अपने तक नहीं आने देना चाहती थी। इसलिए रुचिर को संरक्षण नहीं मिला, अन्यथा तस्वीर कुछ और हो सकती थी।

क्रिकेट संघ का चुनाव जितना रोमांचक रहा, उतना ही रोचक है, डॉ. सी. पी. जोशी का सियासी सफ़र। उन्हें आमतौर पर तेज-तर्रार और तुनकमिज़ाजी कहा जाता है। लेकिन यही छवि उनके मजबूत राजनैतिक कद की बुनियाद भी है। उनके जैसे प्रखर और स्पष्ट वक्ता राष्ट्रीय स्तर पर कम ही हैं। सीएम पद से चंद कदम दूर भले ही रहे, मगर कुछ माह बाद ही भीलवाड़ा से सांसद बन कर केन्द्र में कैबिनेट मंत्री बन गए। आज वे राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस महासचिव के रूप में पूर्वोत्तर के कई राज्यों के प्रभारी हैं।

आरसीए के चुनाव में उनका सामना रुचिर मोदी से तो था ही अप्रत्यक्ष रूप से क्रिकेट के शहंशाह ललित मोदी से भी था। जिन्होंने आरसीए में नागौर जिला क्रिकेट संघ के अध्यक्ष के रूप में क्रिकेट प्रबंधन में शुरूआत की और 2015 में आरसीए अध्यक्ष बने। अपनी सूझबूझ और मजबूत माली हैसियत के बूते वे इंडियन प्रीमियर लीग के कमिश्नर, चैंपियंस लीग के अध्यक्ष तथा भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के उपाध्यक्ष भी रहे। उनके कार्यकाल में बीसीसीआई के राजस्व में अप्रत्याशित वृद्धि और आईपीएल में धनवर्षा होती रही। उन्होंने केन्द्रीय मंत्री शरद पवार और आईसीसीआई के चेयरमैन जगमोहन डालमिया तक को चुनावों में घुटने टिकवा दिए। मारवाड़ी परिवार और पैतृक सबल आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण राजस्थान की सियासत में भी खासा दखल रहा। इन्होंने राजस्थान में कारोबार भी फैलाया और कई महंगे सौदे किए। जिनकी जांच के चलते मौजूदा सरकार से अनबन हो गई।

डॉ. जोशी आरसीए कप्तान तो बन गए, परन्तु सामने चुनौतियों का पहाड़ भी है। बीसीसीआई ने राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन को कुछ समय से प्रतिबंधित कर रखा है। कर्मचारी वेतन को तरस रहे हैं। समाधान की दिशा में सबसे बड़ी बाधा ललित मोदी बन सकते हैं। वे स्वयं नागौर और रुचिर मोदी अलवर क्रिकेट संघ के मुखिया हैं। इसके अलावा आरसीए में दो प्रमुख पद, सचिव और कोषाध्यक्ष मोदी गुट के पास हैं। डॉ. सी. पी. जोशी ने पांच जून को जयपुर पहुंचकर पदभार संभालते हुए कहा कि वे सबको साथ लेकर चलेंगे और इस काम में राज्य सरकार का भी सहयोग लेंगे। बीसीसीआई से प्रतिबंध हटा कर क्रिकेट को गति प्रदान करेंगे।

राजस्थान की कांग्रेस राजनीति की दशा और दिशा में भी नई करवट देखने को मिल सकती है। डॉ. जोशी को राजस्थान की राजनीति के शीर्षस्थ पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया ने सियासत के दाव पेंच सिखाए और नाथद्वारा से 29 वर्ष की अवस्था में ही विधायक बनवाया था। 2008 में यही से हुई एक वोट से चुनावी हार ने इन्हें प्रदेश की राजनीति से राष्ट्रीय राजनीति में शिफ्ट कर दिया।

तब से वे राज्य से तकरीबन कट से गए। आरसीए अध्यक्ष बन जाने से प्रदेश की राजनीति में उनकी सक्रियता बढ़ेगी। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के गुजरात कांग्रेस का प्रभारी बनने से प्रदेश कांग्रेस में तीसरे गुट के रूप में उनके समर्थकों की हलचल बढ़ेगी और इसका केन्द्र आरसीए का आलीवन सर्वसुविधायुक्त दफ्तर होगा। कार्यभार संभालने के दौरान कांग्रेसियों की भारी संख्या में मौजूदगी ने इसका संकेत दे दिया है। पन्द्रह माह बाद विधानसभा चुनाव होने हैं। चुनाव के दौरान और बाद में क्या स्थितियां बनेगी और जोशी की उनमें क्या भूमिका होगी, अभी यह भविष्य के गर्भ में हैं। इतना तय है कि वे कांग्रेस की वापसी में अपनी भूमिका सुनिश्चित करने की पूरी कोशिश करेंगे।

समूचे प्रदेश के क्रिकेट प्रेमियों में खुशी है। मेवाड़ में विशेष उत्साह है क्योंकि उदयपुर के महाराणा प्रताप खेलगांव में अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैदान बनने और युवाओं को बेहतर अवसर मिलने की उम्मीदें हैं।

MODERN SCHOOL DUNGARPUR

(CBSE Affiliation No.: 1730188)

Ph. 02964 - 233397, 231764

WE BELIEVE IN PROVIDING QUALITY EDUCATION, WITH STRONG HUMANE VALUES

" TO GOD BE ALL THE GLORY "

We are proud of you...

Congratulations...

AISSCE 2017 CLASS XII SCIENCE TOPPERS

HIMANI BHATT — 93.4% — CHEM. 95, MATHS 95

RINU PANDYA — 92 % — MATHS 95

AANSHI SHAH — 90.8% — P.E. 100, BIO 95

NIKSHITA PANDYA — 89.8% — P.E. 100, PHY. 95, MATHS 95

AISSCE 2017 CLASS XII COMMERCE TOPPERS

HEMANK PUROHIT — 93.4 % — ECO 100, MATHS 95, B. STUDIES 95, ACCOUNTS 95

NEHA DAWDA — 90 % — B. STUDIES 95, ACCOUNTS 95

JAINAM JAIN — 85.6 %

2017 CLASS X CGPA 10

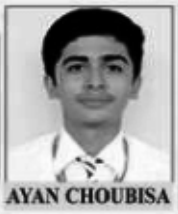

AYAN CHOUBISA

HARSHI TALATI

ISHA JOHNSON

PRANJAL CHAUHAN

MEHAK GOTHI

JEEMISHA RAWAL

AAKANSHA TEJWANI

ANUSHKA JAIN

ANUKUL SINGH

SHOBHA PATEL

KINJAL KALAL

VANDITA MEHTA

AAKANSHA DAVE

OHANA 2017

"Think Clean and go green"

"Go Greeen to keep this World Clean"

लॉकर की सही दिशा कराए धनलाभ

यदि घर अथवा फैक्ट्री/दुकान में पैसा रखने की तिजोरी या आलमारी सही दिशा में नहीं है, तो वह परिवार अथवा उद्योग धनाभाव की स्थिति से प्रभावित हो सकता है। धनागमन के लिए तिजोरी/आलमारी की सही दिशा के बारे में जानकारी दे रहे हैं, वास्तुशास्त्री ***नरेश सिंघल****।*

घर/फैक्ट्री में पैसों की आलमारी या लॉकर का सही दिशा में होना पैसे का आवागमन सुचारु बनाए रखता है। इससे उद्योग/परिवार में स्थायित्व भी आता है। लेकिन अगर लॉकर या सेफ सही जगह पर नहीं है, तो आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है।

कैसे जानें कि पैसों की आलमारी की दिशा ठीक नहीं है

■ अगर बेवजह के खर्चे आ रहे हों ■ पैसा आता हो, लेकिन तुरंत खर्च हो जाता ■ रोगोपचार अथवा दवा पर प्राय: ज्यादा खर्च होता हो ■ बचत नहीं हो पाती हो ■ ना चाहते हुए भी शॉपिंग और घूमने-फिरने में खर्च होता हो।

सेफ या लॉकर की सही दिशा

वास्तु विज्ञान में घर में इस्तेमाल होने वाली प्रत्येक वस्तु के लिए अलग-अलग दिशाएं निर्धारित हैं। खुशहाल जीवन के लिए कीमती वस्तुओं और धन को सुरक्षित रखना बेहद जरूरी है। वास्तु के अनुसार धन का क्षेत्र उत्तर दिशा है। इसका कारण यह है कि उत्तर को धन के देवता कुबेर की दिशा माना जाता है। बावजूद इसके उत्तर दिशा में धन को रखना सुरक्षित और स्थायी नहीं माना जाता है।

धन को सुरक्षित रखने के लिए ये उपाय

■ आलमारी को दक्षिण दिशा में इस तरह से रखें कि उसका मुंह उत्तर दिशा की ओर खुले। ■ अगर आलमारी का मुंह उत्तर दिशा की ओर ना खुल पाए, तो उसे पूर्व की ओर मुख करके रखें, जिससे कि खोलते समय वह पूर्व दिशा में खुले। ■ अगर आलमारी को दक्षिण में रखना संभव ना हो, तो उसे पश्चिम दिशा में रखे।

उत्तर दिशा को करें व्यवस्थित

घर में धन के आवागमन को सुनिश्चित करने के लिए यह बेहद जरूरी है कि संचित धन के क्षेत्र उत्तर को प्रभावशाली बनाया जाए। वास्तुशास्त्र में उत्तर दिशा को नए अवसरों की प्राप्ति और संचित धन का क्षेत्र माना गया है। उत्तर दिशा को जोड़कर इसके प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है। जरूरी नहीं है कि इसके लिए आप कोई विशेष उपाय करें। दीवार के रंगों और पर्दों में दिशा के अनुकूल बदलाव करके भी आप इसे व्यस्थित कर सकते हैं। जल तत्व उत्तर दिशा का प्रतिनिधि है। इसलिए यह बेहद जरूरी है कि धन का प्रवाह बनाए रखने के लिए आपके घर में जल तत्व उत्तर दिशा में ही हो। इसके अलावा एक बात का ध्यान और रखें कि उत्तर दिशा साफ-सुथरी होनी चाहिए।

पाठक पीठ

नासूर बनती कश्मीर समस्या

'प्रत्यूष' के पिछले अंक में यह सवाल ठीक उठाया गया कि 'कश्मीर की उलझी डोर सुलझती क्यों नहीं?' लेकिन सवाल तो आजादी के ठीक बाद से खड़ा है। स्वाधीनता के बाद भारत इस मामले में कूटनीतिक तौर पर बचाव की मुद्रा में मुजरिम की तरह खड़ा रहा। रीढ़विहीन सियासत पेंडुलम की तरह झूलती रही। कश्मीर भारत का मुकुट जो है। नक्शे में तो दिखाई देता, परन्तु ज़मीन पर नज़र नहीं आता। यह सही है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक रहने वाला हर व्यक्ति हमारा अपना है। परन्तु जब भारतीय सेना और सुरक्षा बलों पर पत्थरबाजी और हमला होता है तो सरकार को हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठना चाहिए।

धर्मपाल चौधरी, समाजसेवी

विकास के नाम पर पर्यावरण की हत्या

जून के अंक में 'ज़िंदगी लीलता प्रदूषण' शीर्षक आलेख सच्चाई की तस्वीर है। जब जीवन ही नहीं बचेगा तब विकास की मंजिलों को पाने का अर्थ ही क्या रह जाएगा? सामने आते शिकारी को देखकर शुतूरमुर्ग अपनी गर्दन रेत में छिपा लेता है। क्या वह अपने को बचा पाएगा? ऐसे ही विकास शिखरों को छूने और पर्यावरण का विनाश करने के बाद इंसान सुखी रह पाएगा? विकास तो हो परन्तु ज़िंदगी को लीलने वाले प्रदूषण का समय रहते उपचार भी हो। प्रकृति अपने साथ हुए अत्याचार कदापि सहन नहीं करती।

हेमशंकर माली,
सीविल इंजीनियर

निष्पक्ष विश्लेषण

'प्रत्यूष' के जून अंक के मध्य पृष्ठों पर कांग्रेस की स्थिति का विश्लेषण निष्पक्ष लगा। कांग्रेस आज भी देश की कुल आबादी के बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करती है। सोनिया गांधी की रुग्णता के चलते कतिपय बड़बोले नेताओं ने ही पार्टी की जड़ों में एसिड डालने का काम किया है। कांग्रेस राज में हुए घोटालों से भी जनता नाराज हुई और भाजपा सत्ता में आई, लेकिन अब जनता माफियाओं की इस पार्टी के राज से भी तौबा करने लगी है। कांग्रेस फिर सत्ता में लौटेंगी। **दीपक बिलोची**, होटल व्यवसायी

हवा, दवा, शिक्षा और आवास

पिछले अंक में चार ज्वलंत मुद्दों पर बेबाकी से विश्लेषण मन को भाया। आज न साफ हवा नसीब है, न सस्ती दवा का सपना पूरा हो रहा। शिक्षा व्यवस्था की साख दांव पर है। इंसान को आवास उपलब्ध होने के जल्दी आसार नजर नहीं आ रहे। इस अंक में इन चारों समस्याओं का अच्छा विश्लेषण हुआ है। प्रत्यूष से अपेक्षा है कि आम लोगों से सम्बन्धित ऐसी ही समस्याओं पर फोकस ज्यादा हो। आज किसान आन्दोलित हैं। पढ़े-लिखे युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहा। नोटबंदी से उद्योग-धंधे संकटग्रस्त हैं।

लक्ष्मणदास बजाज, समाजसेवी

NOBLE
INTERNATIONAL SCHOOL

An English Medium Co-educational School

Points of Distinction

1. 100% Excellent result in X Board Exams with Distinction.
2. Every year 5-8 students are selected for "GARGI AWARD".
3. Proficient teachers from English medium background.
4. C.C.E. exam pattern.
5. Magnificent infrastructure with airy & green environment.
6. Well versed Computer lab & library.
7. Enabling child to speak fluent English by providing an English speaking environment.
8. Daily home work classes.
9. Regular workshops for Drama, Poetry, Story writing, Music, Dance, Fine Arts and craft to unfold the creative aspect of the student.
10. Psychologically designed personality enhancement programs.
11. Emphasis on mental & physical health through yoga, meditation and sports on regular basis.
12. Monthly parents teachers meeting.
13. Regular medical checkups.
14. Safe & secure transportation facilities.

ADMISSIONS OPEN

Playgroup to Class 10

Special Discount For girl Child

2, SAGAR DARSHAN, RANI ROAD, UDAIPUR (Raj.)

FOR ADMISSIONS CONTACT: 0294-2430930 **Email id :** nisudr2016@gmail.com

VISIT: www.nisudaipur.com

Yogesh Chandra Sanadhya

Smt. Anita Sanadhya

With Best Compliments

Tanmay Sanadhya
(Visma Wale)
Director
Mo. : 094141-62444

Tanmaya Sanadhya

Shree Jagdamba
Marmo Pvt. Ltd.

Exporter, Dealer & Supplier

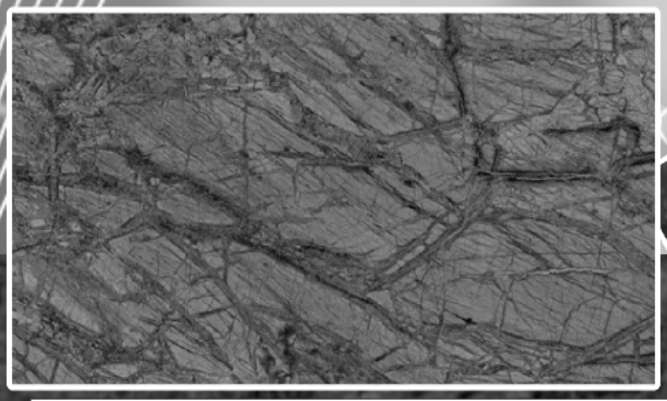

Residence : 12, Shrinath Colony, Pulan, Near Fatehpura, Udaipur (Raj.)
Factory : Opp. Bank of Baroda, N.H.8, Sukher, Udaipur (Raj.)
Fax : +91-294-2441244 (O), Tel : +91-294-2441444 (R)
E-mail : tanmay.sanadhya@gmail.com
Website : www.sjmarmo.com

Special Feature :
Export Quality Green Marbles

Product Specializations :
Green Marble Slabe & Tiles

Sister Concerns

- JAI SHREE INDUSTRIES, SUKHER
- KRISHNA INDUSTRIES, SUKHER

॥ श्रद्धांजलि ॥

स्वर्गीय प्रोफेसर ठाकुर रामभंवर सिंह जी राणावत

जन्म
28.10.1935

स्वर्गवास
30.5.1993

''कर्मण्ये वाधिकारस्ते, मा फलेषुकदाचनः''

24वीं पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि

आपके सान्निध्य की मधुर स्मृतियां संजोए समस्त परिवारजन

■ राणावत पोल्ट्री एण्ड पोल्ट्री ब्रिडिंग फार्म्स, फोन :-2460559
■ प्रोफेसर श्रीराम मार्बल्स, उदयपुर, फोनः-2460576
■ सिंह फूड प्लाजा

अचार को रखिए ऐसे सुरक्षित

इन दिनों घरों में गृहणियां खट्टा-मीठा अचार तैयार करने की जुगत में लगी हैं, यहां अचार को सुरक्षित रखने के लिए कुछ महत्वपूर्ण टिप्स दे रही हैं - रेणु शर्मा

- अचार को बोतल में स्टोर करने से पहले इस बात की तस्दीक कर लें कि शीशी की बोतल या चीनी की बरनी पूरी तरह से सूखी हो। अब दो से तीन चम्मच विनिगर बोतल या बरनी में डालें और बोतल को अच्छी तरह से हिलाएं। ऐसा करने से विनिगर पूरी बोतल में फैल जाएगा और अचार में फंगस लगने का डर पूरी तरह से खत्म हो जाएगा।
- स्वादिष्ट अचार बनाना चाहती हैं तो तेल की क्वालिटी और मात्रा के साथ कभी भी समझौता न करें। अचार खराब न हो, इसके लिए जरूरी है कि अचार की ऊपरी परत में सिर्फ सरसों का शुद्ध तेल ही हो।
- अचार बनाते समय कभी भी हाथ से अचार को न मिलाएं। अचार को एकमेक करने के लिए लकड़ी की सूखी चम्मच का इस्तेमाल करें।
- अचार में तेल डालने के बाद चम्मच से अचार को मिलाएं, ताकि अचार बोतल में नीचे की ओर चला जाए और ऊपर सिर्फ तेल की परत दिखाई दे।
- अगर आपके अचार में फंगस लग गया है तो सूखी चम्मच की मदद से अचार की ऊपर परत को निकालकर फेंक दें और अचार को हल्का गर्म कर लें। अब शुद्ध सरसों के तेल को उबालकर ठंडा कर लें और अचार में डाल दें। मर्तबान का ढक्कन खोलकर उसमें एक साफ व सूखा सूती कपड़ा बांधें और कुछ दिन धूप में जरूरत रखें।
- अचार से फंगस हटाने के लिए उसमें एसेटिक एसिड की दस-बारह बूंदें भी डाली जा सकती हैं।
- अचार को सुरक्षित रखने के लिए सरसों के तेल में नमक मिलाकर उसे गर्म करें और गर्म तेल में सूखी कपड़े को भिगोकर उससे मर्तबान को भीतर से पोंछ दें।
- अचार रखने के लिए बोतल को कीटाणुरहित बनाना होगा। इसके लिए कुकर में कुछ बनाने के बाद गैस बंद करके कुकर की सीटी के ऊपर बोतल को रख दें और भाप की बोतल में जाने दें। इससे बोतल पूरी तरह से कीटाणुरहित हो जाएगी।
- अचार को फंगस से बचाने के लिए अचार बोतल में डालने के बाद बोतल के मुंह पर नमक रगड़ दें।

जितना पुराना, उतना स्वादिष्ट

अचार जितना पुराना होगा, वह उतना ही ज्यादा स्वादिष्ट होगा। अगर अचार को सही तरीके से स्टोर करके रखें तो वह न सिर्फ कई सालों तक खाने योग्य रहेगा, बल्कि उसका स्वाद भी बेहतर होता चला जाएगा। अचार को खराब होने से बचाने के लिए कुछ बातों को हमेशा ध्यान में रखना होगा। हमेशा शीशा या चीनी मिट्टी के बने मर्तबान में ही अचार बना कर रखें। अचार बनाने और उसे उपयोग में लाने के दौरान भी अचार को नमी से दूर रखें। गीली चम्मच का इस्तेमाल अचार निकालने के लिए कभी भी नहीं करें। कभी भी अचार के मर्तबान से बार-बार निकालकर अचार इस्तेमाल में न लाएं। बेहतर होगा कि आप किसी छोटी शीशी में अचार निकालने के बाद उसे नियमित इस्तेमाल में लाएं। इससे पूरा अचार एक बार में खराब होने का डर जड़ से खत्म हो जाएगा।

सरसों का तेल : स्वादिष्ट अचार

हमारे देश में खासतौर पर उत्तर भारत के अमूमन हर घर में खाना पकाने में आज भी सरसों के तेल का इस्तेमाल होता है। जहां कुछ खास डिश सिर्फ सरसों के तेल में ही पकाई जाती हैं, वहीं इसके तीखे स्वाद और तेज खुशबू की वजह से अचार बनाने के लिए सबसे उपयुक्त तेल माना जाता है। गर्मी के मौसम में उत्तर भारत के अमूमन हर घर में आम, नींबू, मिर्च और कटहल आदि का अचार बनाया जाता है। इतनी मेहनत से बनाए गए इन अचारों को सालोंसाल स्वादिष्ट और खाने योग्य बनाए रखने का काम मुख्य रूप से शुद्ध सरसों का तेल ही करता है। अगर सरसों के तेल की क्वालिटी अच्छी न हो तो अचार बनाने की सारी मेहनत बेकार हो जीत है। अगर आप यह समझ नहीं पा रही हैं कि सरसों के तेल की शुद्धता कैसे मापी जाए तो उसके तीखे स्वाद पर ध्यान दें। सरसों का तेल जितना तीखा और तेज खुशबू वाला होगा, उतना ही ज्यादा शुद्ध होगा। सरसों के तेल के इस तीखे फ्लेवर के लिए एआईटीसी नाम का रंगहीन तेल जिम्मेदार होता है। इसके कोल्ड-प्रेस तकनीक की मदद से निकाला जाता है। एआईटीसी एक तरह का नैचुरल ऑयल होता है, जो सरसों के तेल को सेहतमंद बनाने में अहम भूमिका निभाता है।

श्रीनाथ बी.एस.सी. कॉलेज ऑफ नर्सिंग

राजस्थान नर्सिंग काउन्सिल (R.N.C.)
इण्डियन नर्सिंग काउन्सिल (I.N.C.)
एवं (राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त)

साक्षी प्लाजा, भीलवाडा रोड, राजसमन्द

फोन : 9982217777, 02952–230559 ,फेक्स न.–02952–231559

प्रवेश प्रारंभ 2017–18

B.Sc. Nursing (4 year Course)

प्रवेश योग्यता :- 10+2 उत्तीर्ण (Biology) Gen. 45%, SC/ST 40%

G.N.M. 2017-2018

छात्र छात्राओं के लिये अलग हॉस्टल की सुविधा, सभी सुविधायुक्त प्रयोगशालाएं, पूर्णतः योग्य अध्यापक

सत्र 2016-17 के होनहार विद्यार्थियों ने पाया सर्वश्रेष्ठ परिणाम, बढ़ाया कॉलेज का मान

प्रथम वर्ष

शिखा चौहान
प्रथम

गजेन्द्र कुमार सालवी
द्वितीय

बरफीना बानू
तृतीय

द्वितीय वर्ष

मीना माली
प्रथम

कीर्ति शर्मा
द्वितीय

ज्योति यादव
तृतीय

तृतीय वर्ष

ओमप्रका वसीटा
प्रथम

भानू कुमावत
द्वितीय

चंचल जायसवाल
तृतीय

चतुर्थ वर्ष

निर्मला कुमावत
प्रथम

संध्या रानी
द्वितीय

जितेन्द्र गर्ग
तृतीय

वीणा कुमारी शर्मा, निदेशक — 9414050622

पंकज कुमार शर्मा, निदेशक — 9414166737

भविष्यफल जुलाई 2017

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

राशि के स्वामी का अस्त होकर नीच राशि में भ्रमण करना दुविधापूर्ण एवं मन की अशान्ति का कारण बनेगा, माह का पूर्वार्द्ध ठीक है परन्तु उत्तरार्द्ध में सावधानी बरतें, लेन-देन में सावधानी ज़रूरी है। स्वास्थ्य सामान्य, सन्तान की ओर से हर्ष, कार्य क्षेत्र से खिन्नता रहेगी, आय पक्ष के भी बाधित रहने की संभावना है।

वृषभ

ऊर्जा से भरपूर रहेंगे, उपयोगी कार्यों में खर्च रहेगा, आपके कार्यों में जीवन साथी के हस्तक्षेप से परेशानियां बढ़ सकती हैं, आय पक्ष ठीक रहेगा, राजकीय कर्मचारियों के स्थान परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएं हैं, पुराने पैतृक मामले सुलझ सकते हैं, कार्य क्षेत्र में कटु अनुभव सम्भव।

मिथुन

परिस्थितियों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं, अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण विवादों में फंस सकते हैं, अधिकारों में कटौती के कारण खिन्नता बढ़ेगी, व्यापारिक गतिविधियां संतोषप्रद रहे, माह का उत्तरार्द्ध आय पक्ष को प्रभावित करेगा, स्वास्थ्य अनुकूल, जीवन साथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

कर्क

लम्बित कार्य पूर्ण होने के आसार, आय उत्तम, माह के उत्तरार्द्ध में कर्म क्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं, अपने से बड़े एवं उच्च पदाधिकारियों के परामर्श से ही कार्य करें, सफल होंगे। सन्तान पक्ष मध्यम, स्वास्थ्य श्रेष्ठ, भौतिक सुखों में वृद्धि।

सिंह

रचनात्मक कार्यों की ओर रूझान एवं सफल भी होंगे। माह का पूर्वार्द्ध अच्छा है। परिजनों व आपके विचारों में समन्वय आगे के लिए लाभकारी सिद्ध होगा। जीवन साथी से तालमेल में कमी, अप्रत्याशित खर्च संभव, स्वास्थ्य में गिरावट से खिन्नता, सन्तान पक्ष मध्यम, आय सामान्य।

कन्या

राशि के स्वामी का उदित होना, नई उमंगों का संचार करेगा, उत्साह में वृद्धि होगी, कार्य क्षेत्र से अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे, भाग्य का पूर्ण सहयोग रहेगा, जीवन साथी के सहयोग से कुछ नया कर सकते हैं, आय के नये स्रोत बन सकते हैं, संतान पक्ष से परेशानी।

तुला

परिवार में कोई मांगलिक कार्य होने की संभावनाएं रहेगी, स्वास्थ्य सामान्य रहे, कर्म क्षेत्र में कुछ नया हो सकता है, व्यवसाय में अपने से बड़ों का सहयोग प्राप्त होगा, 26 जुलाई तक आवश्यक कार्य सम्पादित कर लेवे, पूर्ण लाभ की सम्भावनाएं रहेगी, स्थानान्तरण के योग बनेंगे, सन्तान पक्ष मध्यम।

वृश्चिक

अत्यधिक उत्साह एवं ऊर्जा के कारण अभिमानी हो सकते हैं, अपने से बड़ों को दरकिनार भी कर सकते हैं, संयम से काम लें, मेहनत के अच्छे परिणाम मिलेंगे, आमोद-प्रमोद में समय व्यतीत होगा, भाई-बहिनों में मनमुटाव दूर होंगे, शारीरिक परेशानियां रहेंगी।

धनु

व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र की गतिविधियां सुकून देंगी एवं उनका सकारात्मक फल प्राप्त होगा। कार्य भार की अधिकता रहेगी, मान-सम्मान में वृद्धि, सम्मानित भी हो सकते हैं। प्रतिद्वन्द्वी परास्त होंगे, आय पक्ष मजबूत, जीवन साथी के स्वास्थ्य में नरमी से चिंता रहेगी, सन्तान पक्ष सामान्य रहेगा।

मकर

विरोधी एवं शत्रु पूर्ण रूप से परास्त होंगे, कानूनी विवादें से छुटकारा मिलेगा, प्रतिभा में वृद्धि होगी। सृजनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी, नये सम्पर्कों से लाभ मिलेगा, सन्तान की ओर से शुभ समाचार मिलेगा, आय पक्ष बाधित रह सकता है, पुरुषार्थ के अनुरूप फल प्राप्ति में संशय और स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

कुम्भ

राशि स्वामी के वक्री होने से बनते कामों में बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं, कार्य क्षेत्र में तालमेल का अभाव रहेगा, परिवार में अचानक विवाद से कठोर निर्णय लेना पड़ सकता है, स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव, संतान पक्ष से हर्ष, दाम्पत्य जीवन में कुछ समय तक खिन्नता रहेगी।

मीन

अच्छी सोच से नये दायित्व का शुभारम्भ होगा, अपने परिवार जनों एवं सहकर्मियों से प्रशंसा प्राप्त होगी, कार्य क्षेत्र एवं व्यापारिक कार्यकलापों में सफलता, पुरुषार्थ पर ध्यान दें, भाग्य के भरोसे नहीं रहें। शत्रु पक्ष प्रबल होगा, किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं, संतान पक्ष से असन्तोष रहेगा।

प्रत्यूष समाचार

प्रिया व मेहता वेदान्ता समूह में निदेशक

प्रिया अग्रवाल

अमन मेहता

उदयपुर। वेदान्ता समूह के चेयरमैन अनिल अग्रवाल की सुपुत्री प्रिया अग्रवाल वेदान्ता लिमिटेड के निदेशक मण्डल में नॉन-एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर तथ अमन मेहता को नॉन-एग्जिक्यूटिव इण्डिपेन्डेन्ट डायरेक्टर नियुक्त किया गया है। प्रिया ने यू.के. वारविक यूनिवर्सिटी से बिजनेस मेनेजमैन्ट के साथ बी.एस.सी. साईक्लॉजी में उपाधि हासिल की है। अमन मेहता ने दिल्ली विश्वविद्यालय से इकोनॉमिक्स में स्नातक की डिग्री हासिल की है। उन्हें वर्ष 2004 में एचएसबीसी समूह से चीफ एग्जिक्यूटिव ऑफिसर पद से सेवानिवृत्ति के पश्चात् विभिन्न उच्च पदों पर कार्य करने का 39 वर्ष का अनुभव है।

फिल्म प्रोडक्शन हाउस एवं इवेन्ट कम्पनी का उद्घाटन

लोगो का विमोचन करती निवृत्ति कुमारी मेवाड़ एवं अन्य।

उदयपुर। फिल्म निर्माण क्षेत्र में उदयपुर के नाम को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभारने के लिए सौ फीट रोड स्थित अशोका पैलेस में शहर की प्रथम एक स्क्वायर प्रोडक्शन हाउस एवं इवेन्ट कम्पनी के लोगो का श्रीमती निवृत्ति कुमारी मेवाड़ ने विमोचन किया।

प्रोपराइटर मुकेश वाधवानी ने बताया कि लेकसिटी की सुन्दरता को विश्व स्तर पर दिखाने हेतु हॉलीवुड फिल्म के निर्देशकों एवं कलाकारों को यहां लाकर शहर से परिचय कराने का प्रयास किया जाएगा। इसके अलावा यह प्रयास भी रहेगा कि इस प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले बनने वाली फिल्म को ऑस्कर अवार्ड भी मिले।

कम्पनी का प्रयास रहेगा कि लेकसिटी के टेलेन्टेड यूथ को राष्ट्रीय स्तर पर एक नई दिशा दिलाई जाए। शहर को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वेडिंग डेस्टीनेशन के रूप में पहचान दिलाने का कार्य भी किया जाएगा, ताकि स्थानीय लोगों को रोजगार मिल सके।

जिम्नास्टिक्स अकादमी का उद्घाटन

अकादमी के उद्घाटन अवसर पर आभा शर्मा, अलका शर्मा, अनिल शर्मा, दीपक शर्मा एवं सुरेखा राणा।

उदयपुर। रॉकवुड्स हाई स्कूल में द स्पोर्ट्स गुरुकुल और रॉकवुड्स हाई स्कूल के साझे में जिम्नास्टिक्स अकादमी का उद्घाटन मुख्य अतिथि आभा शर्मा और अनिल शर्मा ने किया। विशिष्ट अतिथि अलका शर्मा और दीपक शर्मा थे। अकादमी में प्रतिभागियों को जिम्नास्टिक्स की बारीकियां सिखाई जाएगी। हेड कोच सुरेखा राणा ने बताया कि इसमें किसी भी स्कूल या कॉलेज के छात्र प्रवेश ले सकते हैं।

प्रो. साधना बनी डीन

उदयपुर। सुखाड़िया विश्वविद्यालय आर्ट्स कॉलेज में प्रो. साधना कोठारी ने डीन का पदभार ग्रहण किया। निवर्तमान डीन प्रो. फरीदा शाह 31 मई को रिटायर हो गई। साधना कोठारी भूगोल विभाग की वरिष्ठ प्रोफेसर हैं। वे विश्वविद्यालय के बोर्ड और कमेटियों में सदस्य रहने के साथ राजस्थान भूगोल परिषद् की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं।

डूंगरपुर को फिर प्रथम ओडीएफ का सम्मान

केन्द्रीय मंत्री वेंकैया नायडू एवं मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे से प्रथम ओडीएफ का सम्मान प्राप्त करते के. के. गुप्ता एवं दिलीप गुप्ता

जयपुर। स्वच्छ भारत मिशन के तहत डूंगरपुर नगर परिषद् ने प्रदेश में एक बार फिर प्रथम ओडीएफ का सम्मान प्राप्त किया है। मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय शहरी विकास मंत्री वेंकैया नायडू, मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, स्वायत्त शासन मंत्री श्रीचंद कृपलानी एवं पीएचईडी मंत्री सुरेन्द्र गोयल ने सभापति के. के. गुप्ता तथा आयुक्त दिलीप गुप्ता को स्वच्छता प्रमाण पत्र सौंपा। उल्लेखनीय है कि पूर्व में भी प्रथम ओडीएफ का सम्मान प्रदेशभर में केवल डूंगरपुर निकाय के नाम हुआ था और एक बार फिर केन्द्र की क्वालिटी कंट्रोल ऑफ इंडिया टीक के शहरी स्वच्छा सर्वेक्षण में यह हक डूंगरपुर के खाते में दर्ज हो गया।

अपराजेय प्रताप का विमोचन

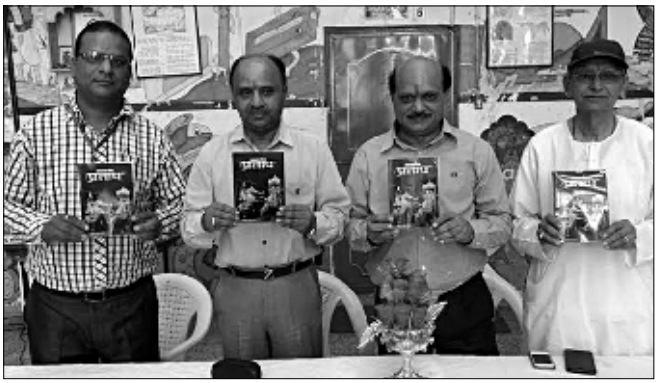

पुस्तक का विमोचन करते यदुवेन्द्र कुमार, मुकेश श्रीमाली एवं डॉ. लोकेश जैन।

उदयपुर। पद्मावती साहित्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित एवं इतिहासकार नारायण लाल शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक 'अपराजेय प्रताप' का विमाचेन द स्कॉलर्स एरिना में आर.एस.एम.एम. के वरिष्ठ अधिकारी यदुवेन्द्र कुमार एवं शिक्षाविद् मुकेश श्रीमाली ने किया। इस अवसर पर संस्थान के प्रशासक डॉ. लोकेश जैन ने लेखक शर्मा व अतिथियों का उपरणा एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया।

नन्हीं छांव कार्यक्रम

कार्यक्रम में सुषमा कुमावत, डॉ. स्वीटी छाबड़ा, गुरविंदर सिंह एवं अन्य।

उदयपुर। फोर्टिस जेके हॉस्पीटल और नारी चेतना संस्थान के साझे में एक सप्ताह का मेवाड़ की नन्ही छांव कार्यक्रम शोभागपुरा स्थित हॉस्पीटल में सम्पन्न हुआ। महिला आयोग की सदस्य सुषमा कुमावत, दृष्टि फाउंडेशन की चेयरमैन स्वीटी छाबड़ा, हॉस्पिटल के फैसिलिटी डायरेक्टर गुरविंदर सिंह ने कार्यक्रम की शुरुआत की। इसमें 70 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और महिलाओं ने भाग लिया।

नरेश व डॉ. किरण चेयरमैन

उदयपुर। ख्यातनाम सीए नरेश माहेश्वरी एवं भाजपा नेता डॉ. किरण जैन को लायन्स क्लब में रीजन चेयरमैन नियुक्त किया गया है। सीए नरेश माहेश्वरी को लायंस क्लब 323ई-2 का रीजन चेयरमैन नियुक्त किया गया है। उनके अधीन 9 जिलों के क्लब कार्य करेंगे। माहेश्वरी इससे पूर्व भी क्लब में अध्यक्ष, सचिव और जोन चेयरमैन रह चुके हैं। वे फैडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एण्ड इंडस्ट्रीज(फोर्टी) उदयपुर के सचिव भी हैं। डिस्ट्रीक्ट गवर्नर सतीश बसंल ने उदयपुर महिला समृद्धि बैंक की अध्यक्ष एवं पूर्व पार्षद डॉ. किरण जैन को लायन्स क्लब 323ई-2 के रीजन 7 का चेयरमैन नियुक्त किया है। इनके अधीन भी 9 जिलों के क्लब कार्य करेंगे।

नरेश माहेश्वरी

डॉ. किरण जैन

पिंकसिटी अभिरूचि शिविर

उद्घाटन करते जगदीश चन्द्र, एल. सी. भारतीय एवं एल. एल. शर्मा।

जयपुर। पिंकसिटी प्रेस क्लब जयपुर द्वारा 1 से 15 जून तक पत्रकारों के बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन अभिरूचि शिविर लगाया गया। जिसमें नृत्य, अभिनय, मार्शल आर्ट, मेहंदी, रंगोली, फोटोग्राफी, योग, ड्राइंग-पेंटिंग्स आदि का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर का उद्घाटन जी-न्यूज के सीईओ जगदीश चन्द्र एवं वरिष्ठ पत्रकार एल. सी. भारतीय ने किया। क्लब अध्यक्ष एल. एल. शर्मा व महासचिव मुकेश मीणा ने भी विचार व्यक्त किए।

अर्चना ग्रुप ने उतारे नए उत्पाद

चेयरमैन राजेन्द्र पालीवाल एवं निदेशक सौरभ पालीवाल अर्चना ग्रुप के नए उत्पाद की जानकारी देते हुए।

उदयपुर/प्रब्यू। शहर की 70 वर्ष पुरानी एवं रूपलाल पालीवाल द्वारा स्थापित नवभारत इण्डस्ट्रीज को उनके पुत्र व पौत्र नई ऊंचाई देते हुए सर्वाधिक लोकप्रिय 'अर्चना अगरबत्ती' के साथ अब बाजार में गृहोपयोगी अन्य उत्पाद भी बाजार में लाए हैं। इन उत्पादों में एडवांस्ड वाशिंग पाउडर, अर्चना एक्टिव प्लस, एक्टिव डिटर्जेंट केक व अर्चना धनलक्ष्मी गोल्ड टी शामिल हैं। ग्रुप के चेयरमैन राजेन्द्र पालीवाल ने बताया कि नए उत्पादों को काफी सराहना मिल रही है। निदेशक सौरभ पालीवाल ने कहा कि कम्पनी ने इको फ्रेंडली और मच्छररोधी अगरबत्तियां भी बाजार में उतारी हैं, जो एक नया प्रयास है। नमन इंडस्ट्रीज की निदेशिका नेहा पालीवाल की देखरेख में पचास से अधिक महिलाओं को रोजगार प्रदान किया जा रहा है, जहां मशीन बत्ती, धूप बत्ती, लोबान, गूगल आदि का निर्माण होता है। निदेशक लोकेन्द्र पालीवाल ने बताया कि प्रत्येक बैच की लेबोरेट्री टेस्ट के बाद ही माल की पैकिंग होती है जिससे उत्पाद की क्वालिटी बनी रहती है। अर्चना सेवा संस्थान और अर्चना चेरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से पूर्व निदेशक स्व. सुरेश पालीवाल की सोच के अनुरूप सामाजिक सरोकार के कार्य भी किए जा रहे हैं।

मूमल व हार्दवी ने किया गौरवान्वित

उदयपुर। उदयपुर की मूमल जैन ने सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकण्डरी एज्यूकेशन की सत्र 2016-17 की कक्षा XII की परीक्षा में 96.6 प्रतिशत अंक अर्जित किए हैं। उन्होंने जीव विज्ञान वर्ग में कुल 500 में 483 अंक हासिल किए। एम. के. जैन क्लासेज उदयपुर की मेधावी छात्रा मूमल इससे पूर्व स्टेट टेलेन्ट साइन्स परीक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त करने के साथ ही किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना व नेशनल टेलेन्ट सर्च परीक्षा में भी सफलता हासिल कर चुकी है। मूमल ने कक्षा XI से ही नियमित रूप से 6 से 7 घण्टे तथा परीक्षा के दिनों में 14-16 घण्टे पढ़ाई करते हुए यह सफलता अर्जित की। मूमूल ने इन सफलताओं के बाद ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एम्स) की एमबीबीएस एन्ट्रेन्स परीक्षा 2017 में भी सफलता अर्जित की है। इसी तरह मेनारिया गेस्ट हाउस के अम्बालाल मेनारिया की सुपौत्री हार्दवी(पुत्री जयप्रकाश मेनारिया) ने सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन की 10वीं की परीक्षा में 10 सीजीपीए प्राप्त कर परिवार को गौरवान्वित किया है।

मूमल

हार्दवी

जजा मोर्चा के उपाध्यक्ष मालवीया का भव्य स्वागत

बांसवाड़ा। बागीदौरा विधायक महेन्द्रजीत सिंह मालवीया के कांग्रेस के राष्ट्रीय जनजाति मोर्चे के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनने के बाद प्रथम बार जिले में आगमन पर भव्य स्वागत किया गया। पालोदा, गनोड़ा, चिड़ियावासा, बड़गांव आदि गांवों में भी मालवीया का भव्य स्वागत किया गया। लसाड़ा से बांसवाड़ा तक स्वागत रैली में लगभग 300 वाहन चल रहे थे। पालोदा में मालवीया ने पूर्व मुख्यमंत्री स्व. हरिदेव जोशी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

महेन्द्रजीत सिंह मालवीया

बाद में कांग्रेस कार्यालय के बाहर मालवीया ने अभिनंदन समारोह में कहा कि संगठन ने उन्हें जो दायित्व सौंपा है उसे वे पूरी निष्ठा के साथ निभायेंगे। इससे पूर्व उदयपुर रेलवे स्टेशन पर इंटक नेता जगदीश राज श्रीमाली, अशोक तम्बोली, शहर कांग्रेस अध्यक्ष गोपाल कृष्ण शर्मा आदि ने मालवीया का स्वागत किया।

अरुण अणुव्रत समिति के अध्यक्ष

उदयपुर। अणुव्रत समिति, उदयपुर की साधारण सभा की बैठक में सर्वसम्मति से 2017-19 के लिए पूर्व निदेशक खान एवं भू-विज्ञान विभाग अरुण कोठारी को अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी दी गई। साधारण सभा ने नई कार्यकारिणी बनाने के लिए नवनिर्वाचित अध्यक्ष को अधिकृत किया। नए अध्यक्ष का चुनाव अणुव्रत महासमिति दिल्ली के पर्यवेक्षक एवं चुनाव अधिकारी गजेन्द्र बोहरा, अणुव्रत समिति, उदयपुर के संरक्षक गणेश डागलिया, तेरापंथ सभा उदयपुर के अध्यक्ष सूर्य प्रकाश मेहता एवं सवाई लाल पोखरना की उपस्थिति में हुए।

नवकार मेटल्स का शुभारंभ

शोरूम का उद्घाटन करते यूआईटी चेयरमैन रविन्द्र श्रीमाली व उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष पारस सिंघवी, महावीर जैन, विनोद जैन, सुमतिलाल दुदावत एवं अन्य।

उदयपुर। नवकार मेटल्स का अक्षय तृतीया 29 अप्रेल को सूरजपोल-कोलीवाड़ा में नगर विकास प्रन्यास के अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली व उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष पारस सिंघवी के सान्निध्य में भव्य शुभारंभ हुआ।

फर्म के महावीर जैन व विनोद जैन ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर श्रीमती पुष्पा देवी, रीना जैन, प्रभा-विपिन जैन, किरण-विजय जैन आदि भी उपस्थित थे।

पूर्णिमा महोत्सव में तीर्थयात्रियों का सम्मान

उदयपुर। जयश्रीराम-जय श्री कृष्ण सेवा समिति के नवानिया स्थित प्रभु कृपा आश्रम में 9 जून को 151वां पूर्णिमा महोत्सव पं. परमानंद मेनारिया के सान्निध्य में सुन्दरकाण्ड पाठ के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर चारधाम यात्रा से लौटे पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी व सामाजिक कार्यकर्त्ता भरत कुमावत को 'भक्ति गौरव' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व देवस्थान आयुक्त शांतिलाल नागदा व विशिष्ट अतिथि डॉ. के. एस. मोगरा, डॉ. ओ. पी. महात्मा व विजय सिंह कच्छावा थे। आश्रम संस्थापक पन्नालाल मेनारिया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए गौशाला स्थापना की जानकारी दी। इस अवरस पर दिनेश खिंची, ईश्वरलाल, पीयूष शर्मा, तुलसीदास, उमेश शर्मा व गिरिधारीलाल भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

मेकश बने युवा कांग्रेस सचिव

उदयपुर। मेकश खान को प्रदेश युवा कांग्रेस के सचिव पद पर नियुक्त किया गया है। युवा कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष हिंडोली विधायक अशोक चांदना ने कहा कि मेकश ने विधानसभा क्षेत्र में पार्टी को मजबूती देने की कोशिश की, इसी आधार पर उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपी गई। मेकश वर्तमान में मावली विधानसभा में युवा कांग्रेस के उपाध्यक्ष हैं।

राजपुरोहित को ज्ञान गौरव सम्मान

उदयपुर। ज्ञान मंदिर स्कूल समिति, हिरणमगरी के स्वर्ण जयंती वर्ष कार्यक्रम में स्कूल ने अपने पूर्व छात्रों का सम्मान किया। इस मौके पर डॉ. संजीव राजपुरोहित को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए 'ज्ञान गौरव' सम्मान प्रदान किया गया।

ज्ञान मंदिर के स्वर्ण जयंती समारोह में सम्मान प्राप्त करते डॉ. संजीव राजपुरोहित।

सुधर्म सागर का वर्षावास

उदयपुर। आदिनाथ मानव कल्याण समिति कविता की साधारण सभा की बैठक 8 जुलाई को प्रात: 10 बजे होगी। इसी दिन सुधर्म सागर महाराज का वर्षावास के लिए भी यहां मंगल प्रवेश होगा।

शीला अध्यक्ष, देविका सचिव

उदयपुर। इनरव्हील क्लब की वार्षिक कार्यकारिणी बैठक में अध्यक्ष शीला तलेसरा, सचिव देविका सिंघवी, अध्यक्ष निर्वाचित रेखा भाणावत, उपाध्यक्ष आशा कुणावत, संयुक्त सचिव आशा तलेसरा, कोषाध्यक्ष दर्शना सिंघवी, सहकोषाध्यक्ष नीना मारू, आई एसओ स्नेह लता साबला व बुलेटिन संपादक रीटा महाजन व रीटा बापना को मनोनीत किया गया।

शीला तलेसरा

देविका सिंघवी

गोधा अध्यक्ष, सुराणा महासचिव

उदयपुर। उदयपुर मार्बल प्रोसेसर्स समिति के 15 जून को हुए चुनाव में अध्यक्ष विजय गोधा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेश खमेसरा, उपाध्यक्ष मुरलीधर शर्मा, महासचिव कपिल सुराणा व कोषाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार कटारिया, संयुक्त सचिव प्रवीण कोठारी और सदस्य डॉ. हितेश पटेल, संजय कोठारी व कैलाश राजपुरोहित निर्वाचित हुए।

विजय गोधा

कपिल सुराणा

हंसराज बने यूसीसीआई अध्यक्ष

यूसीसीआई की नई कार्यकारिणी में हसराज चौधरी, आशीष छाबड़ा एवं रमेश सिंघवी।

उदयपुर। उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री की वार्षिक साधारण सभा की बैठक 3 जून को यूसीसीआई भवन के पी. पी. सिंघल ऑडिटोरियम में हुई। जिसमें हंसराज चौधरी सत्र 2017-18 के लिए अध्यक्ष चुने गए। वरिष्ठ उपाध्यक्ष आशीष सिंह छाबड़ा व उपाध्यक्ष रमेश सिंघवी भी निर्विरोध निर्वाचित किए गए। सभा के आरम्भ में निवर्तमान अध्यक्ष वी. पी. राठी ने वर्ष 2016-17 की विभिन्न गतिविधियों का उल्लेख किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अनिल मिश्रा को मानद महासचिव व मानद कोषाध्यक्ष जतिन नागौरी को मनोनीत किया।

अनिल मिश्रा

जतिन नागौरी

भाजपा ने लौटाया पासपोर्ट सेवा केन्द्र

पासपोर्ट सेवा केन्द्र का उद्घाटन करते केन्द्रीय मंत्री वी. के. सिंह, सांसद अर्जुनलाल मीणा, मेवाड़ फाउण्डेशन के अध्यक्ष अरविन्द सिंह मेवाड़ एवं अन्य।

उदयपुर। उदयपुर को चार वर्ष बाद पुन: पासपोर्ट सेवा केन्द्र नसीब हो गया। उद्घाटन 2 जून को विदेश राज्यमंत्री डॉ. वी. के. सिंह ने किया। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस शासन में उदयपुर से लघु पासपोर्ट सेवा केन्द्र, जोधपुर स्थानान्तरित कर दिया गया था। उसके बाद से ही निरन्तर उसे पुन: यहां स्थापित करवाने के प्रयास हो रहे थे। सांसद अर्जुन लाल मीणा ने इस सम्बन्ध में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के सम्मुख प्रभावी पैरवी की थी। उद्घाटन समारोह में सांसद अर्जुन मीणा, सी. पी. जोशी(चित्तौड़गढ़), विधायक फूलसिंह मीणा, अमृतलाल मीणा, अरविंद सिंह मेवाड़, विदेश मंत्रालय में सचिव ध्यानेश्वर मूले, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी विवेक जैफ, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली, आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर विदेश राज्यमंत्री ने कहा कि देश के सभी आठ सौ मुख्य डाकघरों में पासपोर्ट सेवा केन्द्र खोले जाएंगे।

पद्मिनी का आईएएस में चयन

उदयपुर। निम्बाहेड़ा के बडोली गांव के माधोसिंह सोलंकी परिवार में जन्मी ठाकुर नारायण सिंह सोलंकी की पुत्री पद्मिनी सोलंकी ने हाल ही में लोकसेवा आयोग द्वारा जारी भारतीय प्रशासनिक सेवा की सूची में 117 वां स्थान प्राप्त कर मेवाड़ का नाम रोशन किया है।

दिसम्बर 2009 में अहमदाबाद के बिल्डर निर्मलसिंह पंवार के साथ शादी के बंधन में बंधने के बाद भी वे सपने को सच साबित करने में लगी रही और सफलता प्राप्त की। पिता नारायण सिंह का कहना है कि पद्मिनी प्रारम्भ से ही मेधावी रही और उसने जीवन में लक्ष्य निर्धारित कर उसके पीछे लगे रहना ही सीखा।

कांकरोली स्थित जेके टायर एंड इण्डस्ट्रीज में 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करते वाइस प्रेसीडेन्ट ए. पी. श्रीवास्तव, महाप्रबंधक अनिल मिश्रा, डी. के. पोरवाल, डी. एस. सीरवी, उपमहाप्रबंधक संजय अग्रवाल, एस. एस. राव, एस. एस. चारण, बाबूलाल शर्मा एवं अन्य।

विद्यापीठ में बनेगा मीरा शोध संस्थान

उदयपुर। भक्त शिरोमणी मीराबाई के त्याग एवं बलिदान को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय में मीरा बाई अध्ययन शोध संस्थान की स्थापना होगी। कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत की अध्यक्षता में गत दिनों विश्वविद्यालय के प्रशासिनक भवन में हुई बैठक में तय किया गया कि मीरा शोध संस्थान के पहले चरण में एक करोड़ के कार्य होंगे। कुलपति ने बताया कि मीरा के त्याग, बलिदान, आदर्श एवं जीवनी पर रिसर्च एवं अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों का आयोजन 14-15 अक्टूबर को किया जाएगा। बैठक में अन्य महत्वपूर्ण निर्णय किए गए जिसमें मीरा के जीवन एवं बलिदान पुस्तक का प्रकाशन करना भी है। कुलपति ने कहा कि मीराबाई आस्था एवं श्रद्धा की प्रतीक हैं। इस संस्थान की स्थापना से विश्वविद्यालय गौरवांवित होगा। इतिहासविद् डॉ. के. एस. गुप्ता ने कहा कि मीरा के बिना मेवाड़ का इतिहास अधूरा है। प्रो. जी. एम. मेहता ने भी विचार व्यक्त किए।

कुलपति सारंगदेवोत पीठ स्थापना पर चर्चा करते हुए।

दानदाताओं का सम्मानः जैकी और महिमा भी शामिल

सम्मान करते कैलाश मानव, प्रशांत अग्रवाल, जैकी श्रॉफ एवं महिमा चौधरी।

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की ओर से दिव्यांगों की चिकित्सा में सहयोग करने वालों का सम्मान नई दिल्ली में 28 मई को आयोजित समारोह में किया गया। संस्थापक चेयरमैन कैलाश मानव की मौजूदगी में हुए अंतरराष्ट्रीय अवॉर्ड समारोह में फिल्म अभिनेता जैकी श्रॉफ और महिमा चौधरी भी शामिल हुए। अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने संस्थान के प्रकल्पों की जानकारी दी। महिमा चौधरी ने कहा कि मानवता की इस सेवा को शब्दों में बयां करना नामुमकिन है। निदेशक वंदना अग्रवाल ने भी विचार व्यक्त किए। ट्रस्टी देवेन्द्र चौबीसा ने आभार जताया। दीपक मेनारिया, रोहित तिवारी, दल्लाराम पटेल, अम्बालाल क्षोत्रिय, जतन सिंह भाटी, वेदप्रकाश व जसबीर सिंह मौजूद थे। संचालन ओम पाल सीलन ने किया।

तत्पुरुष बने अकादमी अध्यक्ष

उदयपुर। साहित्यकार एवं चिन्तक डॉ. इंदुशेखर तत्पुरुष ने 14 मई को राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष पद का कार्यभार संभाल लिया। डॉ. तत्पुरुष को राज्य सरकार ने अकादमी अध्यक्ष के लम्बे समय से रिक्त पड़े अध्यक्ष पद के लिए मनोनीत किया था। साथ ही राज्य सरकार ने बलवीर सिंह करुण एवं डॉ. मथुरेशनंदन कुलश्रेष्ठ को सरस्वती सभा का सदस्य मनोनीत किया है।

डॉ. इंदुशेखर ने कहा कि वरिष्ठ साहित्यकारों के साथ युवा साहित्यकारों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने और अकादमी के साहित्यिक कार्यक्रम राजस्थान के सभी अंचलों में आयोजित करने के प्रयास किए जाएंगे।

डायलिसिस यूनिट का शुभारंभ

यूनिट का उद्घाटन करते पीआईएमएस के चेयरमैन आशीष अग्रवाल।

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में पिछले दिनों डायलिसिस यूनिट का उद्घाटन पीआईएमएस के चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर डॉ. बकुल गुप्ता भी मौजूद थे। डायलिसिस की सेवाएं शुरू होने से अब मरीजों को परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। अग्रवाल ने बताया कि यहां नवीनतम मशीनें लगाई गई हैं जिनमें एक साथ पांच मरीजों की किडनी में इंफेक्शन, सूजन तथा किडनी से संबंधित डायलिसिस हो सकेगी। गरीबों को न्यूनतम से न्यूनतम शुल्क पर सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

मूंदड़ा अध्यक्ष

उदयपुर। श्री माहेश्वरी पंचायत(शहर) के द्विवार्षिक चुनाव में अध्यक्ष पद पर जानकीलाल मूंदड़ा निर्विरोध निर्वाचित किए गए। कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष अशोक बायती, गणेशलाल तोषनीवाल सचिव चुने गए।

ऑस्ट्रेलिया में मेवाड़ का सम्मान

विशिष्ट स्मृति चिन्ह ग्रहण करते लक्ष्यराज सिंह मेवाड़।

उदयपुर। एचआरएच ग्रुप के लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने 15 जून को ऑस्ट्रेलिया सरकार की विक्टोरिया पार्लियामेंट के मंत्रियों से मुलाकात की। इस दौरान उन्हें पार्लियामेंट के विशिष्ट स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। ऑस्ट्रेलिया सरकार के विशेष निमंत्रण पर मेलबोर्न पहुंचे लक्ष्यराज सिंह ने पार्लियामेंट के प्रेसिडेन्ट और स्पीकर ब्रुस एटक्विंसन, सांसद क्रेग ओनडची, अन्य अधिकारियों व प्रमुख उद्योगपतियों से मुलाकात कर शिक्षा, व्यापार, पर्यटन, खेल व चिकित्सा के क्षेत्रों में विभिन्न आयामों के आदान-प्रदान पर चर्चा की।

दैनिक भास्कर वुमन ऑफ द ईयर अवार्ड समारोह 13 जून को जयपुर में हुआ। स्पोर्ट्स कैटेगिरी में स्टेट अवॉर्ड विनर शताब्दी अवस्थी को सम्मानित करते हुए मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, दैनिक भास्कर राजस्थान के सीओओ संजय शर्मा, स्टेट एडिटर एलपी पंत, इंदिरा आईवीएफ ग्रुप के चेयरपर्सन अजय मुर्डिया व इंदिरा मुर्डिया।

एसेंट विद्यार्थियों का बेहतर प्रदर्शन

उदयपुर। एम्स की ओर से जारी परिणाम में एसेन्ट विद्यार्थियों ने अखिल भारतीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन किया। प्रत्येक वर्ग की प्रथम सौ विद्यार्थियों की सूची में एसेन्ट के अस्मित ने ऑल इण्डिया 40वीं, हर्ष ने 83वीं, जया ने 91वीं रैंक हासिल की। अस्मित व हर्ष ने सफलता का श्रेय अभिभावकों व संस्थान को दिया। बांसवाड़ा निवासी जया ने सफलता का श्रेय शिक्षक मनोज बिसारती को दिया। विद्यार्थियों का सम्मान किया गया।

रविन्द्रपाल सिंह का सम्मान

उदयपुर। रक्तदान महादान चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष रविंद्र पाल सिंह कप्पू का 77वीं बार रक्तदान करने पर स्वर्ण मंदिर अमृतसर में सम्मान किया गया। उन्हें यह सम्मान सिक्खों की सर्वोच्च कमेटी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से दिया गया।

शिक्षाप्रेमी बाबेल की प्रतिमा का अनावरण

उदयपुर। समाजसेवी व शिक्षाप्रेमी स्व. रूपलाल बाबेल की स्मृति में 20 मई को आयड़ स्थित सरस्वती निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय में उनकी प्रतिमा का अनावरण गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने किया। उल्लेखनीय है कि शिक्षा के प्रसार व विस्तार के लिए 1970 में बाबेल ने अपना बहुमूल्य भूखण्ड इस विद्यालय को नि:शुल्क समर्पित किया था। विशिष्ट अतिथि पूर्व विधानसभाध्यक्ष शांतिलाल चपलोत थे। अध्यक्षता विद्यालय के संस्थापक मदनलाल मूंदड़ा ने की। संयोजक जितेन्द्र बाबेल व कृष्ण गोपाल मूंदड़ा ने बाबेल की सामाजिक सेवाओं को रेखांकित किया। कार्यक्रम में बाबेल परिवार की प्रेमदेवी, कृष्णादेवी, लक्ष्यराज, भार्गवी, मनन आदि भी उपस्थित थे। कटारिया ने सम्पूर्ण परिवार को विद्यालय को भूखण्ड उपलब्ध कराने पर शुभकामनाएं दीं।

शोक समाचार

उदयपुर। उद्योगपति एवं व्यावसायिक जगत में प्रतिष्ठित डांगी(जैन) परिवार की **श्रीमती बसन्ती देवी डांगी** धर्मपत्नी स्व. श्री हनुमत लाल जी डांगी का निधन 23 मई, 2017 को हो गया। समाजसेवी उद्योगपति एवं राजनैतिक रूप से प्रतिष्ठित डांगी परिवार कई सामाजिक कार्यों में मुक्त हस्त से योगदान देता आया है। व्यावसायिक जगत में अच्छी साख तथा प्रतिष्ठा रखने वाले परिवार में हुए इस निधन पर कई संस्थाओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रीमती बसन्ती देवी अपने पीछे पुत्र-पुत्रवधु वीरेन्द्र-रजनी डांगी(पूर्व महापौर नगर निगम, उदयपुर), पुत्री-दामाद शारदा-नीरज, सरिता-धीरज भादविया, पौत्र-पौत्रवधु, पड़पौत्र, दोहित्र, भाणेज सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। **श्री श्यामलाल जी खण्डेलवाल** (राधे मार्बल्स-सुखेर) का 18 जून 2017 को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित-हृदय धर्मपत्नी श्रीमती गांधारी देवी, पुत्र एडवोकेट प्रवीण व संजय खण्डेलवाल व पुत्री नीता सहित भाई-भतीजों तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

राजसमन्द। डॉ. लक्ष्मीलाल जी महात्मा 2 मई 2017 को जिन शरण हो गये। वे अपने पीछे विरह-व्यथित पत्नी कंचन देवी पुत्र-पुत्रवधु सत्यनारायण-स्व. उषा देवी, स्व. दिनेश कुमार-मीना देवी, पौत्र-पौत्रवधु राजकमल-संगीता, विजय कुमार-विनीता, जयंत-रितु तथा भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। शहर के जाने-माने एडवोकेट **श्री मोहनलाल जी कोठारी** का 11 जून को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी एडवोकेट सुशीला कोठारी, पुत्र संजय कोठारी, पुत्रियां कल्पना बापना व रमा जैन सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड गए हैं।

उदयपुर। **श्रीमती रामवती देवी जी** धर्मपत्नी स्व. अम्बालाल जी खंडेलवाल का 22 मई को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र पुष्कर, नरेश, द्वारिकाधीश व दिलीप खंडेलवाल तथा पौत्र-पौत्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। आरएसएमएम से सेवानिवृत्त **श्री प्रदोष कुमार जी शर्मा** (बाबा भाई साहब) का 5 जून को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित-हृदय धर्मपत्नी श्रीमती कुसुम शर्मा, पुत्र पंकज एवं मोहित शर्मा तथा पौत्र-पौत्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

बेहतरीन नज़्मे

श्रद्धा से चंदन जले, दुःख से जले शरीर।
मज़हब से बस्ती जले, नफ़रत से कश्मीर।।

- सूर्यभानु गुप्त

जम्हूरियत वो तर्ज़े-हुकूमत है कि जिसमें।
बंदों को गिना जाता है, तोला नहीं जाता।।

- इक़बाल

दोस्तों को घर बिठा कर, तू यहां बाजार में
जा अभी वापिस चला जा, देख तो घर लुट रहा।

- नरेन्द्र गरल

ख़ुद को बिखरते देखते, कुछ कर नहीं पाते हैं।
फिर भी लोग ख़ुदाओं जैसी बातें करते हैं।

- इफ़्तियार आरिफ़

इक चीज थी ज़मीर जो वापस ला न सका।
लौटा तो है जरूर वो दुनिया खरीद कर

- कमर इक़बाल

हम ऐसी सब किताबें काबिल-ए-ज़ब्ती समझते हैं।
कि जिनको पढ़ कर बेटे बाप को खब्ती समझते हैं।

- अकबर इलाहाबादी

छीनता हो जब तुम्हारा हक़ कोई, उस वक़्त तो।
आंख में आंसू नहीं, शोला निकालना चाहिए।।

- गोपालदास नीरज

मिट्टी का दिल लेके चले हो तो सोच लो
इस रास्ते में इक समंदर भी आएगा।

- सलीम शाहिद

शोबदे आंखों के हमने ऐसे कितने देखे हैं।
आंख खुली तो दुनिया, बंद हुई अफ़साना था।

- फ़ानी बदायूंनी

हमनशीं जाएं कहां, कोई ठिकाना न रहा।
या तो वह हम न रहे, या वोह ज़माना न रहा।

- महावीर त्यागी

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा
डिसाइड®
AADHAR PRODUCTS
वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट टिकिया एवं बर्तन बार
डिसाइड
वाशिंग पाउडर
नया
एडवाइज़
डिटर्जेंट टिकिया
Decide
super
बर्तन बार
Decide®
Mfd. & Mktd. by : AADHAR PRODUCTS PVT. LTD., UDAIPUR Trade Enquiry 7727864004 | visit us at : www.aadharproducts.in

MIRAJ GROUP
तन भी शुद्ध, मन भी शुद्ध... तो वस्त्र क्यों रहे अशुद्ध !
मिराज शुद्ध
ऑयल सोप
100% पशु चर्बी रहित
MIRAJ SHUDDH
Family Pack
MIRAJ TRADECOM PVT. LTD.
Miraj Campus, Nathdwara - 313 301 (Raj.) India / Email : fmcg@mirajgroup.in / Web: www.mirajgroup.in
Contact us at : 88759 92317, 88759 33370

Manoj Jain
94141 55902
With Best Compliments
Deepak Jain
94613 84902
Mandeep
Bag Industries
(Regd. S.S.I.)
Mfg. :- School & College Bags, Strolley-Attechies
Shopping Bags, Purse & All Kinds of Complementary Bags
Visit : www.mandeepbagudr.com
A-6, Ganpati Vihar, Gayatri Nagar, H. M. Sec. 5
Udaipur (Raj.) e-mail : mandeepbagudr@rediffmail.com

A Product of
अर्चना Panch 5 mani Fragrance
अर्चना एक्टिव
कपड़े रहे एक्टिव अर्चना एक्टिव डिटर्जेन्ट के साथ
आधुनिक एवं सर्वश्रेष्ठ तकनीक का आविष्कार एक्टिव डिटर्जेन्ट पाउडर
1 Kg. वाले कट्टे में 25 पाउच
500 Gram वाले कट्टे में 40 पाउच
200 Gram वाले कट्टे में 80 पाउच
निर्माता : पंचमणी फ्रेगरेन्स
कार्यालय : ने. हा. 76, एयरपोर्ट रोड
ग्लास फैक्ट्री चौराहा, खेमपुरा की तरफ
उदयपुर-313001 (राजस्थान)
वेबसाईट : www.archanaagarbatti.com
ई-मेल : sales@archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti
फोन : 0294-2492161, 2490899
व्यावसायिक पूछताछ एवं डीलरशिप हेतु आर्थिक रूप से सुदृढ़ पार्टियां (वितरक रहित क्षेत्र में) सम्पर्क करें।
मो.: +91-98290 42705, +91-99508 15555

KTS Prime Merchandise Pvt. Ltd.

101-102, Vinayak Plaza, 100 Ft. Road, Opp. Royal Raj villas,
Shobhagpura Chouraha, Udaipur (Raj.) 313001

9116116404, 9116116405 (M)

Website - www.ktsprime.com, Email - info@ktsprime.com

Property

Plot, Flat, Shops, Agriculture Land and Commercial land Sale and Purchase

98929 83520 Pushkar Nahar
90042 42328 Dharmesh Duggar

Marketing

Ayurvedic Product, Hotel Package Discount Coupons, Health Check-up Holiday Package, Entertainment

Y. Khatri 9314948090 (M)

Club House

Upcoming Project A Family Club House With Full Entertainment of Gaming Zone, Pool, Restaurant

Nishit Chaplot 9829839008 (M)

I-Brain, Mind Power

Mid Brain Activation, DMIT Report
Vision Improvement, Speed Reading
Super Memory, Mind Mapping

Gajendra Malviya 9214449605 (M)

पी.आई.एम.एस. हॉस्पिटल
उमरड़ा, उदयपुर
SAI TIRUPATI UNIVERSITY
डॉ. प्रवीण झंवर
एम.एस. (जनरल सर्जरी)
एम.सी.एच. (पिडियाट्रिक सर्जरी)
कन्सलटेन्ट-पिडियाट्रिक सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज
डॉ. सुभाष जाखड़
एम.एस. (जनरल सर्जरी)
एम.सी.एच. (न्यूरो सर्जन)
कन्सलटेन्ट-न्यूरो सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज
डॉ. विकास गुप्ता
एम.एस. (सर्जरी)
डी.एन.बी. (यूरोलॉजी)
कंसलटेन्ट-यूरोलॉजिस्ट
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज
डॉ. विक्रम सिंह राठौड़
एम.एस. (ईएनटी)
कन्सलटेन्ट-ईएनटी सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज
450 बेडेड हॉस्पिटल
14 ऑपरेशन थियेटर
65 बेडेड गहन चिकित्सा ईकाई
24/7 आपातकालीन सेवाएं
ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU
Separate Male & Female General Wards, Deluxe Rooms, Modular Operation Theatres, ICU, ICCU, PICU, NICU, Burn ICU
Neuro ICU, Dialysis Center, Endoscopy & Colonoscopy, CSSD, Canteen, Laundry, Morgue,
1.5 TESLA MRI & 128 SLICE C.T. SCANNER
भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना
भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का नि:शुल्क उपचार
कैशलेस सुविधा
तुरन्त भर्ती एवं जॉच
तुरन्त उपचार
नि:शुल्क दवाईयाँ
राजस्थान सरकार से अधिकृत संभाग का एकमात्र
DOT - ART Center
सेवाओं में विस्तार के साथ निम्न इंश्योरेन्स कम्पनियों हेतू टी.पी.ए. विपुल मेड कोर्प द्वारा अधिकृत संस्थान
IFFCO-TOKIO GENERAL INSURANCE
Apollo Munich
bharti AXA general insurance
RELIANCE
HDFC ERGO
Max Bupa
ICICI Lombard
साई तिरूपति यूनिवर्सिटी
उदयपुर
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज MBBS 0294-3010000, 9587890082
वेन्केटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग B.Sc., M.Sc. 0294-3010015, 9587890063
वेन्केटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग GNM 0294-3010015, 9587890063
वेन्केटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी D. Pharma 0294-3010015, 9587890082
PIMS
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज
अम्बुआ रोड़, ग्राम उमरडा, तह. गिर्वा, उदयपुर-313015 (राज.) 0294-3010000 www.saitirupatiuniversity.ac.in